‘‘‘परमेश्वर से बड़ी वस्तु की आशा करें। परमेश्वर के लिए बड़ी वस्तु का प्रयास करें’’

विलियम केरी

व्यक्तिगत जागृति के कदम

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना

हेलमट हाउबेइल

विषय सूची

1. परिचय

- व्यक्तिगत जागृति के कदम
- पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना

2. अध्याय 1

- यीशु का सबसे मूल्यवान उपहार (दान)
- पवित्र आत्मा के विषय यीशु ने क्या सिखलाया?
- क्या आप यीशु के सब से अधिक शक्तिशाली संवाद से परिचित है?
- पवित्र आत्मा का काम क्या है?
- चरित्र परिवर्तन के लिए हमें क्यों बाहरी मदद की आवश्यकता होती है?

3. अध्याय 2

- हमारी समस्याओं का केन्द्र क्या है?

- क्या हमारी समस्याओं का कोई आत्मिक कारण है?
- क्या यह कारण पवित्र आत्मा की कमी है?

3. अध्याय 3

- हमारी समस्याएं समाधान के हैं – कैसे?
- हम कैसे प्रसन्न और शक्तिशाली मसीही हो सकते हैं?
- हमारे जीवन को पवित्र आत्मा कैसे भर सकती है?

4. अध्याय 4

- किन असमानताओं की आशा हम कर सकते हैं?
- एक पवित्र से परिपूर्ण जीवन से हमें क्या लाभ हो सकता है?
- जब हम पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना नहीं करते, हम क्या खोते हैं?

5. अध्याय 5

- व्यवहारिक अनुभव की कुंजी
- मैं अपने लिए परमेश्वर के समाधान को कैसे अनुभव करके उसके काम में ला सकता हूँ?
- मैं कैसे प्रार्थना करूँ कि मैं पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के प्रति निश्चित हो सकूँ?

6. अध्याय 6

- हमारे आगे क्या अनुभवें पड़े हुए हैं?
- क्षेत्रीय अनुभवें, साथ ही साथ कलीसियाओं के अनुभवों, कॉन्फ्रेंस और युनियन की अनुभव

- शेष संग्रह
- अतिरिक्त अध्ययन की सिफारिश
- विषय पर पवित्रताएं
- 40 दिन की शिक्षा की पुस्तिका
- पवित्र आत्मा के साथ जीने के नए अनुभवें।

- हमारा प्रभु खुद ही आज्ञा दिया है
- अपने को स्थिर रखो और बार–बार आत्मा में हो कर नए होते रहो!

परिचय

व्यक्तिगत जागृति के कदम

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण

ऐसा क्यों हुआ कि मैं अचानक बलपूर्वक "पवित्र आत्मा में जीवन" के विषय पर केन्द्रित हो गया?

सन् 2011 ई. के 14 अगस्त को मैं कांदरग्रूण्ड में था जो स्वीटजरलैंड में है, वहां पर मुझे एक महत्वपूर्ण सम्बन्ध के साथ जुड़ने का साफ साफ ज्ञान हुआ मैंने एक आत्मिक कारण पहचाना कि हम क्यों अपने युवकों के हिस्से को खो रहे हैं? मैं अत्यधिक आश्चर्यचकित हुआ। मैंने अपने बच्चों और नाती पोतों के बारे सोचा। उस समय से मैं बड़ी गहराई के साथ इस विषय पर विचार कर रहा हूँ।

अब मैं विश्वास करता हूँ कि वही आत्मिक कारण हमारे अनेक समस्याओं के पीछे है, खास करके हमारी व्यकितगत समस्याएं, हमारे

स्थानीय कलीसियाओं में और विश्व के कलीसियाओं में भी। यह पवित्र आत्मा की कमी के कारण से है।

यदि यही कारण है, तब हमें इस मामले के आपात स्थिति के रूप में एलान करना होगा। यदि यह कारण दूर किया जा सकता है या उचित तरह से कम किया जा सकता है, तब अनेक समस्याओं का समाधान निकल आता।

अध्याय 1

- यीशु का सबसे मूल्यवान उपहार (दान)
- पवित्र आत्मा के विषय यीशु ने क्या सिखलाया?
- क्या आप यीशु के सबसे अधिक शक्तिशाली संवाद से परिचित हैं?
- पवित्र आत्मा का काम क्या है?
- चरित्र परिवर्तन के लिए हमें क्यों बाहरी मदद की आवश्यकता होती है?
- कुछ प्रथम व्यक्तिगत गवाहियाँ :

हमारे ''पहले प्रेम'' में वापसी : एक बहन मेरे पास पत्र लिखी : अभी मैं अपने मित्र के साथ ''40 दिन'' की पुस्तक को पढ़ रही हूँ जो तीसरी बार ''व्यक्तिगत जागृति के कदम'' पुस्तिका को बदल बदल कर पढ़ी जा रही है।

इस पुस्तिका को खोज निकालने के पहले हमारा विश्वास और प्रार्थना जीवन वैसा नहीं है जैसा पहले था। हम उन में हैं जो अपना ''पहला प्रेम को खोज निकाले हैं। हमने इसे पाया है! इसके लिए हम अपने सम्पूर्ण ह्रदय से परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। यह बड़ा ही अद्‌भुत बात है कि कैसे हमारा प्रेमी परमेश्वर हमारे प्रार्थनाओं का उत्तर देता है और वह प्रगट करता है कि कैसे उसका आत्मा काम कर रहा है। हमारे और लोगों के उपर, हम आत्मा की सेवकाई के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

यीशु हमारे जीवन में प्रवेश किया है : एक अन्य व्यक्ति ने इन किताबों के बारे में लिखा है : '' ... ये किताब हमारे जीवन में महान और लम्बे समय के आशिषों का इंतजार का फल था। वैसा ही जैसे मंडली के अन्य सदस्य हमारे भाई और बहनों ने अनुभव कियाहै कि हमारे विश्वास के अनुभव में हमेशा कुछ न कुछ खोया हुआ था और अभी हमारा कैसा सुन्दर सौभाग्य है यह अनुभव करते हुए कि कैसे

यीशु हमारे जीवन में प्रवेश किया है और हमें बदलना शुरू कर दिया है। वह अभी भी हम पर काम कर रहा है और एक एक कदम करके हमें अपनी ओर खींच रहा है।

क्या यीशु के चेलों ने अपने आप से पूछा था : कि यीशु ऐसा महान प्रभाव कैसे डाल सकता है? क्या यह उसके प्रार्थना पूर्ण जीवन के साथ संबंधित था? इस लिए उन्होंने पूछा :'' प्रभु हमें प्रार्थना करने के लिए सिखा।'' यीशु ने अनुरोध का उत्तर दिया।

लूका 11:1–13 के उसके प्रार्थना के तीन भाग है :

प्रभु की प्रार्थना, उस मित्र का दृष्टांत जो आधी रात को आता है और सब से उपर पवित्र आतमा के लिए लगातार प्रार्थना करना है।

पद 5–8 के दृष्टांत में एक अतिथि जो एक व्यक्ति के घर में देर शाम में आया और उसके पास कुछ नहीं था, जिसके द्वारा वह उनकी सेवा करता। अपनी आवश्यकता के कारण वह तुरंत अपने पड़ोसी के पास चला जाता है। वह उसे बतलाता है कि ''उसके पास कुछ नहीं है'' ओर वह उससे रोटी मांगता है। वह रोटी मांगता रहा अन्त में उसे रोटी मिल जाती है। अब उसके पास रोटी थी। जीवन की रोटी अपने लिए और अपने अतिथि के लिए भी। अभी उसके पास कुछ था अपने लिए और अब वह इस स्थिति में था कि दूसरों को बांट सकता था।

अब यीशु इस दृष्टांत को (इस समस्या से जोड़ता है : मेरे पास कुछ नहीं है) पवित्र आत्मा के उस निवेदन के साथ कि यह कहते हुए : '' इसलिए तुम से कहता हूँ कि माँगों तो तुम्हें दिया जाएगा।'' (लूका 11:9) तब आगे कहता है :

यीशु का विशेष अनुरोध : इसलिए पवित्र आत्मा मांगो

बाइबल का एक विशेष अंश है जिसमें यीशु दृढ़ता पूर्वक हमें आज्ञा देता कि हम पवित्रात्मा मांगे। मैं कोई अन्य पद नहीं जानता हूँ जहाँ पर यीशु इतने प्यार से आग्रह करता है कि हम कुछ हृदय के लिए लें। ये पद प्रार्थना पर उसके उपदेश लूका 11 अध्याय में पाया जाता है यहां पर उसने दृढ़ता के साथ 10 बार कहा है। कि हमें पवित्र आत्मा मांगनी चाहिए। लूका 11:9–13

''और मैं तुम से कहता हूँ कि माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है वह पाता है; और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा। तुम में ऐसा कौन पिता

होगा कि जब उसके पुत्र रोटी मांगे, तो उसे पत्थर दे; या मछली मांगे तो मछली के बदले उसे सांप दे? या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छू दे? अतः जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा।''

इन थोड़े पदों में यीशु ने क्रिया शब्द ''माँगो'' को छः बार उपयोग कियाः और तब वह ''मांगो'' के बदले ''ढूंढ़ो'' शब्द पर जोर देता है और इस दो बार उपयोग किया है – एक काम और दो बार और ''ढूंढ़ो'' शब्द उपयोग करता है– और एक काम को भी।

क्या वह साफ साफ नहीं दिखलाता कि हमें काम करना है ताकि हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएं? अन्तिम शब्द ''मांगो'' ग्रीक भाषा में लगातार होने की अवस्था को दिखलाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि हमें सिर्फ एक ही बार मांगना नहीं है, परन्तु लगातार मांगते रहना है। यहां पर यीशु हमें उसी समय मांगने के लिए नहीं कहता है जब अति आवश्यक या इमरजेंसी हो, पर वह चाहता है कि हम हमेशा मांगते रहें। निश्चय वह चाहता है हमारी इच्छा को पवित्र आत्मा के जागृत करे यही उसका हार्दिक निमंत्रण है, यह आवश्यक निमंत्रण हमें दिखलाता है कि हम किसी खास वस्तु को अपने को अलग कर रहे हैं, यदि हम लगातार पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के लिए प्रार्थना नहीं करते हैं। इस तरह से वह चाहता है कि हम लगातार पवित्र आत्मा के आशीर्वाद को प्राप्त करते रहें।

''ख्राइस्ट ऑब्लेक्ट लेशन'' नामक किताब में ऐसा कहता है : परमेश्वर नहीं कहता है। एक ही बार मांगो, और तुम्हें मिलेगा। वह आज्ञा देता है मांगो। बिना रूके प्रार्थना में लगे रहो। लगातार मांगना मांगने वाले को और अधिक सच्चा स्वभाव में ले आता है और उसे वह जिन वस्तुओं का मांग किया है उसे प्राप्त करने के लिए अधिक लालसा प्रदान करता है।''

इसके बाद यीशु ने तीन उदाहरण दिया, जो ऐसे स्वभाव को दिखलाता है जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती है यहां तक कि एक पापी पिता के लिए भी। वह हमें यह दिखलाना चाहता है कि यह और भी अधिक कल्पना से परे है कि जब हम पवित्र आत्मा की मांग करेंगे तो स्वर्गीय पिता हमें क्यों नहीं देगा। यीशु हमें निश्चित कराना चाहता है कि जब हम पवित्र आत्मा की मांग उचित तरीके से करेंगे हम इसे प्राप्त करेंगे। इस प्रतिज्ञा और अन्य प्रतिज्ञाओं के साथ हम विश्वास से मांग सकते हैं और हम जान सकेंगे कि जो कुछ हमने मांगा था उसे पहले ही प्राप्त कर चुके हैं। (1 युहन्ना 5:14–15) और अधिक जानकारी 5 अध्याय में मिल सकती है।

यह विशेष निमंत्रण हमें दिखलाती है कि यीशु के कहने के अनुसार कुछ अति आवश्यक वस्तु की कमी हो जाती है। जब हम लगातार पवित्र आत्मा की मांग नहीं करते हैं। वह हमारे ध्यान को इस बात की ओर खींचना चाहता है कि हमें पूरी तरह से पवित्र आत्मा की आवश्यकता है। वह चाहता है कि हम पवित्र आत्मा के बड़े आशीषों को लगातार अनुभव करते रहें।

प्रार्थना पर इस भाग का पाठ एक विशेष प्रक्रिया है। पवित्र आत्मा परमेश्वर का एक सबसे बड़ा दान है। यह एक ऐसा दान है जो अपने साथ सारे अन्य दानों को अपने साथ ले कर आता है। अपने चेलों के लिए यह यीशु का सबसे बड़ा दान था और अपने प्रेम का एक स्पष्ट प्रमाण था। मैं सोचता हूं कि हम समझ सकते हैं कि एक ऐसा मूल्यवान वरदान किसी दूसरे के लिए दिया नहीं जा सकता है। यह सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए दिया जाता है जो इस वरदान को प्राप्त करने की इच्छा प्रगट करते और जो इसे पसन्द करते हैं। यह उन्हें दिया जाता है जो यीशु के लिए अपना जीवन समर्पित करते है; यह उन्हें दिया जाता है जो उसको साथ हमेशा बने रहते हैं। (युहन्ना 15:4–5) समर्पण ऐसे प्रगट किया जाता है :

- परमेश्वर के लिए लालसा (यदि कोई प्यासा हो युहन्ना 7:37)

- परमेश्वर में भरोसा (जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, यूहन्ना 7:38)

- परमेश्वर में भरोसा रखने का परिणाम सम्पूर्ण समर्पण (अपने शरीरों को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ– रोमियो 12:1)

हर बात में परमेश्वर का अनुकरण करो (जो उसकी आज्ञा मानते हैं, प्रेरितों 5:32)

अपने मार्ग को छोड़ो, परमेश्वर के मार्ग पर चलो और इसे परमेश्वर की इच्छा काम करो। (मन फिराओ और बपतिस्मा लो, प्रेरितों 2:38)

गलत काम के लिए योजना न बनाएं (यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता, तो प्रभु मेरी न सुनता, भजन 66:18)

अपने बड़ी घटी को अनुभव करें और उसे मान लें (मेरे पास कुछ नहीं है, लूका 11:6)

लगातार पवित्र आत्मा के लिए निवेदन करते रहो (लूका 11:9–13)

क्या आप परमेश्वर की इच्छा जो हमारे लिए है उन्हें साफ–साफ देख नहीं सकते हैं, वह वरदान कितना अतिधक मूल्यवान है? जब आप इन सारे पूर्व आकांक्षित बातों के बारे सोचेंगे तो शायद आप अपने आप में कमीयों को देख पायेंगे। युहन्ना 7:37 के साथ मैंने पवित्र आत्मा प्राप्त करने की इच्छा के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करने की आदत बना ली है। यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए।''

हम प्रार्थना कर सकते हैं ''हे प्रभु यीशु मैं पूरी तरह से सारे पूर्व आकांक्षाओं को हाँ कहता हूँ, पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए। मैं सच्चे मन से तुझ से मांगता हूं कि तू अभी आज ही इन्हें मुझ में पूरा होने दे।'' हमारा अद्‌भुत परमेश्वर अभी भी हमारे पूर्व आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए तैयार है।

पवित्र आत्मा परिपूर्ण जीवन का एक स्रोत है।

यीशु के अनुसार वह इस पृथ्वी पर क्यों आया? उसने कहा, ''मैं इस लिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएँ।'' युहन्ना 10:10

यीशु चाहता है कि हम इस नए जीवन का अनुभव अभी करें और इसे सम्पूर्ण रूप से एक अलग दृष्टिकोण से कायम रखें, उसके दूसरे आगमन के बाद भी परमेश्वर के राज्य में सनातन काल तक लिए।

वह हमें यह भी दिखलाता है कि परिपूर्ण जीवन का स्रोत है पवित्र आत्मा .... '' यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी, उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा था'' – (यूहन्ना 7:37–39)

''जीवन के जल की नदियां'' तथा यह एक परिपूर्ण जीवन का एक अच्छा तुलना नहीं है?

इस पृथ्वी पर अपने जीवन काल में क्या यीशु ने एक अपने अनुरूप उदाहरण प्रस्तुत किया?

हम यह जानते हैं कि मरियम पवित्रात्मा की शक्ति से यीशु को गर्भ में प्राप्त की। (मत्ती 1:18) हम यह भी जानते हैं कि अपने बपतिस्मा के बाद उसने प्रार्थना किया। '' और पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर के समान उस पर उतरा।'' (लूका 3:22) इन परिस्थितियों में यह आवश्यक था और महत्वपूर्ण था कि वह प्रतिदिन पवित्रात्मा प्राप्त करता था। (एलेन जी ह्वाईट के लेखों से लिया गया है)

''प्रतिदिन एक सुबह से दूसरे सुबह को अपने स्वर्गीय पिता से बातचीत करता था और प्रतिदिन वह पवित्रात्मा का ताजा बपतिस्मा प्राप्त करता था।''

''प्रेरितों के काम में यह बात लिखी हुई है : कि समर्पित कर्मचारियों के लिए एक आश्चर्यजनक आश्वासन दिया गया है कि ख्रीस्त भी अपने इस धरती के जीवन काल में अपने पिता को प्रतिदिन पुकारता था अनुग्रह के आवश्यक ताजा आपूर्ति के लिए ... '' (एलेन जी ह्वाईट साइन्स ऑव द टाइम, नव. 21, 1895, पारा 3)

इस बात में, वास्तव में यीशु हमारे लिए एक नमूना था। हमें अपने आप से पूछना चाहिए : यदि यीशु को पवित्र आत्मा से ताजगी की प्रतिदिन आवश्यकता थी तो मेरे और आप के लिए यह कितना अधिक महत्वपूर्ण है?

प्रेरित पौलुस, यीशु के उद्देश्य को वास्तव में समझ लिया था। इफिसियों के नाम अपनी पत्री में पौलुस इस बात को अध्याय 1:13 में दृढ़ करता है, कि विश्वासी गण पवित्र आत्मा के द्वारा मुहर लगाए गए हैं। इफिसियों 3:16–17 में वह उन्हें आत्मा में मजबूत होने के लिए उत्साहित करता है और 5:18 में पौलुस एक अधिकृति प्रेरित के रूप में, वह इफिसियों और हमें भी कहता है, ''... आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ'' या अपने आप को लगातार और बार–बार आत्मा से परिपूर्ण रखो।'' हम यह देखते हैं जौभी कि हम नया जन्म पाने के समय पवित्रात्मा प्राप्त किया था, परन्तु सामान्य तौर से हमें प्रतिदिन ताजगी के लिए पवित्रात्मा की आवश्यकता होती है। आत्मिक जीवन के लिए यह बहुत ही विशेष है और एक मसीही की बढ़ती के लिए पवित्रात्मा से प्रति दिन भरा होना चाहिए।

हमारा सब्बत स्कूल गाईड इफिसियों 5:18 के बारे इन बातों को कहता है, ''पवित्रात्मा से बपतिस्मा लेने का अर्थ क्या होता है? यीशु ने खुद ही इसके बारे समझाया है एक पर्यावाची शब्द द्वारा कि एक व्यक्ति पवित्र आत्मा से बपतिस्मा लेता है। (प्रेरितों 1:5) जब उन पर पवित्रात्मा

उतरा (पद 8) बपतिस्मा का लेने का अर्थ किसी वस्तु में सम्पूर्ण रूप से डूब जाना साधारणतः पानी में। इसमें सम्पूर्ण व्यक्ति शामिल हैं। पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा लेने का अर्थ होता है पूरी रीति से पवित्र आत्मा के प्रभाव में आ जाना पुरी रीति से उसके द्वारा भर जाना। यह अनुभव सिर्फ एक बार की नहीं होती है, परन्तु किसी वस्तु का लगातार होना है, जैसे पौलुस इफिसियों 5:18 में वर्णन करता है यूनानी क्रिया भर जाना।

यीशु के विदाई वचन और पवित्र आत्मा

यीशु अपने विदाई वचन में आनन्द और आशा का समाचार देता है उन्हें यह कहते हुए कि उसके स्थान में पवित्र आत्मा आएगा। उसने यूहन्ना 16:7–14 में पवित्र आत्मा के कामों को प्रस्तुत करता है। ''तौ भी मैं तुम से सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाउं तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा। वह आ कर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरूत्तर करेगा। पाप के विषय में इस लिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते; और धार्मिकता के विषय में इस लिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ और तुम मुझे फिर न देखोगे; न्याय के विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है। मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बतायगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।''

एक नया लाभदायक समाधान

यीशु ने चेलों से कुछ आश्चर्यजनक बात कहा : ''मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है'' इसका अर्थ यह हुआ कि नए समाधान यह कि वह हमारे साथ होगा पवित्र आत्मा के द्वारा यह यीशु की उपस्थिति से और अधिक लाभदायक होगा। इस रीति से वह अपने को सीमित नहीं कर रह है, परन्तु वह अब हर एक व्यक्ति के साथ हो सकता है, चाहे वह वर्तमान में क्यों न कहीं भी हो।

अविश्वास से आगे बढ़कर और शंका से यीशु में विश्वास

पवित्र आत्मा का काम है जगत की आँखों को खोलना। और क्या कुछ हद तक यह नहीं हो सकता कि कलीसिया में जगत है। पवित्र आत्मा जगत की आँखों को खोलता है। सिर्फ वहीं है जो लौदिकिया कलीसिया की आँखों को खोल सकता है। वह दुनियादारी लोगों में परमेश्वर के लिए इच्छा उत्पन्न करता है और यीशु के साथ एक निकट का संबंध बनाने के लिए गुन गुने मसीहियों में एक इच्छा उत्पन्न करता है। क्योंकि वह हमें उस पाप को दिखाता है जो सारे दूसरे पापों का कारण है :'' क्योंकि वे मुझ में विश्वास नहीं करते।'' क्या आप यीशु में विश्वास करते हैं, विश्वास का केन्द्र है भरोसा करना। इसका चिन्ह है कि हम सचमुच में यीशु में विश्वास और भरोसा रखते हैं जब हम सम्पूर्ण तौर से अपने आप को उसके लिए सौंप देते हैं। यह एक सम्पूर्ण समर्पण की बात है कि सब बातों में उसके साथ चलने की लालसा हो।

विश्वास के द्वारा बचाया जाना और धर्मी ठहरना

वह हमारी आँखों को यीशु की धार्मिकता को देखने के लिए खोलता है। जब यीशु स्वर्ग में चढ़ गया, उसके बलिदान को पिता द्वारा स्वीकार किया गया। इस तरह से असंभव संभव हो गया, क्योंकि परमेश्वर ने प्रेम दिखलाया और वह साथ ही साथ धर्मी भी था। पवित्र आत्मा हमारी आँखों को खोलना चाहता है कि हम सबसे अधिक मूल्यवान अदला बदली को देख सकें। : यीशु उन सारे लोगों के दोषों को अपने उपर ले लेता है, जिन्होंने उस पर भरोसा करके अपने आप को उसे सौंप दिया है और वह अपनी धार्मिकता उन्हें देता है। यह बाइबल शिक्षा की केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्वास के द्वारा धार्मिकता।

परमेश्वर के विकल्प को पवित्रात्मा हमें दिखलाता है।

पवित्रात्मा हमारे आँखें इसलिए भी खोलता है उस सत्य को देखने के लिए कि इस जगत के राजकुमार को दोषी ठहराया जा चुका है। शैतान को स्वर्ग से निकाल दिया गया है। उसका अंतिम विनाश निश्चित है। जब हम ख्रीस्त में बने रहते हैं, तब वह हमें हानि नहीं पहुंचा सकता है, जौभी कि हम बार बार परीक्षा में गिर जाते हैं और इस पृथ्वी में कमजोर पड़ जा सकते हैं। 1 यूहन्ना 5:18 में ऐसा कहता है :

''हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है,, वह पाप नहीं करता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है, और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता है।''?

(ख्रीस्त नए सिरे से जन्में विश्वासियों को सभी तरह की बुराई से बचाता है)

हमारे जीवन में प्रभुता का अदल बदल हो चुका है। यीशु हमें पापों से बचाना चाहता है और शैतान के हर हमलों में सुरक्षा देना चाहता है।

दूसरी ओर, पवित्र आत्मा लोगों की आंखों को खोलना चाहता है इस सत्य को देखने के लिए कि न्याय होने वाला है। इस न्याय से कोई भी बच नहीं पायगा, जब कि उसने उद्धार के दान को स्वीकार कर लिया है। निश्चित तौर से यह परमेश्वर की मनसा नहीं है कि लोगों को न्याय को दिखलाने के कारण वे डर से विश्वास करें। कुछ भी हो, यह ज्ञान कि न्याय आने वाला है, यह अनेक लोगों को पश्चाताप करने के लिए प्रभावित कर सकता है। यदि हम लोगों को न दिखाएं कि क्या आनेवाला है तो यह अनुचित होगा। ये हमें निर्णय लेने में मदद करते हैं।

सच्चाई के बारे हमें समझ प्रदान करें।

सभी सत्य को जानने के लिए पवित्र आत्मा हमें अगुवाई करेगा। वह हमें झूठी शिक्षओं, त्रुटियों और सभी तरह के प्रलोभनों से मुक्त करता है। हाँ, वह हमें सत्य को जानने के लिए भी अगुवाई करता है जिस से हम परमेश्वर की सहायता से जहां कहीं जरूरत पड़े अपने मार्गों में सुधार लाएं।

''शान्ति दाता को ''सत्य की आत्मा'' भी कहा गया है। उसका काम है सत्य की परिभाषा देना और सत्य को बनाए रखना। वह पहले हृदय में वास करता है सत्य के आत्मा के रूप में, और इस तरह से वह शान्ति दाता हो जाता है। सत्य में शान्ति और आनन्द दोनों हैं, परन्तु झूठ में सच्ची शान्ति या आनन्द नहीं मिल सकता है। ''

भविष्य के बारे वह हमारी समझ को खोलता है

पवित्र आत्मा के पास हमारे लिए भविष्य की बातें को प्रकाशित करने का काम भी है। उदाहरण के लिए यीशु खुद ही मत्ती 24 अध्याय में भविष्य के बारे में स्पष्ट शब्दों में घोषणा किया है। परन्तु पवित्र आत्मा के पास भविष्य के बारे हमें और अधिक ज्योति देना का काम भी है। यदि हम उसे हृदय में जगह देंगे, तो वह हमारे लिए भविष्यवाणी

की बातें को भी खोलेगा। और क्या यह अद्‌भुत बात नहीं है कि प्रकाशित वाक्य में सभी सात चिट्ठियां 2 और तीन अध्याय में यीशु एक ही तरह की ललकार पेश करता है :'' '' जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।'' यीशु इस बुलाहट को हमारे लिए भी देता है, अंतिम दिनों की कलीसिया के लिए कि यह भी आत्मा की सुने। क्या हम वास्तव में ऐसा कर रहे हैं?

यीशु को पवित्रात्मा हमारे लिए और अधिक मूल्यवान बनाता है।

पवित्र आत्मा यीशु की प्रशंसा करता है। जब हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाते हैं तब यीशु हमारे लिए अधिक मूल्यवान और महान हो जाता है। और हमारे अन्दर यीशु के लिए एक बड़ी पसन्द विकसित होता है।

पवित्रात्मा के द्वारा सामर्थ

यीशु अपने अन्तिम उपदेश में पवित्र आत्मा के काम का वर्णन किया है। अपने विदाई उपदेश में उसने कहा : ''परन्तु जब पवित्रात्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।'' प्रेरितों 1:8

पवित्र आत्मा का दूसरा काम है वह हमें सामर्थ प्रदान करता है ताकि हम उसके गवाह हो सकें।

ख्रीस्त ने अपना आत्मा ईश्वरीय सामर्थ के रूप में दिया है ताकि हम सारी वंश परम्परागत बुराई और बुरी मनोवृतियों को हटा कर उपर आ सके, और उसकी कलीसिया पर उसके चरित्र का छाप लग सके।

स्वास्थ्य शिक्षा के लिए भी हमें सामर्थ की आवश्यकता है। यू एस. ए. के वेमार में नए कार्यक्रम के शुरूआत करने वाले निदेशक, डॉन मेकीनटोश कहता है :'' हमें क्या चाहिए हमें स्वस्थ्य के बारे सूचनाएँ चाहिए ताकि उस सामर्थ के साथ जुड़कर इसका अभ्यास करें। यह वह सामर्थ है जो हमें बदल सकता है।

यहाँ पर यह सामर्थ सुसमाचार का सामर्थ है और अधिक संक्षेप में कहेंगे यह पवित्रात्मा का सामर्थ है।

हम पवित्रात्मा के और भी मूल्यवानों की चर्चा कर सकते हैं। एक बात निश्चित है : परमेश्वर का बहूमुल्य वरदान हमारा इंतजार कर रहा है।

पवित्रात्मा के चार स्तर के काम

संक्षेप में हम कह सकते हैं : परमेश्वर के वचन में हम पवित्रात्मा के चार विशेष काम के क्षेत्रों को देख सकते हैं। पहला और दूसरा क्षेत्र है – पाप की जानकारी हो और यीशु को पहचाने, यह अनुभव करते हुए कि मुझे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है और अपने को उसे सौंप दें और उसके कामों को सभी लोगों को बतलाओ। तीसरा और चौथा क्षेत्र है – आत्मा का फल और आत्मिक वरदान – यीशु के समर्पित चेलों पर दिखाई देंगे।

जागृति के तत्वों को अभ्यास में लाना

हम कुछ समय पहले से ही जागृति के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। यह सिर्फ जागृति के लिए प्रार्थना करने का सवाल ही नहीं है, परन्तु जैसा मार्क फिनले कहता है कि यह एक ऐसा भी है जिस तरह हम इसे बाइबलीय तत्व को अभ्यास में लाते हैं।''

कलीसिया में जागृति का होना इस बात पर निर्भर करता है कि हर एक सदस्य में जागृति हो। इसलिए आप से निवेदन करता हूँ कि आप व्यक्तिगत जागृति के लिए कदम उठाएँ। यह एक अधिक शक्तिशाली और भरपूर जीवन की ओर ले चलती है।

यीशु और 'मूर्ख कुवांरियाँ'

यीशु ने मूर्ख कुवांरियों से कहा : ''मैं तुम्हें नहीं जानता।'' इसी कारण से वे विवाह के समारोह में अन्दर जा नहीं सकीं, दूसरे शब्दों में कहेंगे परमेश्वर के राज्य में। कारण था तेल की कमी, यह दिखलाता है, उनके आत्मिक जीवन में कमी। एलेन जी ह्वाईट कहती है :'' मूर्ख कुवांरियाँ'' उन लोगों के चरित्र को दिखलाता है, जिन्होंने पवित्र आत्मा के काम के द्वार ह्रदय के सच्चे बदलाहट का अनुभव नहीं किया है।'' हम में एक पापी स्वभाव है। इस कारण हम सबके सब स्वार्थी हैं, परन्तु हम इस स्वार्थीपन से दुःख उठाते हैं। क्योंकि कोई भी स्वार्थी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पायेंगे, इसलिए चरित्र में एक बदलाव होना अत्यन्त आवश्यक है। परमेश्वर का वचन हमें दिखलाते हैं कि जैसा वह

है वैसा ही हर एक व्यक्ति यीशु के पास आ सकता है। लेकिन हम यह भी जानते हैं कि कोई भी जैसा वह है, वैसा ही वह नहीं रहेगा। एक साफ उदाहरण : जब एक चोर बदलता है, तो वह आगे चोरी नहीं कर सकता और नहीं करेगा।

ध्यान दें कि ये मूर्ख कुवांरियाँ परमेश्वर को नहीं जानते हैं, क्योंकि इन्होंने अपने जीवन को पवित्रात्मा के काम के लिए नहीं सौंपा है।

हम जो कुछ जानते हैं उस पर हमारा उद्धार निर्भर नहीं करता है, परन्तु इस पर कि हम किसको जानते हैं। (यूहन्ना 17:3) हम जो कुछ जानते हैं वह महत्वपूर्ण है, परन्तु यीशु के साथ बिना बचाव के व्यक्तिगत संबंध में हम परीक्षा में पड़ सकते हैं और अंत में खो जा सकते हैं। परमेश्वर के प्रति समझ रखना और उसके साथ नजदीकि और सच्चे ह्रदय के साथ उसके साथ पहचान एक समान नहीं है। निकटता, और यीशु के साथ हमारा बचाव का संबंध का परिणाम होगा कि हम उसके स्वभाव में अधिक बढ़ते जाएं, यह हमारे चरित्र में सच्चा परिवर्तन जीवन की परिपूर्णता (यूहन्ना 10:10, इफिसियों 3:17, कुलुस्सियों 2:10) और आनन्द में लाता है। (यूहन्ना 15:11)

सच में यह एक विशेष कारण था कि क्यों यीशु हमें अवश्य रूप से कहता है लगातार पवित्रात्मा के लिए निवेदन करते रहें।

दूसरे भाग में यीशु दिखलाता है कि हमारे जीवन में पवित्र आत्मा के बदल डालने के सामर्थ के मूल सिद्धान्तों का महत्व क्या है।

खमीर के बारे दृष्टांत में यीशु पवित्र आत्मा के प्रभाव के बारे कहता है।

इस दृष्टान्त में यीशु पवित्र आत्मा के बदल डालने वाली शक्ति के बारे कहता है। जब आप पहले इस दृष्टांत को पढ़ेंगे, तो आप ऐसा सोच नहीं सकेंगे कि इसका संबंध पवित्र आत्मा से हैं। इस खमीर की दृष्टांत को हम लूका के सुसमाचार 13:20–21 में पाते हैं।

''उसने फिर कहा, ''मैं परमेश्वर के राज्य की उपमा किससे दूं, वह खमीर के समान है, जिसको किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिलाया, और होते होते सब आटा खमीर हो गया।''

खमीर को विभिन्न प्रकार के पाव रोटी बनाने में व्यवहार किया जाता है। जब इसे आटा में मिलाया जाता है, तब इसमें रासायनिक प्रक्रिया आरम्भ होती है और यह गुधे हुए आटा को मुलायम कर देता है और इसे हलका बना देता है। इस तरह से यह मनुष्य के स्वाद के लिए आनन्ददायी होता है। इस दृष्टांत के द्वारा यीशु कुछ विशेष सिद्धान्तों को स्पष्ट करना चाहता है। इस दृष्टांत में अद्‌भुत प्रक्रिया के साथ काम होता है, जो आरम्भ होता है बहुत ही छोटे रूप से, परन्तु इसका अन्त बड़ा ही आश्चर्य जनक होता है, जैसा यह कहता है :'' होते होते सब आटा खमीर हो गया।'' यीशु अपने स्वार्थ रहित प्रेम को हमारे अन्दर हमारे अहंकार के स्थान में उत्पन्न करना चाहता है।

एक तरह से मैं सोचता हूँ यीशु सुसमाचार के प्रभाव को जगत में दिखलाना चाहता है। जौभी सुसमाचार का आरम्भ छोटे रूप में हुआ परन्तु अन्त में यह सम्पूर्ण जगत में फैल जाएगा।

दूसरे तरह से वह हमें दिखला रहा है कि किस तरह परमेश्वर की बदल डालनेवाली शक्ति पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे अंदर काम करता है। वह लूका 17:20–21 में इस तरह कहता हैः

''परमेश्वर का राज्य दृश्य रूप में नहीं आता। और लोग यह न कहेंगे, देखो यहां है या वहाँ है। क्योंकि देखो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।''

पहले परमेश्वर का राज्य यीशु के द्वारा उनके बीच में था। यीशु परमेश्वर के राज्य का रूप धारण किया और शैतान बुराई के राज्य का रूप लेता है। जब यीशु को हम अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के तौर पर स्वीकार करते हैं तब परमेश्वर का राज्य हमारे जीवन में आरम्भ होता है। जब हम उसमें बने रहते हैं और वह हम में, तब यीशु के दूसरे आगमन के समय परमश्ेवर का राज्य दृश्य रूप में हमारे लिए दिखाई देगा। और क्षण भर में ही हम देख सकेंगे परमेश्वर को राज्य को हम में विकसित होते यीशु के हम में होने के द्वारा और यीशु हम में सिर्फ पवित्रात्मा के द्वारा निवास कर सकता है। यहां पर इस दृष्टांत के विशेष पाठ प्रस्तुत किए जाते हैं।

बदलने वाली शक्ति चुपचाप काम करती है

खमीर को ''स्वर्ग के राज्य को दिखलाने के लिए उपयोग किया गया है। परमेश्वर के अनुग्रह का सजीव और परिपक्त करने की शक्ति का वर्णन करता है।'' यह परिवर्तन सिर्फ पवित्रात्मा द्वारा ही लाया जा

सकता है।'' यह एक अन्दरूनी शक्ति है। जो हर चीज में पैठ जाती है और हमें सम्पूर्ण रूप से बदल सकती है। इस तरह से परमेश्वर वास्तव में हमारे चरित्र को पवित्र आत्मा द्वारा बदल देना चाहता है। बाइबल दिखलाता है कि पवित्र आत्मा का पहला सुवअसर कभी कभी शाब्दिक और दृश्य होते हैं। परन्तु चरित्र का बदलना चुपचाप होता है। सिर्फ इतना कि हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हों। तब हम अचानक जान पाते हैं कि एक वास्तविक परिवर्तन हम में हो गया है।

एलेन जी. ह्वाईट ''जो खमीर आटा में छिपा रहता है वह अदृश्य रूप में काम करता है समस्त आटा को खमीर बना डालता है; इसी प्रकार सत्य का खमीर गुप्त, चुपचाप, धीरे धीरे काम करता है मन को बदल डालने का। स्वभाविक प्रवृति (अभिलाषा) दबाए जाते और नियंत्रण में लाए जाते हैं। नयी विचारों, नए अनुभवों, नई इच्छाएं आरोपित किए जाते हैं। ख्रीस्तीय जीवन में एक नए स्तर का चरित्र का निर्माण होता है। मन बदल जाता है, और नयी पंक्ति में शरीर के अंग काम के लिए उभाड़े जाते हैं, मनुष्य को नई आन्तरिक शक्तियां प्रदान नहीं की जाती हैं, परन्तु पहले से विद्यमान आन्तरिक शक्तियों को पवित्र किया जाता है। विवेक उभाड़ा जाता है। हमें ऐसा चरित्र दिया जाता है जो परमेश्वर की सेवकाई के लिए योगय बनाता है।''

परमेश्वर हमें क्यों गुप्त रूप से बदलता है, इतना सुक्ष्म कि जब तक हम परिणाम को देख न लें? क्या गुप्त समय की आवश्यकता होती है स्वभाव को बदलने के लिए जैसे प्रकृति में परिवर्तन आता है। जब यह ठंढ़ी ऋतु से बाहर आती है? ओक, सबसे मजबूत वृक्ष साधारणतः बहुत ही धीरे धीरे बढ़ता है। क्या परमेश्वर इस तरह हमारी परीक्षा लेता है यह देखने के लिए कि क्या हम में पवित्रात्मा प्राप्त करने की इच्छा है? क्या वह हमारे विश्वास को जांचता है?

जो सामर्थ हमारे चरित्र को बदलता है वह बाहर से आता है– यह हमारे अन्दर नहीं है।

सर्वप्रथम हमें इसका अनुभव करना है; परन्तु मनुष्य अपने आप को अपनी इच्छा की अभ्यास से बदल नहीं सकता। उसमें ऐसी कोई शक्ति नहीं जिसके द्वारा यह बदलाहट प्रभावित हो सकता है। यह खमीर एक ऐसी वस्तु है जो सम्पूर्ण रूप में बाहर से आती है। इसे खाने के पहले भोजन में ऐच्छिक बदलाव लाने के लिए डाला जाता है।'' यह एक बहुत ही विशेष बिन्दु है। यहां यीशु ने हमें दिखलाया है कि हमें एक सामर्थ की आवश्याकता होती है जो बाहर से आती है

हमारे चरित्र को बदलने के लिए। क्या हम यीशु की बातों को विशेष मामला समझ सकते हैं :'' क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। (यूहन्ना 15:5)

यीशु की ओर से ये विशेष परामर्श आज जो सिखलाया जाता है उस से बिल्कुल विपरीत है। चाहे मानव सेवा हो या गुप्त ज्ञान हो, या मानव तर्क या कुछ शिक्षा के क्षेत्र में हमारे लिए विकसित करने की शक्ति हमारे पास होती है। इससे सिर्फ अलग अलग तरीकों से जागृत होना है। ''आत्मा अनुभुति की भी चर्चा होती है। प्रेरित पौलुस अपने बारे में ऐसा कहा है और यह हम सभों पर लागू होता है।

''क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझ में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती।'' रोमी 7:18 इन परिस्थितियों में हमारे स्वयं की अनुभुति का प्रतिफल क्या हो सकता है? इसके बारे हम 2 तिमु. 3:1 में इस तरह पढ़ते हैं :'' अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे''। घमंड का ही राज्य होगा। हमारे लिए स्वयं की अनुभुति कुछ काम नहीं कर पायेगी, परन्तु यह ख्रीस्त की ही अभिज्ञाता से ही हो सकती है। विशेष बात तो यही है कि पवित्र आत्मा हम में वास करता है और हमें बदलता है।

''खमीर परमेश्वर के अनुग्रह का पुनर्जीवित करने के शक्ति को प्रदर्शित करती है। पुनः नया करने की शक्ति को परमेश्वर से आना है मन का परिवर्तन सिर्फ पवित्र आत्मा के सामर्थ से ही किया जा सकता है''

हमारे चरित्र को बदलने की कोई शक्ति हम में नहीं है। इसे बाहर से ही आना है। इसी कारण यीशु ने स्पष्ट शब्दों में हमारे ध्यान को लूका 11:9–13 की ओर खींचता है। इस सत्य के संबंध में कि हम पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करें, वास्तव में हमें निरन्तर पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करना चाहिए। जब यीशु इस जगत में था उस समय वह प्रतिदिन पवित्र आत्मा की सामर्थ से अपने आप को परिपूर्ण करता था। और हमारे लिए यह और भी आवश्यक हो जाता है। जब मैं सोचता हूं कि परमेश्वर हमें प्रतिदिन पवित्र आत्मा के द्वारा क्या देना चाहता है, तब मैं सोचता हूं कि हमारा अद्‌भुत परमेश्वर हर सुबह को हम से गले मिलना चाहता है। ठीक वैसा ही जैसे नवविवाहित दम्पति एक दूसरे से हर सुबह गले मिलते हैं।

एलेन जी ह्वाईट इस दृष्टांत के बारे कहती है ''सभी संस्कृति और शिक्षा जिससे संसार दे सकता है वे सब के सब एक पाप में गिरे हुए बच्चे में को स्वर्गीय बच्चा बनाने में असफल हो जायगा। नया करने

की शक्ति को परमेश्र से आना आवश्यक है। परिवर्तन या बदलाहट सिर्फ पवित्रात्मा के द्वारा ही लाया जा सकता है। जितने भी लोग बचाए जायेंगे, चाहे वे ऊँचा या नीचा हो, धनी या निर्धन हो, अवश्य है कि उसे इस काम करने वाले की शक्ति के अन्तर्गत सौंप देना है।''

इस ज्ञान का भी व्यवहारिक परिणाम है। क्या कोई स्त्री अपने पति के चरित्र को बदल सकता है या क्या पति अपनी स्त्री के चरित्र को बदल सकता है? अब अच्छी तरह समझता हूँ विवाहित दम्पतियों के लिए परमेश्वर के परामर्श को जो 1 पतरस 3:1–6 में मिलता है। जब पत्नियां अपने आप को पवित्र आत्मा द्वारा अन्दर से अपने को बदलने देते हैं, और पति भी ऐसा ही करते हैं :'' यदि ऐसे हो जो वचन के न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल चलन को देख कर बिना वचन के अपनी अपनी पत्नी के चाल चलन के द्वारा खिंच जाएं।'' (1 पतरस 3:1–2) और चौथे पद में यह बात करता है छिपे हुए गुणों के बारे :'' वरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त बात मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका बड़ा महत्व है।'' हमें यह प्रश्न पूछना है :'' मेरा बात करना अब तक क्या भलाई उत्पन्न किया है? परन्तु जब हम दीनताई और शांति का जीवन व्यतीत करते हैं और अपने पतियों और पत्नियों या बच्चों के लिए पवित्र आत्मा द्वारा प्रार्थना करते हैं तब हमारे लिए एक बड़ी आशा हो सकती है। हमें आज्ञा दिया गया है कि हम पवित्र आत्मा में प्रार्थना करें (यहूदा 20 पद)।

आस्ट्रिया से कुछ सु संवाद आया :'' यीशु में सम्पूर्ण रूप से समर्पित करने के द्वारा, परमेश्वर ने एक महीने के अंदर मेरे जीवन को पूरी तरह बदल डालने में सक्षम हुआ। इसके बारे 13 बिन्दुओं का जिक्र किया गया है, परन्तु मैं सिर्फ दो के बारे बतलाना चाहता हूँ।

- मैं बहुत अधिक शांत हो गया हूँ – अब मैं प्रतिदिन अनेक कामों को शांतिपूर्वक कर सकता हूं और तनाव अब मेरे पेट को और अधिक गड़बड़ी नहीं कर रहा है।

- मेरे पति ने तीन सप्ताहों के भीतर मुझ में जो परिवर्तन आया उस पर ध्यान दिया और कहा : अब तुम दांत नहीं काटती हो।''

क्या हम इस ज्ञान को अधिक से अधिक शिक्षा में उपयोग नहीं करेंगे? एलेन जी ह्वाईट कहती हैं : अपने बच्चों को सिखाओं कि यह उनका सौभाग्य है कि वे प्रतिदिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लें।'' क्या हम अपने छोटे बच्चों को ऐसा प्रार्थना करना नहीं सिखलायेंगे : स्वर्गीय

पिता, आज मुझे हर चीज में तेरे पीछे चलने में मदद कर और कृपा करके आप का पवित्र आत्मा मुझे दे।

सर विन्सटन चर्चिल, ग्रेट ब्रिटेन का प्रधान मंत्री दूसरे महायुद्ध के समय ऐसा कहा था : एक चीज को छोड़ कर हमने सारी वस्तुओं पर नियंत्रण कर लिया है : वह है लोगों पर। उसने सही कहा। लोग सिर्फ मानवीय प्रभाव से सीधे बदले नहीं जा सकते हैं। इस बात को होने के लिए इस धरती से बाहर की शक्ति की जरूरत है। यह परमेश्वर की शक्ति है जो बड़े प्रभावपूर्व ढंग से पवित्र आत्मा के द्वारा किया जा सकता है।

संक्षेप में हम कहेंगे : हमारे चरित्र को बदलने वाली शक्ति को हम से बाहर से प्राप्त किया जा सकता है। क्योंकि परमेश्वर का वचन हम से कहता है कि अन्दरूनी मनुष्यत्व को प्रति दिन नया किया जाना है। (2 कुरि. 4:16) अति आवश्यक है– सबसे अच्छा समय है, सुबह में विश्वास के साथ पवित्र आत्मा के लिए निवेदन करें।

सबसे पहले पवित्र आत्मा अपना काम हमारे हृदय से आरम्भ करता है और इसके बाद बाहर काम करता है।

दूसरा विशेष पाठ जिसे यीशु ने इस दृष्टांत में खमीर के बारे सिखलाया, यह नीचे दिया जा रहा है। मैं ख्राइस्ट ऑबजेक्ट लेशन्स से उद्धृत कर रहा हूँ।

जैसे खमीर, जब भोजन के साथ मिलता है यह अन्दर से बाहर काम करता है, इसलिए हृदय को नया करने के द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह जीवन को बदल डालने का काम करता है। परमेश्वर के साथ मेल के लिए सिर्फ बाहरी बदलाहट ही पर्याप्त नहीं है। अनेक लोग ऐसे हैं अपने जीवन में सुधार लाना चाहते हैं सिर्फ कुछ बुरी आदतों को सुधारने के द्वारा और वे इस तरह से आशा करते हैं मसीही बनने का, परन्तु वे आरम्भ कर रहे हैं गलत जगह में। हमारा पहला काम हृदय के साथ होता है।

विश्वास का काम और सत्य का काम आत्मा में दो अलग–अलग वस्तु है। सिर्फ सत्य का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है। यह हमारे पास हो सकता है, परन्तु हमारे विचारों की भावना बदली नहीं हो सकती है। हृदय को पवित्र होना और परिवर्तित होना आवश्यक है। जो व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञाओं को सिर्फ नैतिक बंधनों के विचार से मानते हैं– क्योंकि उसे ऐसा करने की आवश्यकता है – वह कभी भी आज्ञा मानने के आनन्द में प्रवेश नहीं कर सकता है। सच बात तो यह है कि वह

आज्ञा का पालन करता ही नहीं। जब परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना एक बोझ माना जाता है क्योंकि वे मनुष्यों के विचारों को काटते हैं, तब हम यह जान सकते हैं कि जीवन एक मसीही जीवन नहीं है। सच्चा आज्ञापालन हृदय के अन्दर जो शिक्षा या सिद्धान्त है उसी के अनुसार चलना है। जब हमारे हृदय बदल जाते हैं तब यह हमारे चरित्रों और व्यवहारों को बदलते हैं।

राल्फ लूथर ऐसा टिप्पणी करते हैं :'' यीशु कड़े शब्दों में उस तरह के विश्वास का विरोध किया जो सिर्फ भीतरी धार्मिक विश्वास ही को जो व्यवहारिक जीवन के जड़ में कोई परिवर्तन नहीं लाता है।''

डिजायर ऑफ एजेस नामक पुस्तक में ऐसा लिखा हुआ है :'' पवित्र आत्मा आत्मिक जीवन का स्वांस है। आत्मा का प्रगट करना ख्रीस्त के जीवन को प्रगट करना है। यह प्राप्त करने वाले को ख्रीस्त के गुणों से भर देता है। सिर्फ वही लोग परमेश्वर की ओर से सिखाए जा सकते हैं, जिनके पास अन्दर से काम करने वाली आत्मा है, और जिनके जीवन में ख्रीस्त का जीवन दिखाई देता है वे ही प्रतिनिधि करने वाले लोग हैं, वे ही कलीसिया के लिए काम करने वाले लोग ठहरते हैं।''

पवित्र आत्मा के विषय में जो मूल्यवान पाठ यीशु ने सिखलाया उन्हें संक्षेप में हम रखना चाहते हैं।

1. पवित्र आत्मा का सामर्थ जो हमारे अन्दर अधिकृत रूप से काम करता है। हम प्रायः इसका परिणाम ही देख सकते हैं।

2. बदलने वाली इस शक्ति को हमारे जीवन में बाहर से आना है।

3. यह बदलने वाली शक्ति पहले हमारे हृदय में ही आरम्भ होता है तब यह बाहर में काम करता है।

मैं दृढ़तापूर्वक सिफारिस करता हूं कि आप खमीर के बारे इस अध्याय को पढ़ें जो ख्राइस्ट ऑब्जेक्ट लेशन नामक पुस्तक में लिखे हुए हैं।

यह मेरे लिए बहुत ही लाभदायक थी।

यीशु के अंतिम वचन : पवित्र आत्मा की सुनें।

क्या आप जानते हैं वे अन्तिम बातें क्या थीं जिन्हें यीशु ने अपनी स्वर्गीय महिमा से अंतिम समय की कलीसियाओं के लिए कहा है?

''जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसिया से क्या कहता है।'' (प्रकाशित वाक्य 3:22) यीशु हम में से प्रत्येक को पवित्र आत्मा की सुनने के लिए बुलाता है और यही हम भी करना चाहते हैं।

मुझे बदलो?

क्या यीशु वास्तव में मुझे बदलेगा? उदाहरण के तौर पर चलिए हम एक सुन्दर चित्रकारी को लें। इसकी उपयोगिता या मूल्य उसकी सामग्री की उत्तमता से नहीं आती है जो उस पर उायोग किया गया है। उसमें सिर्फ थोड़े से रंग लगे हैं और कभी कभी घटिया सामग्री से बने हों। परन्तु कलाकार या चित्रकार की हाथों द्वारा एक अत्यन्त मूल्यवान चित्रकारी के रूप में बदल गया है। हमारा स्वभाव पापमय है। यह सिर्फ तब ही मूल्यवान हो सकता है जब यह सामग्री बड़े कलाकार के हाथों द्वारा उपयोग में लाया जाता है।

यीशु इसे करना चाहता है और वह इसे करने की योगयता रखता है। वह आप को और मुझे कुछ ऐसा बचायगा। जिससे उसकी महिमा होगी। अपने आप को उसके हाथों में प्रति दिन समर्पण करें और विश्वास के साथ पवित्रात्मा के लिए निवेदन करें। ऐसा करने से आप आश्चर्यचकित हो उठेंगे कि वह आप के लिए और आप में आपके द्वारा क्या कर सकता है।

एक बूढ़ा भिखारी लंदन में लंदन के पूल पर खड़ा हो कर सारंगी बचा रहा था। उसकी पुरानी टोपी में थोड़े से ही सिक्के लोगों ने दिया था। एक आदमी उधर से निकला और आगे बढ़ गया, परन्तु वह पीछे मुड़ा और वापस आया और उस भिखारी से कहा। थोड़ी देर के लिए आप के सारंगी को मुझे दें। वह आदमी उस सारंगी को इतना सुन्दर बजाया कि उस रास्ते से गुजरने वाले सारे लोग सुनने के लिए खड़े हो गए। यहां तक तक कि लोगों का आना जाना भी रूक गया। वह निकोलो पगानिनि था। आप को अपने जीवन में पहला सारंगी बजाने के लिए चुनाव करना है या आप सारंगी को सबसे बड़े कलाकार के हाथों में दे सकते हैं।

एक शिक्षक और उसके एक विद्यार्थी से व्यक्तिगत गवाही

एक साल पहले मेरे घरेलू कलीसिया में जब एक पुस्तिका ''स्टेप्स टू परशनल रिवाइवल'' बांटी गई, मैंने इसे शीघ्रतापूर्वक अच्छी तरह पढ़ लिया। जब मैं इसे पढ़ रहा था मुझे परमेश्वर के साथ पहले से अधिक

अनुभव प्राप्त हुए। यह मुझे आश्चर्यजनक लगा और इसके द्वारा मैं उत्साहित भी हुआ।

इस पुस्तिका के परिशिष्ट में, मैंने निम्नलिखित सुझाओं को प्राप्त किया : खोज में यह देखा गया कि इससे पढना या सुनना लगभग 10 बार दुहराना होगा तब कहीं विशेष विषय को हम अच्छी तरह समझ सकेंगे ये उत्साहजनक बातें मेरे ध्यान को पकड़ लिया। इसे कम से कम एक बार प्रयास करके देखें, परिणाम आप को अच्छा लगेगा।''

मैं इसका अनुभव करना चाहता था और तीसरी बार पढ़ने के पूर्व ही यह मुझे जकड़ लिया और मैं, हमारे उद्धारकर्त्ता के एक बड़े प्रेम का अनुभव कि या जिसको मैंने अपने पूरे जीवन में प्राप्त किया था। दो महीने के अन्दर ही मैंने इसे छः बार पढ़ लिया था और इसका परिणाम अच्छा रहा।

यह ऐसा था जैसे मैं इसे समझ सकता यह कैसा हो सकता है जब यीशु हमारे निकट आता है, तो हम उसके शुद्ध, दयापूर्ण और प्रेम से भरपूर आँखों को देख सकेंगे। उस समय के बाद मैं इस आनन्द को जो हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु में होता है इसके बिना मैं रहना चाहता हूँ। जब मैं सुबह में उस से पहले से ही सुबह की आराधना समय के लिए इच्छुक था, परमेश्वर के साथ पुनः अनुभव प्राप्त करने के लिए उसका सहभागिता चाहता था और दिन के समय मैंने चुपचाप प्रार्थना किया कि पवित्र आत्मा मुझे मेरे विचारों में वार्तालाप के समय मेरे नमूने पर जब मैं पढ़ाता रहूंगा और विचारों के आदान प्रदान में मेरी सहायता करे।

जब एक बच्चा मेरे ध्यान की याचना करता था और उसी के अनुसार काम करता था, परमेश्वर ने मुझे सामर्थ और समझ दिया कि कैसे उसके साथ वर्ताव किया जाए।

उस समय के बाद मेरे काम के दिन सृष्टिकर्त्ता की उपस्थिति से परिपूर्ण होता था। उसके अक्षरशः मेरे दैनिक जीवन में सहायता पहुंचाई। उस समय के बाद मैं सुबह में और समय समय के बीच पवित्र आत्मा के उँडेले जाने के लिए प्रार्थना करता हूँ। यह ऐसा प्रतीत होता है कि आप स्वर्ग के निकट हैं और इसका स्वाद अभी ही चख सकते हैं कि वहां पर कैसा होगा। जब मैं उस पुस्तिका को पढ़ रहा था मेरे मन में यह विचार आया कि मेरे विद्यार्थी जो स्कूल में हैं, वे भी इस अनुभव को बांटें। 10–15 वर्ष पुराने हमारे एडवेंटिस्ट स्कूल एलियाह जो वोरारलवग्र, आस्ट्रिया में है वहां मैं पढ़ाता हूं। इसलिए मैने परमेश्वर से प्रार्थना किया कि वह मुझे अवसर प्रदान करे। शीघ्र ही कुछ समय

के बाद मेरा एक सबसे अधिक आश्चर्यजनक अनुभव प्राप्त हुआ कि पवित्र आत्मा किस तरह जवान युवतियों के हृदयों में काम करता है।

13 वर्ष का एक असभ्य क्रूर लड़का और पवित्र आत्मा

मेरे पवित्र आत्मा पर लिखी पुस्तिका के पढ़ने के एक वर्ष पहले यह अनुभव आरम्भ हुआ। एक नया विद्यार्थी हमारे स्कूल में आया और कुछ ही दिनों के भीतर हमारी शान्तिपूर्ण वातावरण एक क्रूरता और झगड़े रगड़े के केन्द्र में बदल गया। लड़का 13 वर्ष का था, और वह सब बच्चों से बड़ा था और साथ ही साथ वह औरों से अधिक बलशाली था। पुरे स्कूल वर्ष में बहुत सारी चीजें सिखलायी गई थीं और स्कूल में आश्चर्यजनक परिणाम हुआ था परन्तु अब ऐसा लगने लगा कि सब अच्छाई कुछ ही क्षण में लुप्त होता नजर आने लगा।

उसे अपने आप ही कहने दे :'' जब मैं अपना वर्तमान स्कूल में आया, मुझे कुछ भी मालुम नहीं था कि आगे क्या होने वाला था। मेरे स्कूल के दूसरे ही दिन मुझे बहुत क्रोध आया, मैं चिल्लाने लगा और मेरे एक सहपाठी से लड़ने लगा। मैंने उसे मारा जौभी वह मुझसे कमजोर था। मैं उसे घृणा करने लगा और उसे फिर कभी देखना नहीं चाहता था।

बाद में मैं अपनी गलती का अनुभव किया और माफी मांगी, जैसे पहले हमेशा करता था। इसके बाद मैं प्रधान अध्यापक से बातें किया। अगले महीने मेरे अन्दर कुछ प्रतिक्रिया आरम्भ हुई। यह आश्चर्य की बात थी कि यह प्रतिक्रिया अभी शुरू हुई जब कि मैं एक पाद्री का बेटा था। अब मैं यीशु के साथ अधिक समय व्यतीत करने लगा।

छः महिने बाद उसने कहा यह प्रार्थना ही था जो उसे परमेश्वर के नजदीक ले आया। इसी समय के अन्तर्गत उसने शक्ति के लिए सुबह सुबह प्रार्थना करना भी आरम्भ कर दिया। उसका क्रोध और झगड़े का सिलसिला कम होता गया।

अब ग्यारह महीने बित चुका था जब से वह हमारे स्कूल में आया था और हम देख सकते थे कि उसमें बहुत अधिक सुधार हो गया है। पर उसका क्रोध, उसका गाली गलौज एवं मारपीट करने में स्थायी नियंत्रण हुआ।

यह सिर्फ स्वभाविक था। वह विजय प्राप्त करना चाहता था सिर्फ अपनी ही शक्ति और समझ के द्वारा, जो कभी कभी सफल होता

था और कभी कभी कुछ भी नहीं हो पाता था। हमारी प्रार्थनाएँ कुछ सफलता प्राप्त की, परन्तु उसका मन अभी भी अच्छा नहीं हुआ था और नया करने की शक्ति गायब थीं।

उसके लिए क्या भला होता है, जब कोई व्यक्ति अपनी को देखता है और अपने क्रोध को नियंत्रित करना चाहता है और अगला क्षण फिर गिर जाता है? ठीक उसी समय जब मैंने अनुभव कि मैं अपने बुद्धि के अन्त में था, मैंने उपरोक्त पुस्तिका को प्राप्त किया था। यह बिल्कुल सही समय में मिला था। तब मैंने अनुभव किया कि हम किस बात से वंचित थे। यह था पवित्र आत्मा की शक्ति। हमने उसे अभी तक हमारी मदद के लिए कहा भी नहीं था।

जब कि मैं ''स्टेप्स टू पर्सनल रीवाइबल'' नामक पुस्तक के संवाद से काफी प्रभावित हुआ था। मैंने साहस एकत्रित किया उसे लड़के से यह पूछने के लिए कि क्या कभी उसने पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना किया था। नहीं, उसने कभी ऐसा नहीं किया था। तब मैंने उसके अभिरूचि को पुस्तिका के प्रति जागृत करने की कोशिश किया था। तौभी मैंने इस पुस्तक को उसे नहीं दिया। उस किताब को वह वास्तविक रूप से चाहता। शीघ्र ही उसने उस पुस्तिका की मांग किया।

फिर से उसी के शब्दों में ''नवम्बर 2012 में मेरा शिक्षक मुझे ''स्टेप्स टू पर्शनल रिवाइवल'' नामक पुस्तिका दिया। मैं इसे सच्चे मन से पढ़ने लगा।

इस समय मैं पवित्र आत्मा के कामों को वास्तविक रूप से जानता नहीं था।'' उसे पहले दिन में उसने करीब दो अध्याय को पढ़ लिया था तब उसने मुझ से पूछी कि मैं कितनी बार इसे पढ़ा है। उसने फिर तुरंत उन अध्यायों को पढ़ना शुरू किया और इसे 6–10 बार पढ़ने के बाद वह वहां करना चाहता था जैसे पुस्तिका करने के लिए कहता था।

इसके बाद बहुत सारे बदलाहटें आईं। दिसम्बर 2012 के बाद और कोई क्रोध या लडाई झगड़ा नहीं हुआ मैं इसे बड़ी कठिनाई से विश्वास कर सका। जिन लड़कों को वह रोज–रोज मारता पीटता था वे अब उसके मित्र बन गए और वे बड़े प्रेम से हिल मिल कर रहने लगे थे।

अब वह पूरी तरह से बदल गया था अब वह नम्र हो गया था और यहां तक कि उग्र स्वभाव अब नम्रता में बदल चुका था। उसके सहपाठियों को विश्वास हो गया था कि परमेश्वर अपने काम को कर

रहा है। आप हर दिन फल देख सकते हैं। परमेश्वर की महिमा के लिए मैं यह बतलाना चाहता हूँ कि वह लड़का जून 2013 को बपतिस्मा लेने का निर्णय कर लेता है। यदि वह पवित्र आत्मा नहीं होता।

मैं हमेशा सोचता था कि मैं क्या एक बच्चे को चला सकूंगा और उसे कारणों को देखने में मदद कर सकूँगा। धीरज, सावधानी और अनेक बातों इसमें हो सकती हैं। परन्तु यह सब कुछ अधिक दिनों तक चलने वाला नहीं था। परमेश्वर को मुझे हस्तक्षेप करना और सिखाना था कि यह उसकी आत्मा है जो असंभव को संभव बनाता है। किसी दिन जब यह लड़का स्वर्ग में होगा, तब मैं जान पाउंगा कि परमेश्वर ही ने ऐसा होने दिया। जब जब मेरी बुद्धि का अंत हो गया था और अंत में मैं यह समझ पाया कि मैं उसकी अगुवाई नहीं कर सकता था, तब परमेश्वर मौलिक तौर से उस लड़के पर काम करना आरम्भ किया। यह देख कर मैं उत्साहित होता हूँ कि परमेश्वर के लिए कोई मामला आशा रहित नहीं है।

प्रार्थना : स्वर्गीय परमेश्वर, यीशु के आवश्यक निमंत्रण पवित्र आत्मा मांगने को लिए तेरा धन्यवाद करता हूँ। जो भी हानि मैंने उठाया है उसके लिए मैं दुखि हूँ ये सब इस लिए हुई क्योंकि मुझ में पवित्र आत्मा की कमी थी। मुझे ईश्वरीय सहायता की आवश्यकता है, ताकि यीशु मुझ में बडा हो सके। मेरे जीवन के हर क्षेत्र में मुझे उसकी आवश्यकता है। तेरा धन्यवाद करता हूं कि पवित्र आत्मा मेरे चरित्र को बदल सकता हूं, और मुझे उसकी आवश्यकता है। तेरा धन्यवाद करता हूं कि पवित्र आत्मा मेरे चरित्र को बदल सकता है। जो कुछ मैं हूँ और जो कुछ मेरे पास है, इन सारे वस्तुओं के साथ मैं अपने को तेरे लिए समर्पित करता हूँ। मुझे स्वीकार करने और तेरे आशीषों को देने के लिए मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ। पवित्र आत्मा के ज्ञान में बढ़ने के लिए मेरी सहायता कर। आमीन।

अध्याय 2

हमारी समस्याओं का केन्द्र क्या है?

क्या हमारी समस्याओं का कोई आत्मिक कारण है?

क्या पवित्र आत्मा की कमी इसका कारण है?

कमी के कारण

पवित्र आत्मा बाइबल का उत्तर है : ''तुम्हें इस लिए नहीं मिलता कि मांगते नहीं। तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोग विलास में उड़ा दो।'' याकुब 4:2–3

हमारा प्रभु यीशु हमें प्यार से बुलाया है और तत्क्षण पवित्र आत्मा मांगने के लिए कहा है। (लूका 11:9–13) हम समझते हैं कि हमें निरन्तर इसे मांगते रहना है।

''वे ख्रीस्त के बारे और पवित्र आत्मा के बारे बातें करते हैं, फिर भी उन्हें कोई फायदा नहीं होता है। वे अपनी आत्मा को अगुवाई किए जाने और ईश्वरीय साधनों से नियंत्रित होने के लिए अपने को समर्पण नहीं करते।''

कुछ समय से हम जागृति के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। यह अत्यन्त मूल्यवान है। एलेन जी. ह्वाईट ने कहा है : ''यह पवित्र आत्मा का वह बपतिस्मा है जिसकी आज कलीसियाओं को आवश्यकता है।'' हम पवित्र आत्मा के दान के लिए भूखे और प्यासे क्यों नहीं होते, जब कि यही वह साधन है जिसके द्वारा हम सामर्थ प्राप्त करते हैं? हम इसके बारे क्यों चर्चा नहीं करते, इसके लिए प्रार्थना क्यों नहीं करते, इसके संबंध में क्यों सिखलाते नहीं?''

इसे आरम्भ करने के साथ ही हम समस्या का विश्लेषण करना चाहेंगे। और इसे हम अच्छी तरह से करना चाहेंगे, नहीं तो एक खतरा होगा जिससे हम एक बदलाव सामझ लेंगे ओर इसे न तो आवशकता समझेंगे।

यह अच्छी बात है कि हम जागृति के लिए प्रार्थना करें, परन्तु हमें सिर्फ उसके लिए प्रार्थना ही नहीं करनी चाहिए परन्तु– जैसे मार्क फिनले कहते हैं– यह ऐसा है '' जैसे हम इसे अभ्यास में बाइबलीय जागृति की बातों को ले जाते हैं।'' क्या मैं आप को व्यक्तिगत जागृति को लिए कदम उठाने को आमंत्रित कर सकता है? क्योंकि बहुतों के लिए यह अधिक शक्तिशाली और परिपूर्ण जीवन की ओर अगुवाई करेगी।

इसे आरम्भ करने के साथ ही हम समस्या का विश्लेषण करना चाहेंगे। और इसे हम अच्छी तरह से करना चाहेंगे, नहीं तो एक खतरा होगा जिससे हम एक बदलाव समझ लेंगे और इसे न तो आवश्यक

समझेंगे और न तो महत्वपूर्ण। इसके बाद हम परमेश्वर के समाधान को देखना चाहेंगे, जो हमें अपार आशीष प्रदान करेगा, और अन्त में, हम इसे कैसे लागू करेंगे और केसे अनुभव करेंगे।

हमारी पवित्र आत्मा की कमी का यह अर्थ नहीं कि जो कुछ हमने किया है वह व्यर्थ होगा। पहले अनेक अच्छी योजनाएं और कार्यक्रम थे और अभी भी है। प्रभु ने निश्चय ही हमारे मानव प्रयासों को आशीर्वाद दिया है। परन्तु इसका प्रतिफल कितना बड़ा और कितनी अच्छी परिस्थिति हो सकती है, जब हम वास्तविक तौर पर पवित्र आत्मा के साथ अधिक निकटता का जीवन जीएं– इसे सिर्फ परमेश्वर जानता है।

यह इस दिशा में गया होता और भविष्य में इस दिशा में जायगा जैसे हेनरी टी. ब्लेकाबाई ने इसके बारे चर्चा किया है।

परमेश्वर उन लोगों के साथ छः महीने में ही अधिक काम कर सकता है जो उसके प्रति समर्पित होंगे, परन्तु असमर्पित लोगों के साथ परमेश्वर के बिना उतना काम छः वर्ष में भी हम नहीं कर पाएँगे।''

यह प्रश्न है परमेश्वर की अगुवाई में तुरंत सही दिशा में चलना और इस तरह अधिक से अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से काम हो सकता है। यह मामला तब संभव होगा जब हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होंगे।

उदाहरण : कोई उपदेश दे रहा होता है। यह उपदेश समाप्त कर चुकता है। शायद वहाँ कोई न हो, कुछ ही लोग हों, या अनेक लोग भी हो सकते हैं और सभी संवाद को ग्रहण करते हैं। यदि अनेक या सभी लोग संवाद को ग्रहण करते हैं और इसे अभ्यास में लाते हैं, तो यह प्रभाव है। यह कुछ ऐसा है जिसे पवित्र आत्मा देता है।

तीन दल के लोग और उनका परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध

परमेश्वर के वचन तीन दल के लोगों को उनके परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध के मुताबिक अलग करता है। हर एक दल में कई प्रकार के लोग थे जो माता–पिता के प्रशिक्षण, आचरण, अपने आप को प्रशिक्षण देना, उम्र संस्कृति, शिक्षा, इत्यादि पर निर्भर करते थे। परन्तु सभी प्रकार की भिन्नता होने के बावजूद भी परमश्वेर के लिए सिर्फ तीन तरह के आचरण हैं

संबंध का नहीं होना– इसे बाइबल कहती है स्वभाविक मनुष्य।

पूरा और सच्चा संबंध – बाइबल इस व्यक्ति को आत्मिक कहता है।

खंडित या बहानेबाजी का संबंध– बाइबल इस व्यक्ति को एक शारीरिक या विषय–वासना वाला व्यक्ति कहता है।

परमेश्वर के वचन बाइबल में यह शब्द व्यवहार ''स्वभाविक'' ''आत्मिक'' और शारीरिक रूप में मूल्यांकन नहीं किया गया है। ये सिर्फ किसी व्यक्ति के परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध कैसा है इसका विवरण 1 कुरि. 2:14–16 में और 3:1–4 में दिया गया है। अभी तुरंत हम स्वभाविक मनुष्य के विषय को हल्के रूप में लेना चाहेंगे। वह संसार में रहता है। और एक सरसरी निगाह से दो अन्य दलों को जिन्हें कलीसिया हमें समझने में सहायती करेगी कि कहां पर विशेष रूप से समस्या छिपी हुई है। सब मनुष्य की बात तो यह है कि हमें यह अनुभव करना है कि हम किस दल के हैं। इस प्रकार हमारी जाँच भी हमें मदद अपने स्वयं को पहचानने मे। हम अपने ही जीवन को एक नजर से देखना चाहते हैं, दूसरों के जीवन को नहीं।

एक दूसरे दल को पहचानने का सिद्धान्त क्या है? हम ऐसे निश्चित तौर से यह सोच कर कि सभी तीनों दलों का पवित्रात्मा के साथ व्यक्तिगत संबंध से ही पहचान होता है।

स्वभाविक या शारीरिक मनुष्य

''परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बाते हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।'' (1 कुरि. 2:14)

कलीसिया में आत्मिक और शारीरिक लोग

इन दो दल के लोगों का परिचय 1 कुरिन्थियों 2 औंर 3 अध्याय में मुख्यतः दिया गया है और साथ ही साथ रोमी 8:1–17 और गलातियों 4 और छः में भी दिया गया है। हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि इन दोनों दल के लोगों को अपना संबंध पवित्र आत्मा के साथ बनाए रखना है। यह ऐसा इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने निर्धारित किया है स्वर्ग के साथ हमारा एक मात्र संबंध पवित्र आत्मा के द्वारा ही होता है। (मत्ती 12:32) डिजायर ऑव एजेस पृष्ट 322 हृदय को पवित्र आत्मा

के लिए खुला रखना आवश्यक है नहीं तो हम परमेश्वर के आशीर्वाद को प्राप्त नहीं कर सकेंगे।''

कलीसिया के आत्मिक सदस्य

आइए पढ़ें। 1 कुरि. 2:15–16

आत्मिक जन सब कुछ जाँचता है, परन्तु वह आप किसी से जांचा नहीं जाता। क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखाए? (यशायाह 40:13) परन्तु हम में मसीह का मन है।''

आत्मिक व्यक्ति ही सच्चा मसीही है। उसे ''आत्मिक'' कहा गया है, क्योंकि वह पवित्रात्मा से परिपूर्ण होता है। यहां पर भी, पवित्र आत्मा के साथ संबंध को आत्मिक व्यक्ति के साथ जोड़ा गया है। उसका पवित्र आत्मा के साथ एक अच्छा और बढ़ता हुआ संबंध है। यीशु उसके जीवन का केन्द्र, कभी कभी हम भी कहते हैं कि यीशु हमारे हृदय के सिंहासन पर बैठा है। आत्मिक व्यक्ति अपने आप को आवश्यक और सम्पूर्ण रूप से यीशु को सौंप दिया है, और सामान्य नियम के अनुसार यह सिद्ध किया गया है कि वह प्रति दिन हर सुबह अपने आप को जो कुछ भी उसके पास है सारे वस्तुओं के साथ यीशु के लिए समर्पण करे। लौदिकिया के संवाद में उसे ''गर्म'' कहा गया है, और 10 कुवांरियों के दृष्टांत में उसे ''बुद्धिमान'' कहा गया है। यहां तक कि रोमी 8:1–17 और गलातियों 5 में उसके बारे और भी अधिक कहा गया है। वह जीवन का अनुभव ''बहुतायत'' से करता है या जैसे पौलुस कहता है, ''कि तुम परमेश्र की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।'' इफिसियों 3:19, कुलुस्सियों 2:9

पृष्ट 35 के चित्र

कलीसिया के शारीरिक सदस्य

कोई व्यक्ति सायद थोड़े समय के लिए या अनेक वर्षों के लिए कलीसिया का सदस्य बना रह सकता है, फिर भी वह एक शारीरिक मसीही ही बना रहता है। यदि वह व्यक्ति आप हैं तो यह जानकर आप चकित होंगे कि आप इस क्षण एक शारीरिक मसीही हैं, तो इस के बारे आप विचलित न हों, परन्तु इसके बदले आप आनन्दित हों, क्योंकि आप

के पास तुरन्त बदल जाने की संभावना है। आप पवित्र आत्मा के साथ अपने जीवन में बड़े आनन्द का अनुभव करेंगे। मैं ऐसा विश्वास करता हूँ कि अधिकतर शारीरिक मसीही अनजाने अपनी इस स्थिति में पड़े हुए हैं और अपने विश्वास में वे अधिक अनुभव की लालसा करते हैं। उनकी अज्ञानता में कभी कभी उनकी गलती नहीं होती है। यह जान लें, कि आप यीशु के साथ जीवन बिताने में अपने हृदय में अधिक आनन्द का अनुभव करेंगे। पवित्र आत्मा के द्वारा। (युहन्ना 15:11 में यीशु कहता है, ''और तुम्हारा आनन्द पुरा हो जाए।'') इस बदलाव के द्वारा आप एक–एक कदम में बहुतायत का जीवन का अनुभव करेंगे। (यूहन्ना 10:10 में यीशु कहता है –'' मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं)'' और तुम्हारा विश्वास अनन्त जीवन की आशा के लिए और दृढ़ हो जाओगे।

अब चलिए पढ़ें कि प्रेरित पौलुस कलीसिया के शारीरिक सदस्यों के बारे 1 कुरि. 3:1–4 में क्या कहता है : ''हे मनुष्यों, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से, परन्तु जेसे शाारीरिक लोगों से, और उन से जो मसीह में बालक हैं। मैंने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको नहीं खा सकते थे; वरन् अब तक भी नहीं खा सकते हो, क्योंकि अब तक शारीरिक हो। इसलिए कि जब तुम में डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और क्या मनुष्य की रीति पर नहीं चलते? क्योंकि जब एक कहता है, ''मैं पौलुस का हूँ'' और दूसरा ''मैं अपुल्लोस का हूं,'' तो क्या तुम मनुष्य नहीं?''

प्रार्थना : स्वर्ग के परमेश्वर, मुझे इस प्रश्न को अपने आप को पूछने इच्छा दे। यदि मैं एक शारीरिक मसीही हूं, तब कृपया मुझे मदद कर कि मैं इस उचित मार्ग को अनुभव कर सकूं। मुझे ऐसा इच्छुक बना ताकि मैं उन सारे बातों को करने के लिए मैं इच्छुक हो सकूँ जिन्हें तू चाहता है। कृपया मुझे एक आनन्दित मसीही जीवन बिताने में मदद कर– और उस प्रतिज्ञा के बहुतायत का जीवन और अनन्त जीवन को प्राप्त करने के लिए। कृपया मेरे हृदय को नया कर दे। मेरे प्रार्थना को सुनने के लिए धन्यवाद। आमीन

क्या आप यहां इन दलों के निर्धारन के मापदंड को साफ–साफ देख सकते हैं कि यह पवित्र आत्मा के साथ व्यक्तिगत संबंध है। इन थोड़े पदों मे प्रेरित पौलुस चार बार लिखता है कि वे शारीरिक हैं। शारीरिक का अर्थ क्या होता है? इसका अर्थ है, यह व्यक्ति शरीर की शक्ति के साथ जीवन व्यतीत करता है, वह साधारण ताकत और

योग्यताएं हैं जो किसी व्यक्ति में होता है। इससे अधिक इसका अर्थ होता है वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण नहीं है या तो पर्याप्त मात्रा में पवित्र आत्मा से भरा हुआ नहीं है।

कुछ लोग सोचते हैं कि इस दल में सिर्फ वे लोग रहते हैं, जो हल्ला मचाने वाले पाप में जीते हैं। लेकिन इस दल के बीच सिर्फ एक ही प्रतिछाया नहीं है परन्तु अनेक हैं। फिर से मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ इन प्रत्येक दलों के बीच बहुत अधिक भिन्नताएं हैं।

पौलुस शारीरिक लोगों को ''प्रिय भाईयों'' के तौर पर संबोधन करता है। यह दिखलाता है कि वह कलीसिया के सदस्यों के साथ कैसा व्यवहार कर रहा था। पौलुस उनसे ''आत्मिक लोगों के रूप में'' बातें नहीं कर सकता था। इसका अर्थ यही हुआ कि वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण नहीं थे या पवित्रात्मा उनमें पर्याप्त नहीं था। इसलिए वह ''ख्रीस्त में बच्चे'' के तौर पर उनसे बातें करता था। यह दिखलाता है वे विश्वास में बढ़े नहीं थे, जैसा उन्हें बढ़ना चाहिए था। किसी व्यक्ति के पास बाइबल का बड़ा ज्ञान हो सकता है फिर भी वह आत्मिक रूप से बढ़ा नहीं है। आत्मिक रूप से बढ़ने का अर्थ है, सम्पूर्ण रूप से यीशु के प्रति समर्पण होना और पवित्र आत्मा में निरन्तर जीवन बिताना।

अनेक शारीरिक मसीही असंतोष, निराशा, उद्देश्य रहित या तो वे अपने आतिमक जीवन में लगातार संघर्ष करते रहते हैं।

कुछ अन्य कलीसिया के शारीरिक सदस्य हैं जो इस परिस्थिति के आदि हो गए हैं या इस परिस्थिति से उनका मन लग गया है। वे यह कह सकते हैं; हम सिर्फ पापी हैं। हम इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते हैं।

फिर भी कुछ शारीरिक मसीही उत्साही हो सकते हैं। वे आनन्दित हैं कि वे बाइबल की सच्चाई को जानते हैं। कलीसिया के कुछ शारीरिक सदस्य बहुत ही जल्दी जल्दी काम करने वाले लोग होते हैं और यहां तक कि स्थनीय मंडली में अगुवाई करने वाले पद पर हो सकते हैं। वे शायद परमेश्वर के लिए बहुत अधिक काम करने वाले भी हो सकते हैं।

मत्ती 7:22–23 :' उस दिन बहुत से लोग मुझसे कहेंगे, 'हे प्रभु क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्य काम नहीं किए?'' तब मैं उनसे खुल कर कह दूँगा, ''मैंने तुमको कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ।''

समस्या कहाँ पर है? यीशु ने उनसे कहा कि वह उन्हें नहीं जानता। ख्रीस्त के साथ उनका संबंध सच्चा नहीं था, परन्तु उनका संबंध सिर्फ एक छल था। ऐसा प्रतीत होता है सच्चा समर्पण नहीं था या वे संबंध को कायम नहीं रखे थे। पवित्र आत्मा के साथ यीशु उनके हृदय में निवास नहीं किया था। इस तरह ख्रीस्त के साथ उनका कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं था। ऐसा लगता है ख्रीस्त के साथ एक दिखौवा संबंध ही था। जब ख्रीस्त हम में है ही नहीं? मैं इसके बारे कुछ गंभीर बात पढ़ता हूँ। इनको बतलाने के पहले, मैं दिखलाना चाहता हूँ कि हम निम्न लिखित बातों से मुक्त हो सकते हैं यदि हम पवित्र आत्मा के साथ जीवन जीयेंगे। :

''एक ऐसी आत्मा जो ख्रीस्त के आत्मा का विरोध करता है वह उसका इन्कार करेगा, चाहे कुछ भी धंधा बुरी बातों के बोलने के द्वारा, मूर्खता की बातों द्वारा जो झूठी या निर्दयता की बातें के द्वारा लोग ख्रीस्त का इनकार कर सकते हैं। क्यों न हो। बुरी बातों, मुर्खता की बातें, झूठी या निर्दयता की बातों द्वारा लोग ख्रीस्त का इनकार कर सकते हैं। वे उसका इनकार अपने जीवन के बोझों को दूर हटाने के द्वारा, पापमय आनन्द के पीछे भागने के द्वारा कर सकते हैं। वे ख्रीस्त का इनकार जगत के साथ सहमत होने के द्वारा अशिष्ट व्यवहार के द्वारा, अपने विचारों से प्रेम करने के द्वारा, अपने आप को सही ठहराने के द्वारा, शंका के मन में रखने के द्वारा, संकट लेने के द्वारा और अंधकार में रहने के द्वारा कर सकते हैं। इन सारी बातों के द्वारा वे घोषणा करते हैं कि ख्रीस्त उनमें नहीं है।''

परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा यह शीघ्रता पूर्वक बदल सकता है। हम पुनः इस बात का तीसरे और पांचवें भाग में देखेंगें

हमारे जीवन को परमेश्वर के लिए आत्मसमर्पण करना और उसके लिए सौंप देना महत्वपूर्ण क्यों हैं?

परमेश्वर का वचन कहता है : ''इसलिए हे भाइयो, मैं तुमसे परमेश्वर की दया का स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।'' (रोमी 12:1)

''परमेश्वर चाहता है हमें चंगाई दे, हमें स्वतंत्र करे (हमारे घमंड की निर्दयता और पाप की बंधुवाई से) परन्तु इसके लिए एक सम्पूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता है, हमारे सम्पूर्ण स्वभाव फिर से नया करना

है, हमें अपने आप को अवश्य है कि सम्पूर्ण रूप से उसके हाथों में सौंप दें।'' हमारा घमंड क्रोधित होता है, ईष्यालु है बुरा मानता है, बदला लेने का आदि है। परमेश्वर हमें इन सभी बुराईयों से मुक्त करना चाहता है।

वह हमें अपने आप को दे देने के लिए आमंत्रित करता है, ताकि वह अपनी इच्छा हम में पूरा कर सके। यह हमारे लिए चुनने को रखा गया है कि हम अपने को पाप के बंधन से मुक्त करें और परमेश्वर के पुत्रों की महिमापूर्ण आजादी का हिस्सा बनने के लिए।''

''मैं तुम से परमेश्वर की दया का स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।'' (रोमी 12:1)

परमेश्वर हमारी मूल समर्पण का उत्तर देता है नए सिरे से जन्म लेने के साथ (यूहन्ना 3:1–21)। इसके बाद हमें समर्पण का जीवन व्यतीत करना है। (यूहन्ना 15:1–17) इसके बारे हम तीसरे भाग में और अधिक बातें करेंगे।

हमारे जीवन को परमेश्वर समर्पण करने के बारे मोरीस वेंडेन कहता है।

''अधुरा या आंशिक समर्पण नाम का कोई वस्तु नहीं है। आंशिक रूप से समर्पण करना संभव नहीं है, जिस तरह थोड़ा सा गर्भ धारण करना नहीं हो सकता है। या तो आप है या नहीं है। कोई बीच का जगह नहीं है।

एलेन ह्वाइट दैनिक समर्पण के बारे ऐसा कहती है : सिर्फ वे ही जो ख्रीस्त के साथ सहकर्मी होंगे, सिर्फ वे ही जो कहेंगे, प्रभु जो कुछ मेरे पास है और जो कुछ मैं हूँ सब तेरा है, उन्हें ही परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों के रूप में स्वीकार किया जाएगा।''

इस तरह से एक व्यक्ति कलीसिया में हो सकता है और फिर भी खो जा सकता है। कितनी दुःख की बात है। (दस कुंवारियों का दृष्टांत और लौदीकिया की कलीसिया का संवाद इसी बात को दर्शाते हैं)

शारीरिक मसीहियों को पहचानना बहुत कठिन है क्यों?

क्योंकि शारीरिक व्यक्ति का जीवन ''धार्मिक कामों'' से भरा रहता है, वह अनुभव नहीं कर सकता है कि वह एक अति आवश्यक वस्तु अथवा प्राण को खो रहा है : और साथ ही साथ परमेश्वर के साथ निकटता और बचाव के रास्ते को भी खो रहा है। यदि हमारे पूरे जीवन को चलाने की अनुमति ख्रीस्त को न दिया जाए, तब वह द्वार के सामने खड़ा हो कर खटखटाता है। (प्रकाशित वाक्य 3:20) और वह कहता है। यदि यह नहीं बदलता है, तो वह कहता है, मैं तुम्हें उगल दुँगा।

कुछ और बात है जो इसमें अपना काम करता है। हमारी मजबूत सैंद्धान्तिक आधार के द्वारा जिसका आधार बाइबल है, इसमें हमारा दृढ़ विश्वास है। हमें निश्चय निश्चयता है कि हम सत्य पर विश्वास करते हैं, जो हमें पुलकित करती है। हमारे पास अत्यधिक अच्छा समाचार हैं। हम उचित बात बोलते हैं। इसी कारण से शारीरिक समस्या को पहचान पाना बहुत कठिन होता है। यदि मैं कभी वास्तव में पवित्र आत्मा के साथ जीवन बिताया है तो क्या पवित्रात्मा का काम हुआ? यदि नहीं, तो क्या मैं इसके फर्क को जान सकूंगा।?

एक पाद्री ने लिखा है : ''एक बहन से मैंने एक फोन कॉल हाल ही में प्राप्त कि, जो 40 दिन प्रार्थना के कार्यक्रम में भाग ले रही थी, उसने कहा कि यह कार्यक्रम मेरे जीवन को बदल डाला है। वह अपने पूरे जीवन काल में आश्चर्य करती रही कि उसके आत्मिक जीवन में क्या कमी थी और अब वह जान पायी कि उसमें पवित्र आत्मा की कमी थी। मैं चाहता हूँ आप खुद उसकी गवाही को सुने होते। उसने कहा कि उसने पहली बार अपने जीवन में यह जान पायी कि उसका संबंध परमेश्वर के साथ हुआ। यहां तक दूसरे लोग भी देख सकें कि उसके जीवन में परिवर्तन आया। हम देख सकते हैं कि कोई व्यक्ति उसमें जो कमी है उसे वह देख सकता है, परन्तु नहीं जानता किस वस्तु की कमी। बहुतों को अनेक वस्तुओं की इच्छा होती है, पर नहीं जानते वह क्या है या उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है।

मैं धन्यवादी हूँ कि 1 कुरि. 3:1–4 में ''अब तक'' शब्द का व्यवहार हुआ। '' क्योंकि अब तक शारीरिक हो।'' यह हमें दिखलाता है कि एक शारीरिक मनुष्य के लिए यह संभव है कि वह आत्मिक हो सकता है। किसी को भी शारीरिक अवस्था में बना रहना नहीं है। क्योंकि वह मंडली में है, उसके लिए एक अच्छा अवसर है वह इसका अनुभव कर सकता है और इसे बदल सकता है। हम इस बात को बाद में लेंगे कि हम कैसे एक आत्मिक हो सकते हैं।

दूसरी बात जिसे हमें विचार करना है वह ईर्ष्या (डाह) और झगड़ा है। जैसे नई अन्तर्राष्ट्रीय बाइबल अनुवाद में ऐसा कहता है

''तुम्हारे बीच में ईर्ष्या और झगड़े हैं।'' यह व्यवहार पौलुस को प्रमाणित करता है कि शारीरिक मंडली के सदस्य परमेश्वर की आत्मा के अनुसार नहीं चलते थे, परन्तु वे शारीरिक तौर से काम करते थे। जैसे मंडली के बाहर के लोग करते थे। वे ठीक वैसा ही काम दिखलाते थे जैसे स्वभाविक मनुष्य दिखलाते थे; ऐसा होते हुए भी वे धार्मिक होने का ढोंग रचते थे। इसका अर्थ यह नहीं कि मंडली में प्रधानतः शारीरिक सोच विचार रखने वाले मंडली के लोगों द्वारा ही परेशानियां होती थीं? (पढ़ें यहुदा 19 पद) यीशु के समय में क्या फरीसी और सदूकी आपस में नहीं झगड़ते थे? इसका अर्थ यह हुआ कि उन दिनों में भी परिवर्तन का विरोध करने वाले (सनातनी) और स्वतंत्र विचार वाले मनुष्यों के बीच लोगों के बीच में तनाव होता था। एक दल के लोग अपने विधि विधानों को बहुत कड़ाई के साथ पालन करते थे और दूसरे दल के लोग ढिलाई बरतते थे। परन्तु दोनों दल के लोग यह विश्वास करते थे कि उनके पास बाइबल का सही व्याख्या है और वे उसका पालन करते हैं। परन्तु यीशु ने हमें दिखलाया कि दोनों दल के लोग शारीरिक थे, उनका अर्थ लगाना पवित्र आत्मा से पूर्ण नहीं था। आज भी इसी तरह की बात संभव हो सकता है। परिवर्तन नहीं चाहने वाले रूढ़ीवादी मसीही भी शारीरिक मसीही हो सकते हैं।

अभाग्यवस, आज भी लोग प्रायः रूढ़ीवादी चश्में से देखते हैं या उदारवादी चश्में से देखते हैं। इसमें यह लाभ है कि देखने वाला अच्छी तरह देखता है। जो भी हो, बाइबलीय विश्लेषण ''शारीरिक'' और ''आत्मिक;; के साथ हम सब ललकारें जाते हैं कि हम आत्मिक मुल्यांकन करें। इसे हम अपनी ही लाभ के लिए करें। विचार करें कि परमेश्वर गलातियों 6:7–8 में साफ साफा क्या कहता है। ... ''धोखा न खाओ; परमेश्वर ठ्टठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।''

शारीरिक या सांसारिक व्यक्ति यीशु के पीछे चलना चाहता है और उसे प्रयत्न करना चाहता है, परन्तु वह अपने सम्पूर्ण जीवन को यीशु के लिए समर्पण नहीं किया है या यदि उसने किया भी हो पर किसी तरह विश्वास से भटक गया है। (गलातियों 3:3, प्रकाशित वाक्य 2:4–5) इसका अर्थ हुआ कि वह शायद अज्ञानता से परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहता है और अपनी इच्छाओं के अनुसार चलता है। पर यह काम नहीं करता है। वह अपने जीवन को अपने ही हाथों में ले कर चलता है। जैसा कहा जाता है कि ह्रदय में

दो आत्माएं वास करती हैं। क्या इस तरह के मामले में परमेश्वर पवित्र आत्मा को भेजेगा? याकूब 4:3 इसका उत्तर देता है ''तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से माँगते हो।'' मैं इस निष्कर्ष पर आया हूँ कि शारीरिक इच्छा (स्वभाव) से मांगा जाता है। क्या इस तरह के माँग का उत्तर देना घमंड एवं स्वार्थ को बढ़ावा नहीं देगा? इस तरह से, यह मंडली का सदस्य मानव शक्ति और मानव योग्यताओं द्वारा जीता है। प्रकाशित वाक्य 3:16 में ऐसे लोगों को ''गुन–गुना'' कहा गया है और मत्ती 25 अध्याय में निर्बुद्धि (मूर्ख) कहा गया है।

शारीरिक मंडली के सदस्यों को यीशु क्यों गुन–गुना कहता है?

ऐसा क्यों है कि अधिकांश मसीही लोगों में पवित्र आत्मा के अनुभव की कमी होती है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, पहले हमें लौदिकिया की कलीसिया परिस्थिति को देखना होगा। यीशु ने लौदिकिया के विश्वासियों को गुन गुना क्यों कहा है? उसने हमें एक स्पष्ट सूचक प्रदान किया है :'' देख मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ।'' (प्रकाशित वाक्य 3:20) यीशु विश्वासियों के जीवन का केन्द्र नही था, परन्तु वह बाहर था। वह बाहर में दरवाजे के सामने खड़ा था। वह अन्दर क्यों नहीं गया? क्योंकि वह अन्दर बुलाया नहीं गया था। वह जबरदस्ती भीतर आना नहीं चाहता क्योंकि वह हमारी स्वतंत्र इच्छा के चुनाव का आदर करता है।

विश्वासी लोग यीशु को क्यों बाहर द्वार के सामने छोड़ देते हैं? इसके अलग अलग कारण हो सकते हैं। कुछ लोग अपने आत्मिक जीवन में, एक विशुद्ध मानसिक और एक निश्चित शक्ति की योजना पर ही चलते हैं, जैसे शास्त्री निकुदिमुस, और अन्य जो यह समझ नहीं पाते कि मसीही जीवन किस बारे में है। (इसकी तुलना युहन्ना 3:1–10 से करें) किसी किसी के लिए ''शिष्य'' होने का कीमत बहुत अधिक हो जाता है, उन्हें बहुत अधिक देना पड़ता, जेसे उस ''धनी युवक व्यवस्थापक'' (तुलना करें मत्ती 19:16–24 के साथ) । यीशु पीछे होने के लिए आत्म त्याग की आवश्यकता होती है और अपने जीवन को बदल डालने की इच्छा होनी चाहिए। (इसकी तुलना मत्ती 16:24–25 के साथ करें) और अपने आप को पूर्ण रूप से परमेश्वर के लिए सौंप देना चाहिए। (रोमियों 12:1)। यीशु को दरवाजे से बाहर रखने का कारण हो सकता है पूरी लापरवाही और यीशु के साथ व्यक्तिगत सहभागिता में पर्याप्त नहीं देना।

मैं पुनः दुहराता हूँ तु न तो ठंडा है और गर्म, तू गुनगुना है (प्रकाशित वाक्य 3:20) । इस लिए मैं तुझे अपने मुंह से उगलने पर हूँ। ''देख मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ।'' यीशु उनके जीवन के मध्य में नहीं हे, परन्तु वह बाहर में एक किनारे है। इस तरह से गुनगुना होना ख्रीस्त के साथ व्यक्तिगत संबंध को दिखाताहै। दूसरे क्षेत्रों में व्यक्ति को गुनगुना नहीं होना चाहिए।

एक उदाहरण : कोई आदमी अपने व्यवसाय में बहुत अधिक रूपया लगा सकता है, परन्तु उसी समय अपनी पत्नी की उपेक्षा करता है, अर्थात उसकी सुधी नहीं लेता है। वह अपने काम में पूरी तरह समर्पित है, परन्तु अपने वैवाहिक संबंध में वह गुनगुना है। जौभी कि एक मंडली का सदस्य, समर्पित सदस्य, मंडली का एक मेहनती अगुवा हो या पास्टर हो या प्रेसिडेंट हो फिर भी उसका संबंध ख्रीस्त के साथ गुनगुना हो सकता है। कोई व्यक्ति अपने बहुत से काम को पूरा करने के लिए अत्यधिक समर्पित हो सकता है, जिसके चलते वह ख्रीस्त के साथ अपना व्यक्तिगत संबंध की उपेक्षा करता है। यही वह गुनगुनापन है जिसे यीशु दूर हटाना चाहता है। यह बड़ी दुःख की बात है एक व्यक्ति परमेश्वर के काम में इतना अधिक व्यस्त रहता है। (कलीसिया के काम या प्रचार के काम में) कि वह प्रभु की उपेक्षा एवं तिरस्कार करता है।

दस कुँवारियों का दृष्टांत

- यीशु का दस कुंवारियों का दृष्टांत आत्मिक और सांसारिक मंडली के सदस्यों के संबंध हमें क्या दिखलाता है?

- दसों के दस कुंवारी थे।
- सब के पास सच्चा बाइबलीय विश्वास था।
- सभी के पास मशालें थी।
- सभी के पास बाइबल थी।
- सभी दूल्हे से मिलने के लिए गए।

- सभी ने यीशु के दूसरी आगमन की आशा देखती थी
- सभी सो गए
- सभी ने पुकार सुनी और जाग उठे
- सभी ने अपने मशालों को ठीक किया
- सभी मशाले जल रहीं थीं।

आधी कुवाँरियों ने देखा की उनकी मशालें बुझ रहीं थीं।

सभी ने अपनी अपनी मशालें ठीक किया और सभी मशालें जल रहीं थी, परन्तु जलती मशालों के लिए तेल की जरूरत थी। शक्ति खर्च हो चुका था। कुछ देर के बाद पांच ने देखा कि उनकी मशालें बुझ रही थी। मूर्ख कुवाँरियों की मशालें सिर्फ थोड़े समय के लिए ही जली, यह हमें दिखलाता है कि पवित्र आत्मा से कुछ भाग उनके पास था। परन्तु यह पर्याप्त नहीं था। बहुत ही थोड़ा तेल रह गया था। उनमें सिर्फ इतना ही फर्क था।

जब ये पांच मूर्ख कुवाँरियां अन्दर जाने को आईं और अनुमति मांगी, यीशु ने उत्तर दिया :'' मैं तुम्हें नहीं जानता।'' तेल खोजने में अर्थात् पवित्र आत्मा प्राप्त करने में बहुत देर हो चुका था। द्वार फिर खुला नहीं।

यीशु का कहना हमें दिखलाता है कि उसके साथ हमारा व्यक्तिगत संबंध पवित्रात्मा के साथ संबंध को दिखलाता है। जो कोई भी अपने आप को पवित्र आत्मा द्वारा अगुवाई करने नहीं देता है, वह यीशु द्वारा पहचाना नहीं जाएगा। रोमियों 8:8–9 में ऐसा लिखता है :'' जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। ..... यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं हो तो वह उसका जन नहीं।''

वास्तव में हम यीशु के साथ सच्चा व्यक्तिगत संबंध बना सकते हैं, सिर्फ पवित्रात्मा के द्वारा से ही। 1 युहन्ना 3:24 कहता है : ''और इसी से अर्थात् उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है।'' इसका अर्थ हुआ कि यह निश्चयता जो मुझ में है कि मैं पवित्र आत्मा से भरा हुआ हूँ, इसी समय वह निश्चयता कि मैं यीशु में हूँ और वह मुझ में है। यही अनुभव बिल्कुल उसी तरह का है उस बहन का था, जिसमें 40 दिन के प्रार्थना कार्यक्रम में हिस्सा लिया था। पवित्र आत्मा की उपस्थिति अपने जीवन में होने के द्वारा उसने परमेश्वर के साथ अपने जीवन में

बना लिया एक बिल्कुल अलग तरीके से और दूसरों ने उसके जीवन में जो परिवर्तन हुआ उसे देख पाए। एक और बहन दक्षिणी जर्मनी से पत्र लिखा। इस पुस्तिका को पढ़ने के बाद! इस पुस्तिका और 40 दिन प्रार्थना और धार्मिक सभाओं होने का एक साथ करना दूसरी आगमन के तैयारी के लिए डेनिस स्मिथ और इस पुस्तिका दोनों के द्वारा मेरे जीवन में बड़ी आशीष प्राप्त हुई जिसकी आशा बहुत दिनों से थी। ठीक वैसा ही जैसे मंडली के अनेक सदस्य और एक बहन भी हमारी मंडली से अनुभव प्राप्त की, हमारे विश्वास के अनुभव में हमेशा कुछ कमी थी और अब हमें अवसर प्राप्त हुआ यह जानने की कैसे यीशु हमारे जीवन प्रवेश किया और हमें बदलना आरम्भ कर दिया। वह अभी भी हम में काम कर रहा है और धीरे धीरे हमें अपने नजदीक खींच रहा है।

एक और भाई ने यह लिखा : ''स्पेप्स टू पर्सनल रिवाइवल'' नामक पुस्तिका मुझे स्पर्श किया। 10 कुंवारियों पर लिखा हुआ अध्याय और खास करके रोमियों 8:9 ''यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।'' यह मुझे अत्यधिक शोकित किया। अचानक मैं निश्चित नहीं था कि मुझ में पवित्र आत्मा है कि नहीं, और यदि वह मुझे में काम कर रहा है तो मैं जो ''फल'' मेरे जीवन में होना चाहिए वे नहीं हैं। इस सब्बत को दोपहर के बाद मैं इस पुस्तिका को पढ़ कर समाप्त किया और मुझ में एक गहरा शोक छा गया। तब मैंने 108 पृष्ठ के प्रार्थना को पढ़ा और तब मेरे मन में एक गहरी इच्छा उत्पन्न हुई, पवित्र आत्मा को प्राप्त करने का कि इसे मेरा हृदय बदल जाएगा और परमेश्वर पिता अपनी इच्छानुसार मुझे बदलेगा। ....। इस पुस्तिका के लिए और उन शब्दों के लिए धन्यवाद जो मुझे गहराई के साथ प्रभावित किया।''

सबसे बड़ी दुखद घटना होगी एक सांसारिक या शारीरिक मसीह के लिए यह कि वह अनन्त जीवन प्राप्त नहीं करेगा यदि उसकी स्थिति बदलती नहीं। रोमियों 8:9 ''यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।''

अब संक्षेप में आते हैं : आत्मिक और सांसारिक मंडली के सदस्य के बीच में मुख्य भिन्नता पवित्र आत्मा को लेकर है। आत्मिक मसीही पवित्र आत्मा से भरा होता है। शारीरिक या सांसारिक मसीही में पवित्र आत्मा पर्याप्त मात्रा में नहीं होता है।

क्या आप ऐसा अनुभव नहीं करते हैं कि आप एक सांसारिक मसीही हैं, तब क्रोधित न हों। परमेश्वर आप को एक दवा दे रहा है : पवित्र आत्मा

कुछ मंडलियों में पवित्र आत्मा को बढ़ा चढ़ा कर बोला जाता है। दूसरी और, अन्य मंडलियों में इसकी उपेक्षा की जाती है। प्रभु हमें बाइबलीय मार्ग के बीच में अगुवाई करे।

प्रारंभिक कलीसिया और अंत समय की कलीसिया में तुलना

जब हम प्रारंभिक कलीसिया को वर्तमान कलीसिया से तुलना करते हैं, देख सकते कि प्रारंभिक कलीसिया अवश्य ही आत्मिक लोगों द्वारा बनी होगी। प्रेरित क्रिया की किताब दर्शाता है कि यही कारण था कि उनकी शीघ्र बढ़ती और विकाश हुआ उनका कोई मददगार नहीं था। परन्तु पास पवित्रात्मा था। हमारे पास हमारी मसीही संस्थाओं में उत्तम रूप और प्रचुर मात्रा में सहायक राशियाँ हैं। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि हमारे पास पवित्र आत्मा की घटी है।

याद करें, ए. डब्ल्यू. टोजर ने क्या कहा है :'' यदि आज हमारे कलीसियाओं एवं संस्थाओं से पवित्र आत्मा पर लिया जाता है तो जो कुछ भी करते हैं 95 प्रतिशत बना रहेगा और किसी प्रकार का फर्क ही नहीं दिखाई देगा। यदि प्रारंभिक कलीसियाओं से पवित्र आत्मा उठा लिया जाता, तो 95 प्रतिशत जो कुछ वे करते थे वह रूक जाता और हर एक व्यक्ति फर्क को देख सकता था।''

क्या हमने बिना पवित्र आत्मा के जीना सीख लिया है? क्या आज हमारी मंडलियां या संस्थाएं मुख्यतः शारीरिक या सांसारिक मसीहियों से बनी हुई हैं?

क्या इसी के फलस्वरूप, आज हमारी कलीसियाएं शक्तिहीन हो गई हैं और अधिकांश तौर से हमारे लिए कोई विजय नहीं है? क्या एक शारीरिक या सांसारिक व्यवहार के चलते सच में अनेक स्थानों में मंडली की वृद्धि कमजोर हो गई है? क्या अनेक गंभीर समस्याएं अनेक कलीसियाओं में शारीरिक या सांसारिक व्यवहार के चलते होती है? हम यह देख पायेंगे कि हमारी व्यक्तिगत और केन्द्रिय समस्याएं अधिक से अधिक होती है वे पवित्र आत्मा की कमी के कारण से ही होती है। व्यक्तिगत क्षेत्र में हम इसे परमश्वेर की सहायता से जल्दी से बदल सकते हैं।

निम्नलिखित बातें जो पास्टरों के लिए बनाई गई हैं, स्वभाविक तौर पर हर एक व्यक्ति के लिए लागू हो सकता हैं

जोहानेस मेगर कहते हैं : ''पौलुस आत्मिक और शारीरिक मसीहियों के बीच में अन्तर बतलाता है उनके बीच जिनमें पवित्र आत्मा भरा है और जिनके जीवन में पवित्र आत्मा के लिए कोई जगह नहीं है : जो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया है परन्तु उनमें पवित्र आत्मा भरा नहीं है।

एक पास्टर के लिए इसका अर्थ होगा कि मुझे धर्म प्रचार के काम के लिए प्रशिक्षित किया गया है और मुझे बाइबलीय भाषा में अच्छी पकड़ है और टीका टिप्पणी करने में योग्यता रखता हूँ, मैं बड़ी बाइबलीय सच्चाईयों को जानता हूं और उन्हें समझता हूँ, और सदियों पूर्व के धर्म मत एवं सिद्धान्तों को दृढ़तापूर्वक मानता हूँ उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ मैं धार्मिक उपदेश बहुत अच्छी तरह दे सकता हूँ इसके बावजूद भी मेरे सारे ज्ञानों और वरदानों के होते हुए भी मैं पवित्र आत्मा मुझ में नहीं हो सकता है। किताबें, शिक्षा, अच्छे तकनीकी औजार यहां तक की मरे अन्दर आकर्षक एवं मोहक व्यक्तित्व है आत्मा से भरपूर जीवन की कमी में ये सारी चीजें पूरक नहीं हो सकते।

उपदेश देना, प्रचार करना, सार्वजनिक स्थानों में प्रार्थना करना, कलीसिया के जीवन को संगठित करना, धर्मप्रचार, सभाओं के कार्य कर्मों की तैयारी करने, पास्टरों का परामर्श देना, ये सारी बातें सीखी जा सकती हैं और बिना पवित्र आत्मा के अभ्यास करने के द्वारा किया जा सकता है। एजेन जी ह्वाईट इसे खतरना कहती है जो संभवतः ऐसे हो सकते हैं ''क्यों परमेश्वर की आत्मा को इतना कम प्रगट किया गया है, इसका कारण है कि पास्टर लोग बिना पवित्र आत्मा के काम करना सीख लेते हैं। एलेज जी ह्वाईट, टेस्टिमोनिज फॉर द चर्च, वोल 1 (1868) पृ. 384.4

जोहाबनेस मेगर अनेक वर्षों के एक पास्टर, धर्म प्रचारक और एक प्रोफेसर थे, धर्म विज्ञान के विषय में वह सेवकाई विभाग में एक सचिव के रूप में काम करते थे जो यूरो आफ्रिकन डिविजन में अभी है। वह अभी अवकाश प्राप्त कर लिया है और जर्मनी के फ्रीडेसाव में रहता है।

निष्कर्ष : शारीरिक होने का अर्थ है सामान्य मानव शक्ति और योग्यताओं में जीना बिना पवित्रात्मा के या अपर्याप्त मात्रा में पवित्र आत्मा का होना।

शारीरिक या सांसारिक मसीहियत में प्रधान अड़चने

बाइबल के बड़ी नीति है– अपने शत्रुओं को प्रेम करना, हर बात के लिए लोगों को क्षमा करना, पापों पर विजय प्राप्त करना आदि। ये सब सिर्फ पवित्र आत्मा के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है, मानव शक्ति के द्वारा नहीं। यह हमें यही दिखलाता है कि शारीरिक या सांसारिक मसीहियत में प्रधान समस्या है एक ऐसा जीवन हो पूरी तरह से मानव शक्ति पर ही आधारित होता है। सिर्फ अपनी ही सामर्थ के द्वारा हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं कर सकते हैं। चलिए इस विषय पर कुछ बाइबल पदस्थलों को पढ़ें।

यशायाह 64:6 :'' हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं।''

यिर्मयाह 13:23 :'' क्या हबशी अपना चमड़ा या चीता अपने धब्बे बदल सकता है?

यहेजकेल 36:26–27 ''मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा। मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर दे कर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे, और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे।''

रोमियों 8:7 ''क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर के व्यवस्था के अधिन है और न हो सकता है।''

एलेन ह्वाईट स्पष्ट शब्दों में और सही कही है :

''जो अपने खुद के कामों के द्वारा स्वर्ग पहुंचना चाहता है, व्यवस्था को पालन करते हैं, जो एक असंभव कार्य को करने का प्रयास करते हैं। मनुष्य बिना आज्ञा पालन का बचाया नहीं जा सकता है, परन्तु उसका काम खुद के लिए न हों, उसमें काम करेगा जो उसकी इच्छा और के अनुसार भलाई के लिए करें।

मैं ऐसा सोचता हूं ये पदस्थलें पर्याप्त मात्रा में दिखलाते हैं कि हम परमेश्वर की इच्छा को पवित्र आत्मा के बिना करने की योग्यता नहीं रखते थे। हमारी विशेष चिन्ता यह है कि हमें हमेशा परमेश्वर की इच्छा के लिए निर्णय लेने की आवश्याकता होती है और परमेश्वर ही हमें सामर्थ देता है उस काम को करने के लिए। इस सिद्धान्त की समझ कि विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और फिर भी यहां पर हम इसे विस्तारपूर्वक विचार नहीं कर सकते हैं।

क्या हो सकता है, जब कोई कुछ करने का प्रयास करता है जो उनकी शक्ति से बाहर होती है?

क्या होता है जब मैं प्रायः यह अनुभव करता हूँ कि मै इसे कर नहीं सकूँगा! अभी मैं फिर असफल हो गया हूँ। मैं सोचता हूँ कि कुछ हद तक हम निराशा का अनुभव करने लगते हैं।

मैं सोचता हूं यह समस्या व्यस्क लोगों की तुलना में युवा पीढ़ी में अत्यधिक होती है। उम्र दार लोगों का कर्त्तव्य पालन का ज्ञान युवाओं से स्कूल और व्यवसायों में अधिक मजबूत होता है। इस तरह वे युवाओं के समान आसानी से निराशा से परेशान नहीं होते जैसे युवा वर्ग के लोग होते हैं। परन्तु समस्या युवा और उम्रदार लोगों दोनों में समान रूप से उपस्थित रहती है। सिर्फ युवा वर्ग के लोग इसे अधिक स्पष्ट तौर से देखते हैं। अपनी शक्ति से विश्वास के मार्ग में चलना ही सबो पहला समस्या होती है हर एक शारीरिक एवं सांसारिक मसीही के लिए, चाहे वह इसे जानता हो या नहीं।

कुछ भी हो, क्या हम इस समस्या का हल निकालने का प्रयास करते हैं? हो सकता है कोई व्यक्ति परमेश्वर से मदद प्राप्त करने और निर्णय लेने के लिए अधिक गहराई से प्रार्थना कर सकता है। पर दूसरा व्यक्ति सोच सकता है कि हमें इतना अधिक संकुचित दिमाग का नहीं होना चाहिए। अब वह चीजों को और अधिक सावधनीपूर्वक लेता है और स्वतंत्रता का अनुभव करता है। फिर भी और दुसरा व्यक्ति पूरी रीति से अपने विश्वास को त्याग देता हे और शायद यह अच्छा महसुस करता हो। इसमें सिर्फ एक ही समय है कि इन समस्याओं का समाधान झूठी होती है, क्योंकि देर या सबेर इसका प्रतिफल उन्हें मिलेगा।

सही रास्ता यही है कि परमेश्वर की व्यवस्थाओ को गंभीरता से लें, क्योंकि उन्हें प्रेम से हमारे भलाई के लिए ही दिया गया है। फिर भी हमें इसके लिए परमेश्वर की सामर्थ की आवश्यकता होती है। सही मार्ग तो यही है कि हम पवित्र आत्मा के सामर्थ में आनन्द, प्रेरणा, सामर्थ, फलदायी और विजयी जीवन बिताएं।

केन्द्रीय समस्या

मैं सोचता हूँ, हमने इसे पहचान लिया है कि यह अधिकतर शारीरिक एवं सांसारिक मसीहियतों से संबंधित है। क्या यह स्पष्ट नहीं हो रहा है कि यीशु क्यों किसी तरह का गुनगुनापन पसन्द नहीं करता है? उनमें इस तरह का जीवन नहीं है जैसा ईश्वर हमें देना चाहता है

और वे बुरा नमूना बनते हैं जौभि अधिकतर लोग इसे जानते भी नहीं। हम जितना सोचते हैं उससे कहीं अधिक यह समस्या गंभीर है। आधे हृदय वाले मसीही धर्म निन्दक एवं नास्तिक लोगों से भी बुरे है; क्योंकि उनकी छल की बातें और उनकी असमर्पित स्थिति अनेक लोगों को सत्य से भटका देती है।

अर्थर जी. दानिएल्स की पुस्तक में ख्रीस्त हमारी धार्मिकता में हम इस तरह पढ़ते हैं:

नियमनिष्ठता अर्थात दिखावटी चाल एक ऐसी वस्तु है जो सबसे अधिक धोखा देने वाली और विनाशकारी है। यह एक छुपा हुआ पहाड़ का ढलान है, जिसमें सदियों से कलीसिया को अनेक बार गिर जाने का खतरा था। पौलुस ने हमें चेतावनी दिया है कि इस तरह की धाम्रिकता के बारे 2 तीमुथियुस 3:5 लिखा है वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर इसकी शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना। ईश्वर के सामर्थ के बिना, और पवित्र आत्मा के बिना होना अन्तिम दिनों का एक खतरा है, और हमें सतर्क करता है कि हमें इस आरामदेह स्वयं को धोखा देने के स्वाभाव में न फसें।

शारीरिक या शारीरिक मसीही की ओर ले जाने वाली संभावित कारण

निम्नलिखित बातों या कारणों जो शारीरिक या सांसारिक मसीहियत की ओर ले जा सकती है।

1. अज्ञानता – हमने अपने आप को जीवन के विषय पर पवित्र आत्मा में पर्याप्त समर्पण नहीं लिए हैं, या हमने उस कुंजी को नहीं पाया है जिसे अभ्यास किए जा सके।

2. अविश्वास या थोड़ा विश्वास – पवित्र आत्मा से भर जाना यीशु हमारे जीवन को सम्पूर्ण रुप से समर्पण करने के पहले आता है। यह भी शायद आानता के कारण हो सकता है या चुंकि हमलोग डरते हैं कि सायद प्रभु हमें नहीं चाहते। इसका अर्थ हुआ हम परमेश्वर पर उसके प्रेम और बुद्धि पर पर्याप्त भरोसा नहीं करते हैं।

3. भ्रांतिपूर्ण विचार– एक व्यक्ति सोच सकता है कि वे पवित्र आत्मा से भरपूर हैं, जौभी कि वे वास्तविक तौर से नहीं हैं या पर्यापत नहीं हैं। ऐसा लगता है यही सबसे अधिक होने वाला समस्या है।

4. अत्यधिक व्यस्त होना– लोग काम काज के बोझ से इतने दबे हुए हैं कि वे यह सोचने लगते हैं उनके पास कोई समय नहीं है या पर्याप्त नहीं है कि वे ख्रीस्त के साथ संबंध बनाए रखें। या वे समय लेते हैं; पर कोई परमेश्वर के साथ अपने को जोड़ने में कोई प्रगति नहीं है।

5. छिपे हुए पाप– सायद संशोधन की कमी– यह उस तरह है जैसे बिजली का शॉट सर्किट होता है, इसका अर्थ हुआ परमेश्वर के सामर्थ के साथ कोई लगाव नहीं।

6. उनकी अपनी ही भावनाओं के अनुसार काम– परमेश्वर का वचन कहता है :धर्मी जन विश्वास से ही जीते हैं। क्या मैं परमेश्वर पर विश्वास करते हुए निर्णय लेता हूँ या अपनी भावना के अनुसार?

जब कि मैं पहले से ही पवित्रात्मा से परिपूर्ण हूँ तो मैं फिर क्यों पवित्रआत्मा की मांग करुँ?

पवित्र आत्मा इसलिए दिया गया था ताकि वह हमारे अन्दर रहे। दूसरी ओर हमें विश्वास के द्वारा पवित्र आत्मा की मांग निरंतर करना चाहिए। इस प्रत्यक्ष विरोध को हम कैसे हल करेंगे?

एक तरफः

यीशु ने यूहन्ना 14:19 में कहा है वह तुम्हारे साथ रहता है और वह तुम में होगा। प्रेरित किया 2:38 कहता हैःमन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों के क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले। तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।

दूसरी ओर

जब यीशु ने प्रार्थना के बारे में सिखाया, उसने लूका 11: 9–13 में कहा मांगो तो तुम्हें दिया जायगा... जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा को क्यों न देगा? इफिसियों 5:18 इस तरह कहता हैः आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।, दोनों मामले में मूल यूनानी भाषा में यह एक निरंतर निवेदन करना होता है।

समाधान

एलेन जी ह्वाइट कहती हैःफिर भी पवित्र आत्मा का काम हमेशा लिखित वचन के अनुकूल होता है। जैसे यह प्रकृति में होता है, उसी तरह आत्मिक जगत में भी होता है। प्रकृति के प्राणियों की सुरक्षा परमेश्वर की सामर्थ द्वारा हर क्षण होता है; फिर भी यह कोई सीधी आश्चर्यकर्म के द्वारा किया नहीं जाता, परन्तु वरदानों या आशीर्वादों के व्यवहार से होता है। इस तरह से आत्मिक जीवन कायम रहता है उन साधनों के द्वारा जिन्हें परमेश्वर दिया है। यदि यीशु के पीछे चलने वाले सिद्ध मनुष्य के रुप में बढ़ते हैं; आर मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाए इफिसियों 4:13, उसे जीवन की रोटी खाना और उद्धार का जल पीना जरुरी है।उसे आशा देखना प्रार्थना करना और काम करना और सभी बातों में परमेश्वर की शिक्षा उसके वचन पर ध्यान देना आवश्यक है।

हम अपने अपने जन्म में जीवन प्राप्त करते हैं। इस जीवन को बनाए रखने के लिए हमें भोजन खाना पड़ता है, पानी पीना पड़ता और व्यायाम करना पड़ता है। यह हमारे आत्मिक जीवन में भी ठीक वैसा ही है। हमारे बप्तिस्मा में पानी और आत्मा द्वारा हमें पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ एवं हमारा नया जन्म हुआ इस तरह से यह आत्मिक जीवन हम में पूरे जीवन काल तक बना रहता है।इस आत्मिक जीवन को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि आत्मिक साधनों का उपयोग किया जाए जिन्हें परमेश्वर ने उपलब्ध कराया हैः वे हैं पवित्र आत्मा, परमेश्वर के वचन, प्रार्थना, और हमारी गवाही आदि।

यीशु ने यूहन्ना 15:4 में कहा है मुझ में बने रहो और पवित्र आत्मा को निरंतर प्राप्त करते रहो और उसकी सेवकाई के लिए अपने जीवन को निरंतर समर्पित करते रहो।

इसी लिए हमें आवश्यकता है कि हम प्रतिदिन विश्वास के द्वारा पवित्र आत्मा की मांग करते रहें और अपने आप को रोज सुबह जो कुछ हमारे पास है उसके साथ समर्पण करें।

मैं कहां खड़ा हूँ?

इस समय हमारे लिए सबसे अधिक महत्व की बात है यह तय करना है कि मैं किस दल में हूँ। मैं कहां खड़ा हूँ?

जब मेरी प्यारी माँ 20 वर्ष की थी एक आदमी के सवाल का जवाब यह कहते हुए दी कि वह विश्वास में कोई दिलचस्पी (रुचि) नहीं लेती थी। तब वह आदमी उत्तर दियाः और यदि तू आज ही रात मर जाए तो? यह बात उसके दिल में गड़ गई। परन्तु यह उसका सकारात्मक प्रभाव हुआ। यह यीशु और उसकी कलीसिया के लिए निर्णय लेने में उसकी अगुवाई किया। सायद यह सवाल आप को भी मदद कर सकेः

हम इतने भारी नींद में क्यों पड़े हैं?

ख्रीस्त के सिपाही इतने भारी नींद में और उदासीनता में क्यों पड़े हैं? क्योंकि उनका वास्तविक संबंध ख्रीस्त के साथ बहुत थोड़ा है; क्योंकि उनमें पवित्र आत्मा की भारी कमी है। एलेन जी. ह्वाइट, द ग्रेट कन्टोवर्सी, पृ. 307.3

एक बड़ा खतरा

मैं यहां जीवन की अनिश्चितता और अल्पता में वास नहीं करुंगी; परन्तु एक भयानक खतरा है– एक ऐसा खतरा जो पर्याप्त तौर से समझा नहीं गया है– वह है परमेश्वर के पवित्र आत्मा की निवेदन की आवाज को सुनने में देरी करने में, और पाप में जीने का चुनाव करने में। पाप का केन्द्र बिन्दु या मुख्य भाग क्या है? क्योंकि वे मुझपर विश्वास नहीं करते यूहन्ना 16:9 हम यीशु को सच में विश्वास करते और उस पर भरोसा रखते उसके चिन्ह हैं हम अपने आप को पूरी तरह उसे समर्पित करें; और हर चीज में हमारी इच्छा हो उसको अनुसरण करने का। एलेन जी. ह्वाइट, स्लेकटेड मेसेजेस वोल 1 पृ. 109.2

प्रश्नें और अधिक प्रश्नें

महत्वपूर्ण प्रश्न है आप पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं कि नहीं। कब एक आदमी पवित्र आत्मापूर्ण होता है? इसके लिए आरम्भिक परिणाम क्या है? जब आप यह मानकर चलते हैं कि आप पवित्रआत्मा से पूर्ण हैं तब क्या होता है?

चिन्ह या संकेतों के लिए कृतज्ञ होना

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हम अपने आप को जागृति के विषय पर अधिक चिन्तन कर रहे हैं। मैं सोचता हूँ कि हमारा महान और अद्‌भुत परमेश्वर के पास विशेष कारण है कि वह हमें पवित्रात्मा

द्वारा जागृति के लिए प्रोत्साहन दे रहा है। क्या निम्नलिखित बातें कारण हो सकते हैं?

वह हमारे कमजोरियों को हमसे दूर करना चाहता है और हमारे लौदिकिया से हमें बाहर निकालना चाहता है।

वह हमें यीशु के शीघ्र आगमन के लिए और उसके आने के पहले के विशेष समय के लिए तैयार करना चाहता है।

वह अंतिम महान जागृति को लाना चाहता है प्रकाशितवाक्य 18:1–2 उनके द्वारा जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर है। प्रकाशितवाक्य 12:17

आइए हम उसके लिए भी धन्यवाद दें कि हर एक शारीरिक और सांसारिक मसीही तुरंत आत्मिक मसीही हो सकते हैं। और हर एक व्यक्ति जो पवित्र आत्मा में बने रहते हैं वे ख्रीस्त की परिपूर्णता में बढ़ सकते हैं।

नयी प्रेरणा उद्देश्य और आन्तरिक आनन्द

गिरजा आराधनालय में एक बहन ने मुझे स्टेप्स टू पर्सनल रिवाइवल नामक पुस्तिका दिया। मैं इस पुस्तिका के सूचीपत्र को देखकर अति व्यग्र हुआ। मैं बहुत दिनों से कुछ इस तरह की चीज ढूंढ़ रहा था और अन्त में मैंने इसे पायगा। तब मैं अपनी आत्मिक जीवन को संवारना आरम्भ किया, और तब मैंने अनुभव किया कि मुझे कुछ करना होगाः मैंने अपने आप को यीशु के लिए पूरी तरह समर्पित कर दिया। उसी समय से प्रभु ने मुझे बड़े सबेरे उठा दिया और मुझे, मेरे व्यकितगत आराधना के लिए समय प्रदान किया। प्रत्येक दिन मैं 40 दिन नामक किताब से एक अध्याय पढ़ा करता था। मैं साफ साफ देख पाया कि यीशु के साथ मेरा संबंध अधिक गहरा और मजबूत होता गया। यह अधिक गहरा और निकटता का संबंध बनता गया। पवित्र आत्मा मुझ पर काम कर रहा था। 40 दिन पुस्तक पढ़ने के बाद में दूसरा पुस्तक 40 दिन पुस्तक का दूसरा वोल्युम भी पढ़ लिया। उसके बाद से मैंने इन दोनों किताबों और चार चार बार पढ़ डालरा। मैं कुछ नहीं कर सकता था, परन्तु प्रतिदिन मैं प्रार्थना करता था, क्योंकि मेरा नया उद्देश्य और आन्तरिक आनन्द बहुत बढ़ गया। इस समय के अर्न्तगत मेरा ऐसा अवसर प्राप्त हुआ कि मैं परमेश्वर के साथ अत्यधिक अनुभव

प्राप्त किया। मैं अपने अनुभव को बांटने का सुअवसर देखता रहा। यीशु के साथ नजदीक का संबंध अनेक चीजों को महत्वहीन बना देता है और अनावश्यक चिंताओं का समाधान हो जाता है। मैं ऐसी आशा करता हूं और प्रार्थना करता हूँ कि अनेक व्यक्ति इस अभिग्यता को प्राप्त कर सकेगे जैसे मैंने प्राप्त किया था।

अध्याय 3

हमारी समस्याएं

क्या वे समाधान के योग्य हैं– कैसे

हम कैसे एक आनंदित जीवन और बलशाली मसीही के रुप में बढ़ सकते हैं?

पवित्र आत्मा कैसे हमारे जीवन को परिपूर्ण कर सकता है?

यीशु ने कहाः

मुझ में बने रहो, और मैं तुम में यूहन्ना 15:4 ख्रीस्त में बने रहा का अर्थ निरंतर उसकी आत्मा को प्राप्त करते रहना, एक सम्पूर्ण समर्पित जीवन उसकी सेवकाई के लिए।

हमारे केन्द्रिय समस्या के ये दो भाग के ईश्वराय समाधान हैं, साथ ही साथ यह मसीही जीवन के लिए एक प्रसन्नता का मार्ग है। क्यों? इन बातों पर यीशु ने टिप्पनी किया हैः मैंने ये बातें तुमसे इसलिए कही है कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। यूहन्ना 15:11 इन दो कदमों के द्वारा ख्रीस्त में हम निवास करते हैं, और यही सिद्ध प्रसन्नता का मार्ग है। कुलुसियों 1:7 में महिमा की दौलत के बारे बोल रहा है। तुम में ख्रीस्त । क्या यह अद्भुत नहीं है कि यीशु इस दृष्टोत में पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा दाखलता के साथ जोड़ता है यूहन्ना 14 अध्याय और पवित्र के काम को यूहन्ना 16 अध्याय में

खास बिन्दु तो यह है कि हम जैसे प्रतिदिन अपने आप को हर वस्तु के साथ जो हमारे पास है परमेश्वर को अर्पित करते हैं, और हम प्रतिदिन मांगते और विश्वास के द्वारा पवित्र आत्मा का उंडेले जाने से प्राप्त करते हैं।

अपने आप को हमें यीशु के लिए क्यों समर्पण की आवश्यकता है?

लूका 9:23 में यीशु ने कहा है: यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।

यीशु ने कहा शिष्य होना रोजाना का काम है। अपने आप को इन्कार करने का अर्थ है मेरे जीवन में यीशु को नियंत्रण करने देना। क्रूस ढोने को यह अर्थ नहीं कि हमें प्रतिदिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। यहां इसका अर्थः प्रतिदिन हमारे घमंड का इन्कार करना और अपने आप को प्रसन्नता और अपनी इच्छा से यीशु को सौंप देना– जैसे पौलुस ने अपने आप के विषय में कहा है: मैं प्रतिदिन। यीशु के दिनों में जब कोई क्रूस ढोता था, तो उसका अर्थ हाता था उसे मृत्यु की सजा दी गई है और वह घात करने के स्थान पर जा रहा है। इसलिए इसका भी अर्थ होता है कि कठिनाइयों को स्वीकार करना जो यीशु के पीछे चलने से उत्पन्न होता है। हम जन्म के दिन शारीरिक जीवन को प्राप्त करते हैं। हमारे जीवन को कायम रखने के लिए शक्ति और स्वास्थ्य की आवश्यकता होती है इसके लिए साधारणतः हम प्रतिदिन भोजन करते हैं। हम उस समय अपना आत्मिक जीवन प्राप्त करते हैं जब हम फिर से जन्म लेते हैं। अपने आत्मिक जीवन को मजबूत और स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि अन्दरुनी व्यक्ति को प्रतिदिन देख भल करना है। यदि यह हमारे शारीरिक जीवन में नहीं होता है साथ ही साथ हमारे आत्मिक जीवन में, तो हम कमजोर, बीमार या अन्त में मर भी जाऐंगे। हम अपने भोजन को पहले खाकर जमा नहीं कर सकते उसी प्रकार हम पवित्र आत्मा को जमा करके नहीं रख सकते।

प्रेरित क्रिया के किताब में इस विषय पर मूल्यवान परामर्श दिए गए हैं; जैसे प्राकृतिक जगत में होता है वैसे ही आत्मिक जगत में भी होता है। प्राकृतिक जीवन हर क्षण ईश्वरीय सामर्थ से सुरक्षित रखा जाता है; फिर भी यह आश्चर्यकर्म के द्वारा सीधे नहीं होता है, परन्तु आशीर्वादों को हमारे पहुंच के अन्तर्गत रखने के द्वारा ही होता है। इसी तरह आत्मिक जीवन भी कायम रखा जाता है उन साधनों के उपयोग के द्वारा जिन्हें ईश्वर ने दिया है। एलेन जी. ह्वाइट, द एक्टस ऑव द अपोसल्स पृ. 284

डिजायर ऑव एजेस नामक पुस्तक में इस टिप्पनी ने मुझे वास्तव में प्रभावित किया: हमें ख्रीस्त का अनुसरण दिन पगतिदिन करना चाहिए। परमेश्वर कल के लिए सहायता को रख नहीं छोड़ता।

एलेन ह्वाइट ने कहा हैः

यीशु के पीछे चलने के लिए जो बातें जरुरी है उसे सम्पूर्ण हृदय से करना ही मन परिवर्तन का शुरुआत है, और हर दिनइस मन परिवर्तन को दुहराता है। मन परिवर्तन के समय हमारा समर्पण जितना भी पूर्ण रहा हो, यह हमें कुछ भी फायदा नहीं पहुंचा सकता है जब तक कि इसे प्रतिदिन दुहरा कर नया नहीं किया जाए...। अपने आप को परमेश्वर के लिए सुबह में समर्पित करो; इसे आप अपना पहला काम बना लें। आप का प्रार्थना ऐसा हो, हे प्रभु मुझे अपने लिए पूरी तरह स`ले ले। मैं अपनी सारी योजनाओं को तेरे चरण तले डालता हूं। आज मुझे अपनी सेवकाई में लगा लें। मेरे संग तू रह, और मेरे सारे कामों को तुझ में होने दे। यह प्रतिदिन का काम है। हर सुबह अपने आप को उस दिन के लिए परमेश्वर को समर्पित करो। अपनी सारी योजनाओं को उसे सौंप दो, ताकि ये उसकी सुरक्षा में चलाया जा सके। इस तरह से प्रतिदिन आप कह सकते हैं आप अपना जीवन परमेश्वर के हाथ में दे रहे हैं, और इस तरह से आप का जीवन अधिक से अधिक खीस्त के जीवन के समान हो जाएं

मोरिस वेंडेन ने कहा हैः

यदि आप ने दैनिक मन परिवर्तन की आवश्यकता को खोज कर निकाल नही सके हैं, तो यह आप के जीवन में एक बड़ा असफलता होगा। थॉटस फ्रोम द माउण्ट ऑव ब्लेसिंग, पृ.101में यह प्रतिज्ञा दी गई हैः यदि आप परमेश्वर की खोज करेंगे और प्रतिदिन मन फिराएंगे. .. आप की सब कुड़कुड़ाहट शांत हो जायगी, आप की सारी कठिनाइयाँ देर हो जाऐंगी, सभी परेशान करने वाली समस्याएं जो अभी आप के सामने है। सब का समाधान हो जायगा।

यीशु के साथ एक दैनिक नवीनकरण का हमारा समर्पण उतना ही विशेष है जितना हम उसके पास पहली बार आए हैं।

मोरिस वेंडेन आगे कहते हैंः परमेश्वर के साथ दैनिक संबंध कायम रखना हमें स्थायी समर्पण और क्षण प्रतिक्षण उस निर्भर करने की ओर ले जाती है।

हम यह निश्चित हो सकते हैं किः जब हम अपने आप को ज्ञानपूर्वक एवं चेतना के साथ यीशु को हर सुबह समर्पण करते हैं जो वह हमसे कराना चाहता है, क्योंकि उसने कहा हैः मेरे पास आओ...। मती 11:28 और ....। जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूंगा। (यूहन्ना 6:37)

परमेश्वर हमारे लिए बड़े बड़े काम करना चाहता है। हम संख्या के द्वारा विजय प्राप्त नहीं करेंगे, परन्तु यीशु के लिए आत्मा का सम्पूर्ण समर्पण के द्वारा। हमें उसकी सामर्थ में आगे बढ़ना है, इस्राएल के महान परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए...।

बड़ा प्रभाव जो परमेश्वर हमारे द्वारा कर सकता है जब हम अपने आप को पूरी रीति से उसे सौंप देते हैं, इस का विवरण जोन वेसली इस प्रकार देता हैः परमेश्वर एक मनुष्य के साथ अधिक काम कर सकता है, जो अपने आप को परमेश्वर के लिए 100 प्रतिशत समर्पित करता है, परन्तु वह सारी सेना के लोगों से भी नहीं कर सकता है यदि वे सिर्फ 99 प्रतिशत ही परमेश्वर के लिए समर्पित हैं।

एलेन ह्वाइट लिखतीं हैंः

सिर्फ वे ही लोग जो ख्रीस्त के साथ सहयोगी कार्यकर्ता बनेंगे, सिर्फ वे ही लोग जो यह कहेंगे, प्रभु, जो कुछ मेरे पास है, और जो कुछ मैं हूँ सब तेरे ही हैं, ऐसे लोग परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों के रुप में स्वीकार किए जायेंगे। वे सभी जो अपनी आत्मा, शरीर, और प्राण को परमेश्वर के लिए समर्पण करेंगे वे निरन्तर नये शारीरिक और मानसिक शक्ति में बढ़ते जाऐंगे...। पवित्र आत्मा अपनी उच्चतम शक्ति को काम करने के लिए हृदय और मस्तिष्क में डालता है।परमेश्वर का अनुग्रह उनके आन्तरिक शक्तियों की वृद्धि करता और उन्हें विकसित करता है और परमेश्वर की हर एक सिद्धता उनके आत्मा लाभ बचाव के काम में सहायता प्रदान करता है...। और अपने मानव कमजोरियों में होते हुए भी वे सर्वशकितमान के कामों को करने के योग्य बन जाते हैं।

एक व्यक्ति को क्यों प्रतिदिन आत्मा का नया बप्तिस्मा के लिए प्रार्थना करना चाहिए?

प्रार्थना को पवि़त्रआत्मा से भरा होना चाहिए जो यीशु के लिए निवेदन होता है यह कहने के लिए कि मेरे द्वारा। क्योंकि वह पवित्र आत्मा के द्वारा मुझ में वास करता है। परन्तु प्रतिदिन क्यों?

एलेन जी ह्वाइट अपनी पुस्तक द एक्टस ऑव द अपोसल्स में ऐसा लिखी हैः एक समर्पित कार्यकर्ता के लिए एक अद्भुत आश्वासन है, इस ज्ञान में कि ख्रीस्त भी इस धरती के अपने जीवन में अपने स्वर्गिक पिता के प्रतिदिन ताजा अनुग्रह की आपूर्ति के लिए प्रार्थना करता था। उसका अपना ही उदाहरण एक आश्वासन है कि परमेश्वर के विश्वास में सच्चे मन से प्रार्थना करना– विश्वास जो परमेश्वर की

ओर ले जाने वाला संपूर्ण समर्पण– ही मनुष्यों को पवित्र आत्मा की सहायता प्राप्त होगी पाप के विरुद्ध युद्ध में।

यदि वह यीशु के लिए एक दैनिक आवश्यकता थी तब यह हमारे लिए कितना अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है।

2 कुरिन्थियों 4:16 में एक विशेष बात लिखी हुई है: ...हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन पगतिदिन नया होता जाता है। हमारी भीतरी मनुष्यत्व को प्रतिदिन देखभाल की जरुरत है। यह दैनिक नयापन होना किस रीति होता है? इफिसियों3:16–17, 19 के अनुसार यह पवित्र आत्मा द्वारा होता है; कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ। ताकि मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेंव डालकर, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।

एक परिणाम के समान

नियम के अनुसार पवित्र आत्मा के दैनिक नवीन कारण के लिए प्रार्थना करना आवश्यक है।

परिणाम के कारण ख्रीस्त हम में वास करता है।

वह हमें सामर्थ देता है अपनी महिमा के धन के अनुसार हमारी भीतरी मनुष्यत्व के लिए। परमेश्वर की शक्ति एक अलौकिक शक्ति है।

इस तरह परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में डाला जाता है।

और यह जीवन एक मार्ग है। तुम उसमें भरपूर हो गए हो। यूहन्ना 10:10; कुलुसियों 2:10 उसके द्वारा प्रभु ने दूसरे स्थान में इस तरह कहा है : जो लोग पवित्र शास्त्र बाइबल के द्वारा प्रभावित हुए हैं जो परमेश्वर का वचन है, और वे उसकी शिक्षाओं के अनुसार चलते हैं, उन्हें प्रतिदिन सीखना है, प्रतिदिन आत्मिक उत्साह और शक्ति प्राप्त करना है जिसे हर एक सच्चे विश्वासी को पवित्र आत्मा का दान के रुप में दिया। इसके अतिरिक्त उसने यह भी कहा कि हमें ख्रीस्त को प्रतिदिन अनुसरण करना है। परमेश्वर कल के लिए मदद रख नहीं छोड़ता है।

और एक अन्य स्थान में: हमारी प्रगति या उन्नति के लिए ईश्वरीय साधन का लगाव होना हर क्षण जरुरी है। हम में परमेश्वर की आत्मा का एक परिमान हो सकता है, परन्तु प्रार्थना और विश्वास के द्वारा हमें निरंतर अधिक आत्मा के लिए प्रयास करते रहना चाहिए।

मैंने एक आश्चर्यजनक उल्लेख को भी प्राप्त किया हैः आपको हर दिन प्रेम का बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, प्रेरितों के दिनों में उन्हें सब को एक कर दिया।

रोमियो 5:5 हमें यह सिखलाता है कि परमेश्वर का प्रेम पवित्र आत्मा द्वारा हमारे हृदयों में उंडेला गया है। इसी बात को हम इफिसियों 3:17 में भी पाते हैं। पवित्र आत्मा द्वारा दैनिक बप्तिस्मा पवित्र आत्मा से भरा जाना उसी समय में होता है जब वे प्रेम के साथ दैनिक बप्तिस्मा लेते है। इसके अतिरिक्त गलतियों 5:16 में कहता है इसके परिणाम स्वरुप पाप की शक्ति तोड़ी गई।

व्यक्तिगत आराधना की विशेषता

व्यक्तिगत आराधना की क्या विशेषता है, यदि यह इतना विशेष है तो मैं हर दिन यीशु को समर्पित करुंगा और पवित्र आत्मा को भर देने के लिए कहुंगा।

दैनिक आराधना और सब्बत मानना आत्मिक जीवन का आधारशील (नींव) है।

हमने पहले ही बाइबल के पदों एवं विभिन्न आलेखों को पढ़ा है। वे हमें दिखलाते हैं कि अन्दरुनी व्यक्ति दिन प्रतिदिन नया किया जाता है। यह साफ साफ प्रकाश डालता है हमारे दैनिक व्यक्तिगत आराधना के महत्व पर।

पवित्र स्थान में आराधना की सेवकाई का सम्पूर्ण आधार था सुबह और शाम की होम बलि गिनती 28:4,10 होम बलि का महत्व क्या था? होम बलि दर्शाता था प्रभु के लिए पापी के सम्पूर्ण आत्म समर्पण को। यहां पर व्यक्ति अपने लिए कुछ भी रख नहीं छोड़ता था, परन्तु सब कुछ परमेश्वर के लिए ही होता था।

जो समय सुबह और शाम के बलिदान के लिए निर्धारित किया गया था, और यह समस्त यहूदी राष्ट में आराधना का समय ठहराय गया था। इस परंपरा में मसीहियों का भी एक नमूना है वह है सुबह और शाम का प्रार्थना। परमेश्वर सिर्फ विधियों के चक्र की निन्दा करता है जहां आराधना की आत्मा मौजूद न हो, वह उन्हें बड़े प्रसन्नता के साथ देखता है जो उसे प्रेम करते हैं और सुबह और शाम अपने किए गए पापों के लिए क्षमा चाहते हैं और अपनी आवश्यक आशीर्वादों को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करते हैं।

क्या आप ने ध्यान दिया है कि दैनिक आराधना सब्बत के साथ जुड़ा हुआ है हमारे आत्मिक जीवन के आधार के रुप में? इसके अलावे, कब यह स्पष्ट करता है कि इसका संबंध हर एक दिन यीशु ख्रीस्त के लिए समर्पण करना जिसे पवित्र आत्मा के द्वारा हम में वास करने के लिए आमंत्रित किया है?

क्या आपने अतिमहत्वपूर्ण आत्मिक सिद्धांतों को अपना बना लिया हैः कि प्रतिदिन हर एक बात में परमेश्वर को पहला स्थान दिया है? यीशु ने पहाड़ी उपदेश में ऐसा कहा हैः इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। (मती 6:33)

परमेश्वर का राज्य अभी है जब ख्रीस्त आपके हृदय में है। इसी कारण से हमें पगतिदिन समर्पण करने की आवश्यकता है और पगतिदिन हमारी आराधना में पवित्र आत्मा की मांग करें। उस समय हमारे लिए धोखा खाने का समय होगा जब हम परमेश्वर के लिए खड़े होते हैं! क्या हमारे पास उद्धार प्रदान करने वाली संबंध ख्रीस्त के साथ है और क्या हम उसी में टिके हुए हैं? पढ़े यूहन्ना 15:1–17 क्या आप अपने विश्वास में और अधिक– और बड़े परिपूर्णता की लालसा नहीं करते?

जो कोई भी थोड़ा या बिल्कुल परमेश्वर के साथ समय नहीं बिताते या सिर्फ अपर्याप्त समय ही आराधना में व्यतीत करते हैं वे सायद सप्ताह में सिर्फ एक या दो दिन ही आराधना के लिए समय देते है।। यह उसी प्रकार है जैसे कोई सप्ताह में एक या दो ही बार भोजन करते हैं। तुलनात्मक दृष्टि से देखे तो : क्या यह एक ठटठे या बेतुका बात नहीं होगी कि आप अपने शरीर को सप्ताह में एक ही बार भोजन देकर बलवान बनना चाहते हैं? इसका अर्थ क्या यह नहीं हो सकता है कि एक मसीही बिना आराधना का एक शारीरिक या सांसारिक मनुष्य नहीं हो जायगा?

ख्रीस्त की धार्मिकता प्राप्त करने के लिए, हमे हर दिन आत्मा के प्रभाव के द्वारा स्वभाव में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है ताकि हम ईश्वरीय स्वभाव को प्राप्त करने वाले लोग हो सकें।

इसका यह भी अर्थ निकल सकता है कि यदि वह इसी स्थिति में रह जाता है तब वह बचाया नहीं गया है। जब हम शारीरिक या सांसारिक मसीही हैं तो हमारी आराधना मात्र एक बाध्यता या कर्तव्य बनकर रह जाती है। जब हम आत्मिक होते हैं तब हमारी आराधना अधिक और अधिक आवश्यक हो जाती है।

वर्षों पहले मैं जिम वासुस लिखित एक पुस्तिका पढ़ा थाः मैं अपराधियों के दल का एक सदस्य था वह एक अपराधी था, जो आगे चलकर मन परिवर्तन किया। वह सम्पूर्ण हृदय से अपने पापों को मान लिया था– अदाहरण के लिए झूठी गवाही देना, चोरी इत्यादि। उसने अदभुत ईश्वरीय हस्तक्षेप का अनुभव किया। इस बात ने मुझे प्रभावित किया। मैंने अपने आप से कहाः मैं अपने हर काम में लगभग बहुत अच्छा कर रहा हूँ, परन्तु मैं उस तरह अभिग्यता प्राप्त नहीं कर रहा हूँ। तब मैंने प्रभु से प्रार्थना कियाः हे स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर, मैं भी अपने सारे ज्ञात पापो को और उन सारे गुप्त एवं अज्ञात पापों के लिए जिन्हें तू अब तक नहीं दिखाया है मानने और पश्चताप करने को तैयार हूँ इसके अतिरिक्त मैं एक घंटा पहले उठना चाहता हूं प्रार्थना करने और बाइबल पढ़ने के लिए। तब मैं देखना चाहता हूँ तू मेरे जीवन में भी हस्तक्षेप करे।

परमेश्वर की बड़ाई हो! उसने मेरे जीवन में हस्तक्षेप किया। इसके बाद, खास करके मेरा सुबह का आराधना जो सब्बत के साथ संबंधित था वह परमेश्वर के साथ मेरे जीवन का आधार हो गया।

दैनिक समर्पण के द्वारा और पवित्र आत्मा के प्रतिदिन भरे जाने के द्वारा हमारा जीवन में लाभदायक परिवर्तन होगा। यह उस समय ऐसा होता है जब हम व्यक्तिगत आराधना करते होते है।।

आत्मा और सच्चाई में आराधना

आइए आराधना के उद्देश्य के बारे में सोचें। मानवता के लिए परमेश्वर का अंतिम संवाद में सृष्टिकर्ता की आराधना के बारे लिखा गया है जो पशु की उपासना के विपरीत है प्रकाशित वाक्य 14:6–12 उपासना का बाहरी चिन्ह है सब्बत सृष्टिकर्ता की उपासना। उपासना का अन्दरुनी स्वभाव को यूहन्ना 4:23–24 में दिखलाया गया हैः परन्तु वह समय आता है, वरण अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्यांकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।

आत्मा से आराधना करना निश्चित रुप से इसका अर्थ शुद्ध अन्तःकरण से आराधना करना, परन्तु इसका अर्थ होता है पवित्र आत्मा से भरा होना। सच्चाई में आराधना करना इसका अर्थ यीशु में सम्पूर्ण

समर्पण के साथ जीना, जो व्यक्तिगत रुप से सच्चाई है। यीशु ने कहा : मैं ही सच्चाई हूँ यूहन्ना 14:6 और इसका अर्थ होता है यीशु का अन्दर में वास करना और परमेश्वर के वचन और निर्देश के अनुसार जीवन बिताना, क्योंकि उसने यह भी कहा हैः तेरा वचन सत्य है। यूहन्ना 17:17 और भजन संहिता 119:142 में ऐसा लिखा हुआ है तेरी व्यवस्था सत्य है। यदि अभी हम में सच्चा आराधना नहीं है, तो क्या हम संकट के समय गिरने के खतरे में नहीं हैं? सभी सांसारिक एवं शारीरिक मसीहियों के लिए यह एक बड़ी समस्या होगी।

मैं सोचता हूँ, हम सभी परमेश्वर की सहायता से उन्नति चाहते हैं, और ाान में आगे बढ़ना चाहते हैं। यह ऐसा हो सकता कि नीचे दिए गए झूठे विश्वास कुछ आगे बढ़ने वालों के लिए अड़चन हो सकते हैं।

बप्तिस्मा और पवित्र आत्मा

कुछ लोग सोचते हैं कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं क्योंकि वे बप्तिस्मा लिए हैं और इस लिए सब कुछ ठीक है और उन्हें और कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। डी. एल मूठी इस पर टिप्पनी किया हैः बहुत से लोग यह सोचते हैं कि वे एक बार पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए तो वे हमेशा के लिए परिपूर्ण हो गए हैं। ऐ मेरे मित्रो, हम सब छिद्रों से भरे पात्र हैं; इसलिए हमारे लिए आवश्यक है कि हमें हमेशा झरने में बने रहना है ताकि हम हमेशा पवित्र आत्मा से भरे रहेंगे।

जोसेफ एच. वार्नर ने कहाः

सभी मामलों में, जहां पर बप्तिस्मा को पवित्र आत्मा के दान के रुप में देखा जात है, वहां पर पश्चताप करने वाला पापी सांसारिक सुरक्षा में शांति प्राप्त कर लेते है।

निश्चित तौर से बप्तिस्मा एक महत्वपूर्ण फैसला है। यह परमेश्वर की इच्छा को दर्शाती है। यह है और भविष्य में भी महत्वपूर्ण बना रहेगा। परन्तु विगत दिनों के घटना की ओर न देखें एक सबूत के रुप में कि हम अभी भी पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं। इसके बदले हम इसे हमें अभी चाहिए और अभी ही अनुभव करना चाहिए कि हम पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं।

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बप्तिस्मा लेने के पहले ही पवित्र आत्मा पा चुके होते हैं– उदाहरण के लिए हम लें कुरनेलियुस और उसके परिवार के लोग या शाउल। कुछ लोग बप्तिस्मा लेने के बाद पवित्र आत्माप्राप्त करते हैं– उदाहरण, सामरी लोग या इफिसुस के 12

व्यक्ति। लेकिन यह बराबर है कि कोई व्यक्ति बप्तिस्मा के के पहले या गप्तिस्मा के बाद पवित्र आत्मा प्राप्त करता हैः इससे क्या होता है कि हम पवित्र आत्मा कुछ समय पहले प्राप्त किए हैं और यह कि उसे अभी भी अपने हृदय में रखे हुए हैं। यह कोई विशेष बात नहीं बीते समय में क्या हुआ था, परन्तु स्थिति आज और अभी कैसा है इस पर निर्भर करता है।

आप कौ मैं पुनः याद दिलाता हूँ हम अपना शारीरिक जीवन अपने जन्म के समय प्राप्त किए हैं। और हमारा जीवन दैनिक भोजन, पानी, व्यायाम, सोना विश्राम आदि पर कायम रहता है, यदि ऐसा नहीं होगा तो हम अधिक दिन तक जीवित नहीं रह पाऐंगे। इसी तरह हमारे आत्मिक जीवन में वही नियम लागू होते हैं जैसे कि शारीरिक जीवन। पवित्र आत्मा के द्वारा हम नया जीवन प्राप्त करते हैं, खास करके जब हम अपने आप को ख्रीस्त के लिए पूरी रीति से समर्पण कर देते है। हमारा आत्मिक जीवन पवित्र आत्मा, प्रार्थना और परमेश्वर के वचन आदि से कायम रखा जा सकता है। एलेन जी. ह्वाइट ने लिखा हैः स्वभाविक जीवन क्षण क्षण ईश्वरीय सामर्थ से सुरक्षित रहता है; फिर भी यह सीधे आश्चर्य कर्म के द्वारा कायम नहीं होता है, परन्तु उन आशीर्वादों के उचित व्यवहार से जिन्हें हमारे पहुंच में रखा गया है। उसी तरह आत्मिक जीवन भी उन साधनों के उपयोग से कायम रह सकता है जिन्हें ईश्वर ने दिया है।

न तो शारीरिक जीवन और न ही आत्मिक जीवन अपने आप स्वयं चलित हम पर कायम रह सकता है। उन साधनों का उपयोग करना आवश्यक है जिन्हें परमेश्वरने हमारे लिए प्रदान किया हैं

इसका अर्थ यह हुआः जब हम फिर से नया जीवन प्राप्त करते हैं पवित्र आत्मा को हम में बने रहने के लिए दिया गया था। परन्तु उसका बना रहना इस बात पर निर्भर करता है कि हम दैनिक साधनों का उपयोग करें, जिससे प्रभु ने हमारे लिए प्रदान किया है। यदि हम इन साधनों का उपयोग नहीं करेंगे तो क्या प्रतिफल की आशा कर सकते हैं?

इन सारे साधनों में सब से अधिक महत्वपूर्ण है पवित्र आत्मा। इसके अतिरिक्त प्रार्थना में अत्यंत महत्वपूर्ण है, और परमेश्वर के साथ संबंध बनाए रखने के लिए उसके वचन के साथ बने रहना है, इसके अलावे उपासना सभावों में हिस्सा लेना और अन्य कार्य क्रमों में।

मैं ऐसा सोचता हूँ कि हम सहमत हो सकते हैं कि यह भी आवश्यक है कि हमे प्रतिदिन भीतरी शकित की भी देखभाल करने की

आवश्यकता है। यदि हम इसे नहीं करते हैं तो हम आत्मा में पछतावा का अनुभव करेंगे। परमेश्वर कल के लिए सहायता को छोड़ नहीं रखता। मैं सोचता हूँ कि यह उचित तौर से स्पष्ट है कि हर दिन अपने को यीशु के लिए समर्पण करना आवश्यक है और यह कि हम प्रतिदिन अपने जीवन में पवित्र आत्मा को आमंत्रित करें।

ये दोनों मामले एक ही उद्देश्य को पूरा करते हैं– वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं; कि हम ख्रीस्त के साथ गहरा संबंध बनाए रखें। समर्पण के द्वारा मैं अपने आप को उसे देता हूँ। मैं उसे अपने हृदय में उसे आमंत्रित करता हूँ। अन्य बाइबल के पदों में 1 यूहन्ना 3:24; यूहनना 14:17, 23 दिखलाते हैं कि यीशु हमारे हृदय में पवित्र आत्मा के द्वारा वास करता हैः अवसर इसी से अर्थात उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है, हम जानते हैं।

पवित्र आत्मा का प्रभाव

जब पवित्र आत्मा मुझ में है, तब वह मुझ में उन कामों को पूरा करता है जिन्हें ख्रीस्त प्राप्त किया। रोमियों 8:2 कहता हैः क्योकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु से स्वतुत्र कर दिया। हम आत्मिक व्यवस्था का वर्णन कर सकते हैं एक ऐसी स्थिति जिसमें पवित्र आत्मा हुदय में काम करता है और समपूर्ण रुप से परमेश्वर के लिए समर्पण करता है। ख्रीस्त जो कुछ भी प्राप्त किया है उसे मेरे जीवन में सिर्फ पवित्र आत्मा ही ला सकता है। एलेन जी. ह्वाइट इसे अच्छी तरह वर्णन करती हैः पवित्र आत्मा को इसलिए दिया जाना था ताकि यह फिर से शक्ति प्रदान करने का साधन हो सके, और इसके बिना ख्रीस्त का बलिदान व्यर्थ हो जा सकता था...। यह पवित्र आत्मा ही जो जगत के उद्धारकर्ता ने जो कुद किया था उसे प्रभावित करता है। यह आत्मा ही है जिसके द्वारा ही विश्वासी व्यक्ति ईश्वरीय स्वभाव को प्राप्त करने वाला हो सकता है...। परमेश्वर की शक्ति उनकी मांग और उनके प्राप्ति के लिए इन्तजार करता है। थोमस ए डेवीस इस प्रक्रिया को इस प्रकार वर्णन करता हैः इसका अर्थ यह है कि ख्रीस्त का लोगों के लिए काम का प्रभावित होना भी पवित्र आत्मा पर निर्भर करता था। जो कुछ भी यीशु ने इस धरती पर किया वह काम पवित्र आत्मा के बिना असफल हो जा सकता था, जैसे गेतसमनी वाटिका में, क्रूस पर, पुनरुत्थान और उसकी स्वर्गीय याजकीय सेवकाई के काम। सायद ख्रीस्त का काम अधिक उपयोगी नहीं हो सकता था जैसे जगत के कुछ बड़े बड़े धर्मों या नैतिक अगुवों के समान हो जाता। ख्रीस्त इन अगुवों से अत्यधिक कामयाबी और सफल था, वह मानवता को सिर्फ अपने नमूने और शिक्षाओं के द्वारा बचा नहीं

सकता था। लोगों को बदल डालने के लिए यह आवश्यक था कि उनके बीच में काम करें। और यह काम पवित्र आत्मा के द्वारा किया जाता है, जिसे लोगों के हृदय में काम करने के लिए भेजा जाता है, जिसे यीशु ने संभव बनाया था।

क्या सिर्फ यही एक मात्र पर्यापत कारण है यह देखने के लिए कि आप पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं?

जब परमेश्वर की आत्मा हृदय को अपने नियंत्रण में कर लेता है, यह जीवन को बदल डालता है। पापमय विचार त्याग दिए जाते हैं, दुष्टता के कामों को छोड़ दिया जाता है, क्रोध, डाह और झगड़ा के स्थान में प्रेम, नम्रता और शांति स्थान ले लेती हैं शोक के स्थान को प्रसन्नता ले लेता है, और चेहरे पर स्वर्गीय ज्योति की झलक दिखाई देती है।

पवित्र आत्मा से भरे जीवन से अनेक अन्य उपयोगी प्रतिफल निकालते हैं, लेकिन कुछ बड़े बड़े कमियां भी है। और उसके बिना बड़ी बड़ी हानियां भी होती हैं। पवित्र आत्मा के साथ जीवन और बिना पवित्रता के जीवन के बीच में के फर्क और अधिक विस्तार के साथ अध्याय 4 में देखा जाएगा।

- क्या मैं पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हूँ?
- पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के बारे कृप्या अपने आप से सवाल पूछें

क्या कोई देखने लायक पवित्र आत्मा का प्रभाव मेरे जीवन में है? उदाहरणः क्या वह यीशु को आप के लिए सच्चा और महान बनाया है? (यूहन्ना 15:16)

क्या मैं पवित्र आत्मा के आन्तरिक आवाज को सुनना और समझना शुरु किया है? क्या वह मुझे जीवन के लिए बड़े और छोटे निर्णय लेने में मेरी अगुवाई कर सकता है? (रोमियों 8:18)

क्या मेरे अन्दर एक नये किस्म का प्रेम मेरे सहकर्मियों के लिए जाग उठा है? क्या पवित्र आत्मा मुझे लोगों के प्रति मेरे हृदय में कोमल हमदर्दी और लोगों के प्रति गहरी चिन्ता प्रदान किया है, जिन्हें मैं सामसन्य तौर से अपना मित्र के रुप में चुनाव नहीं कर सकता हूँ? (गलतियों 5:22, याकूब 2:8–9)

क्या मैं बार बार ऐसी अनभिज्ञता का अनुभव करता हूँ कि मैं अपने पड़ोसियों के साथ कैसा व्यवहार करुं? क्या वह मुझे किसी व्यक्ति के हृदय तक पहूंचाने के लिए उचित शब्द प्रदान करता है, जिनके पास क्लेश और चिन्ताएं हैं?

क्या पवित्र आत्मा मुझे यीशु के बारे लोगों को बतलाने और उन्हें उनके पास लाने के लिए शक्ति देता है?

क्या मैं अनुभव करता हूँ कि वह मेरे प्रार्थनापूर्ण जीवन में कैसे मेरी मदद करता है और परमेश्वर के प्रति मेरे हृदय में गहरी अनुभूति पैदा करके मेरी मदद करता है?

जब हम इन प्रश्नों के बारे विचार करते हैं, हम देख सकते हैं हमें पवित्र आत्मा में कितना अधिक बढ़ने की आवश्यकता है, ताकि हम उसे अच्छी तरह से पहचानने और उससे अधिक प्रेम करें।

एक भाई ने लिखा हैः मेरे पिता और मुझ में मेल हो गया है। स्टेप्स टू पर्सनल रिवाइवल और 40 दिन की पुस्तिका भाग –1 और भाग–2 को अध्ययन करने के बाद, मुझे अद्‌भुत अनुभव हुआ पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के संबंध में। मेरे लिए यह खास कर उत्तेजनापूर्ण अनुभव था कि किस तरह पवित्र आत्मा काम करता है और मेरे जीवन के हर हिस्से में वह काम करना चाहता है।

बाप और बेटे के बीच मेल

मेरे पिता के साथ मेरा संबंध हमेशा ही जटिल रहता था। मेरे बचपन और जवानी के समय से ही मेरी इच्छा और प्रार्थना यही था कि मैं अपने पिता के साथ अच्छा संबंध रखूँ। परन्तु धीरे धीरे यह संबंध खराब होता गया। और छः सात वर्ष व्यतीत हो गए। परमेश्वर ने मेरे हृदय के बड़े खालीपन को भर दिया। जब हम पवित्र आत्मा के बारे में पढ़ रहे थे और उसके लिए प्रार्थना कर रहे थे मेरी पत्नी और मैं परमेश्वर के साथ अनेक बड़े बड़े अभिज्ञता प्राप्त किए। हमने अपने परिवार के लिए प्रार्थना किया और विशेष करके मेरे पिता के लिए। इस समय के दरमियान मैंने अपने पिता को प्रेम करने के लिए नई शक्ति प्राप्त किया। मैं इस योग्य हो गया था कि मैं अपने पिता को क्षमा कर सकता था उन सारे बातों के लिए जो हमारे संबंध में मेरे बचपन से अच्छी नहीं हुई थी। अब मेरा पिता और मैं एक दूसरे के मित्र हैं। अब वह भी अधिक आत्मिक होने लगा और अब वह दूसरों का परमेश्वर के

बारे में बतलाना शुरु कर दिया है। अब दो वर्ष बीत गए हैं और मेरे पिता के साथ मेरा संबंध बहुत अच्छा है। मैं परमेश्वर को इस अभिज्ञता के लिए धन्यवाद देता हूँ। पहले मैं अपने को शक्तिहीन और अकेला देख पाता था। परन्तु जब से मैं प्रतिदिन पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करना शुरु किया, मैं एक नया और परमेश्वर के साथ अद्‌भुत तरह का अनुभव कर रहा हूं।

प्रार्थनाः हे प्रभु यीशु, मैं तुझे धन्यवाद देना चाहता हूँ, कि तू पवित्र आत्मा के द्वारा मुझ में रहना चाहता है। धन्यवाद देना चाहता हूँ कि दिन प्रतिदिन के समर्पण के द्वारा हमारा विश्वास और प्रेम का संबंध बढ़ रहा है। प्रभु, अब पवित्र आत्मा और उसके काम अच्छी तरह को जानने के लिए मेरी सहायता कर। यह मैं जानने की लालसा करता हूँ कि वह मेरे लिए, मेरे परिवार और मेरी मंडली के लिए क्या करना चाहता है, और हम कैसे निश्चित हो सकते हैं कि हम पवित्र आत्माको प्राप्त कर सकेगे जब कि हम हर दिन मांगते हैं। इसके लिए धन्यवाद। आमीन

इफिसियों 5:18 का परिपूरक – ''आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ''

हम अंगरेजी को पदस्थल इफिसियों 5:18 में देख सकते हैं कि इस निवेदन को आज्ञा के रुप में दिया गया है। आगे हम यह भी देख सकते हैं कि यह आज्ञा हर एक के लिए दिया गया है। और हम यह भी देख सकते हैं कि हमें पवित्र आत्मा की परिपूर्णता की खोज करें।

इस पर जोहानेस मेगर टिप्पणी करते हैंः नए नियम में पत्रियां लिखी गई है उनमें सिर्फ एक ही पद है जो सीधे तौर से पवित्र आत्मा से भरने के बारे बातें करता हैः आत्मा से भर जाओ, (इफिसियों 5:18) प्रेरितों के कामों के किताबों में हम पाते हैं कि यह पवित्र आत्मा के दानों से भरा हुआ है, जिन्हें विशेष परिस्थितियों में सामर्थ के साथ वयवहार करना है। जो भी हो, पौलुस कहता कि पवित्र आत्मा से भर जाना एक आदेश है, जो परिस्थितियों से बन्धा हुआ नहीं है ओर यीशु के पीछे चलने वाले लोगों पर लागू होता है। यह संक्षिप्त, परन्तु महत्वपूर्ण आज्ञा है जो चार विशेष बातों को शामिल करते हैं।

1. यह क्रिया भरना आज्ञासूचक है। इस बात पर पौलुस किसी तरह का सिफारिस नहीं देता है, या मित्र भावना से कोई सुझाव नहीं दे रहा है। वह किसी तरह का परामर्श नहीं दे रहा है, कि कोई व्यक्ति इसे स्वीकार कर सकता है या अस्वीकार कर रहा है। वह एक सामर्थ से भरा हुआ आदेश देता

है। एक आदेश हमसे किसी भी व्यक्ति की इच्छा से अनुरोध करता है।यदि कोई मसीही पवित्र आत्मा से भरा हो, तब यह अधिकतर उसी पर निर्भर करता है। मसीही लोग आज्ञा के अधीन होते हैं और इन्हें पवित्र आत्मा से भर जाने के लिए यत्न करना चाहिए। यह हमारा कर्तव्य है पवित्र आत्मा से भरे हुए लोग होने के नाते।

2. यह क्रिया बहुबचन में उपयोग किया गया है। यह आज्ञा मंडली में किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं दिया गया है जिसका कोई खास काम हो। पवित्र आत्मा से भर जाना यह सिर्फ कुछ चुने हुए लोगों के लिए ही नहीं है। यह पुकार सब पर लागू होता है जो मंडली के सदस्य हैं– हमेसा और सब जगह। इसमें कोई अपवाद नहीं। पौलुस के लिए यह कहना एक सामान्य बात था कि सब मसीही पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएँ।

3. यह वाक्य निष्क्रिय वाक्य में है। यह ऐसा नहीं कहता हैः कि तुम अपने आप को पवित्र आत्मा से भर लो; परन्तु कहता है पवित्र आत्मा से भर जाओ; कोई भी व्यक्ति अपने आप को पवित्र आत्मा से भर नहीं सकता है। भरने का यह काम मनुष्य का नहीं परन्तु यह पूरी रीति से पवित्र आत्मा का है। यहीं पर सार्व भौमिक शक्ति काम करती है। परन्तु व्यक्ति एक ऐसी स्थिति बनाए एक ऐसी परिस्थिति का निर्माण करे ताकि पवित्र आत्मा भरा जा सके। उसके बिना क्रियाशील इच्छा से उसमें पवित्र आत्मा काम नहीं कर सकता है।

4. यूनानी भाषा में आज्ञासूचक शब्द वर्तमान काल में होता है। यह दिखलाता है किसी काम का एक ही बार होना। लेकिन इस कथन के अनुसार कि पवित्र आत्मा से भर जाना सिर्फ जीवन में एक ही बार भरे जाने का अनुभव नहीं है, परन्तु यह लगातार और होना और आगे बढ़ते जाना होता है। यह किसी वर्तन के समान नहीं कि बार भर दिया और वह सब दिन बना रहेगा, परन्तु इसे लगातार, बार बार भरने की आवश्यकता है। इस वाक्य को इस तरह होना चाहिएः अपने आप को लगातार बार बार नए रुप से पवित्र आत्मा से भरते रहें।

पवित्र आत्मा से भरा जाना, जिसे हमें पानी में डुबाकर बप्तिस्मा के समय दिया गया था और आत्मा का बप्तिस्मा जब हम पूरी तरह से अपने को समर्पण किए थे। यह खो जा सकता है या खत्म हो जा सकता है यह हम में सदा बना नहीं रहता है। इसे फिर से भरने की

जरुरत होती है। यदि यह खो जाए या समाप्त हो जाए इसे फिर से प्राप्त किया जा सकता है। पवित्र आत्मा के भरे जाने को पुनः दुहराया जाना होता है ताकि पवित्र आत्मा जीवन के हरेक क्षेत्र को अपने में कायम रख सकता है और हमारा आत्मिक जीवन कमजोर न हो जाए। पवित्र आात्मा में भर जाने का यह अर्थ नहीं कि एक ही बार में अधिक मात्रा में मिले। परन्तु यह आत्मा हमारे लिए बढ़ता जाए। इसीलिए पौलुस सारे विश्वासियों को आज्ञा देता है कि वे लगातार आत्मा से भरे जाते रहें। एक मसीही के लिए यह एक सामान्य स्थिति है। एक बप्तिस्मा, पर अनेक बार आत्मा का भरना।

प्रभु ने स्वयं आज्ञा दिया हैः

अपने आप को लगातार और बार बार नया करें आत्मा को भरने के द्वारा...।

अध्याय 4

किन भिन्नताओं की आशा हम कर सकते हैं?

एक जीवन जो पवित्र आत्मा से भरा हो इससे हमें क्या लाभ प्राप्त हो सकते हैं?

हम क्या खो बैठते हैं जब हम पवित्रात्मा के लिए प्रार्थना नहीं करते?

शारीरिक एवं सांसारिक और आत्मिक मसीहीयत के बीच एक तुलना

व्यक्तिगत तौर से सांसारिक मसीही के प्रतिफलों को आंशिक रुप से सूचीबद्ध किया गया है। उनमें से कुछ प्रतिफल अपने आप निम्नलिखित तौर से व्याख्या करते हैंः

- इस स्थिति में व्यक्ति बचाया नहीं जा सकता। (रोमियों 8:6–8; प्रकाशितवाक्य 3:16)

- परमेश्वर का प्रेम– ईश्वरीय प्रेम– यह व्यक्ति में नहीं होता। (रोमियों 5:5; गलतियों 5:22)

- वे सम्पूर्ण रीति से मानवीय प्रेम पर आधारित होते हैं; शरीर की लालसा तोड़े नहीं गए हैं गलातियों 5:16
- व्यक्ति उसकी आत्मा से शक्तिशाली नहीं हुआ। (इफिसियों 3:16–17)
- ख्रीस्त व्यक्ति में वास नहीं करता। (1 यूहन्ना 3:24)
- व्यक्ति गवाही देने के लिए सामर्थ प्राप्त नहीं किया है। (प्रेरितों के काम 1:8)
- व्यक्ति मानवीय तरीके से काम करता है। (1 कुरिन्थियों 3:3) जो शीघ्रतापूर्वक विरोध करता और तनाव उत्पन्न करता है।
- इस प्रतिफल के कारण व्यक्ति के लिए आदेश पालन करना कठिन होता है।
- उनका प्रार्थना का जीवन सायद अपर्यापत है
- व्यक्ति में सिर्फ क्षमा करने की मानव योग्यताएं होती है और उसमें ईर्ष्या को सहने की शक्ति नहीं होती है।

सांसारिक या शारीरिक मसीही समय समय पर एक स्वाभाविक मनुष्य के समान काम करता है। पौलुस कहता हैः क्योंकि अब तक शारीरिक हो। इसलिए कि जब तुम में डाह, और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और क्या मनुष्य की रीति पर नहीं चलते? (1कुरिन्थियों 3:3) दूसरे समयों में उसका काम आत्मिक व्यक्ति के समान होता है, इसके बावजूद भी वह अपनी ही शक्ति और योग्यताओं के अनुसार जीता है।

आत्मिक मसीही परमेश्वर की परिपूर्णता का अनुभव करता हैः कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ; और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़ कर और नेंव डालकर, सब पवित्रता के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और उंचाई, और गहराई कितनी है, और मसीह के प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण जो जाओ।

अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में काम

करता है, कलीसिया में और मसीह में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानयुग होती रहे। आमीन। (इफिसियों 3:16–21)

सांसारिक एवं शारीरिक मसीहीयत का प्रभाव

मैं अफसोस करता हूं इस हानि के लिए जो मेरे परिवार और मंडली में घटी जहां मैं एक पास्टर के हैसियत से काम किया। मेरे अन्दर पवित्र आत्मा की कमी के कारण से यह हुआ। यह भी सच है कि इस क्षेत्र में हम किसी अन्य को अपने आप से आगे बढ़कर अगुवाई नही कर सकते हैं। हमें यह भी अनुभव करने की आवश्यकता है कि पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत कमी परिवार में और कलीसिया में मिलकर हजारो हजार गुणा बढ़ जाती है।

बच्चे और युवा

सांसारिक मसीहीयत, एक उदार मसीही होने का जन्म स्थान है। लोग अनजाने ही अच्छी नियत से उस काम को करने का प्रयास करते हैं जिसे वे कर नहीं सकते और तब वे एक निकास का मार्ग ढूंढ़ते हैं। क्या यही कारण है कि आज हम बहुत सारे जवान युवतियों को खो रहे हैं? क्या हम अज्ञानता में या अन्य कारणों से एक ऐसा सांसारिक मसीहीयत का नमूना हमारे बच्चों और युवा वर्ग के लोगों के सामने पेश करते हैं? क्या हमारे नमूनों के फलस्वरुप वे सांसारिक मसीही बनते हैं और उन्हें निराशा से संघर्ष करना पड़ता है?

क्या यही कारण है जिसके द्वारा अनेक बच्चे और जवान युवति अधिक गंभीरता से नहीं लेते हैं या आराधनालयों की उपासना सभाओं में नहीं आते हैं और यहें तक कि अनेक बच्चे और युवा कलीसिया को छोड़ कर बाहर चले गए है?

कुछ दिन पहले की बात है एक उम्रदार भाई ने अपनी मंडली से कहाः जो समस्या आज हमारे पास हमारे अपने ही जीवन में और हमारे युवाओं के जीवन में हैः उसका कारण है हमारे बड़े लोगों की पीढ़ी ने पवित्र आत्मा के काम करने को समझने में असफल हुए और पवित्र आत्मा से भरे नहीं गए।

मैं आप को पृनः स्मरण दिलाता हूँ गुनगुना होने ख्रीस्त के लिए सम्पूर्ण रुप से समर्पण नहीं करना : आधे विश्वास करने वाले मसीही धर्म निन्दक एवं नास्तिक लोगों से भी बुरे हैंः क्योंकि ऐसे आधे विश्वासी वाले लोगों के धूर्तताई एवं कपटपूर्ण बातें और उनकी असमर्पित जीवन अनेक लोगों को भटका दिया है। कपटी एवं धूर्त लोग अपना रंग दिखाते हैं। गुनगुने या आधे विश्वासी लोग दो दल के लोगों को धोखा

देते हैं। ऐसा व्यक्ति न तो अच्छा सांसारिक है और न ही अच्छा मसीही है। ऐसे व्यक्ति को शैतान ऐसा काम कराता है जिसे कोई अच्छा आदमी नहीं कर सकता है।

कुछ भी हो, यदि हम आत्मिक तौर से जीवन जीते हैं, तो हम अपने बच्चों के परमेश्वर के मदद के रास्ते दिखला सकते हैं। एलेन ह्वाइट कुछ बातें कहती हैं जो वास्तव में आश्चर्यजनक है।

अपने बच्चों को सिखाएं कि यह उनका सुअवसर है कि वे प्रतिदिन पवित्र आत्मा का बप्तिस्मा लें। ख्रीस्त को ढूंढ़ने दें कि वह आप को एक सहायक के रुप पा सके अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए आप के अपने प्रार्थना के द्वारा आप एक ऐसा अनुभव प्राप्त करेंगे जो आप को अपनक बच्चों की सेवकाई सफलतापूर्वक सिद्धता के साथ कर सकें।

हमने अपने बेटों को प्रार्थना करना सिखलाया। परन्तु क्या हमने उन्हें प्रतिदिन पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करना सिखलाया? या हम खुद अपने लिए भी नहीं जानते थे? उस समय मैं और मेरी पत्नी भी इसे नहीं जानते थे। मैं परमेश्वर के प्रति धन्यवादी हूँ कि उसने इस समय अनदेखा किया जहां पर हमें ज्ञान की कमी थी। परन्तु इसके फलस्वरुप कितना अधिक हानि उठाना पड़ा?

जब माता पिता यीशु के लिए प्रतिदिन अपने आप के सौंपते हैं और पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करते हैं तो आत्मिक माता पिता के लिए क्या ही अद्भुत बच्चे होंगे।

धार्मिक वातावरण– ईश्वरीय प्रेम या सिर्फ एक दूसरे के प्रति हम अच्छे हैं

विवाहों और परिवारों के धार्मिक वातावरण मंडली और सांसारिक सहभागिता या आत्मिक मसीहियों में क्या अन्तर होगा यदि एक अनुशासित जीवन में परमेश्वर की सामर्थ न हो, यदि परमेश्वर का प्रेम न हो और पाप की शक्ति को तोड़ा न गया हो या यदि ये बातें परमेश्वर के अनुग्रह में विद्यमान होते?

परमेश्वर का विरोध करने वाले मसीही लोगों का झुकाव आलोचना करने की ओर होता है। यह अच्छा नहीं है। फिर भी हमे परमेश्वर के अच्छे निर्देशों के बारे हमें चर्चा करना चाहिए, इसके साथ

ही साथ हमें अनुभव करना चाहिए कि आवश्यक परिवर्तन होगा जब बदलाहट अन्दर से हो।

उदारवादी मसीही लोगों का झुकाव होता है कोई वस्तु को गंभीरता के साथ नहीं लेना और सांसारिकता के तौर तरीकों को मान्यता देना या स्वीकार कर लेना। परमेश्वर इसे आशीर्वाद नहीं दे सकता है।

आज की मंडलियों की सामान्य परिस्थितियों के बारे जोसेफ लिडर निम्नलिखित बातों को खोज निकाला हैः आलस्य, छिछलेपन, सांसारिकता, उदारता की कमी, पाद्री प्रचारको की योग्यता का समाप्त हो जाना, युवाओं का कलीसिया छोड़ देना, कमजोर स्व अनूशासन, वास्तविक पृष्ठभूमि के बिना योजनाएं बनाना या प्रतिफल, एक लम्बे समय से मजबूत और समर्पित मनुष्यों का नहीं होना

हमारी समस्या का कारण है यीशु के साथ हमारे लगाव की कमी (यूहन्ना 15:1–5) और मनुष्यों के कामों पर अधिक भरोसा करना जकर्याह 4:6। किडर इसका समाधान भी पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन में देखते हैं (प्रेरितों 1:8)

यीशु ने हमें नई आज्ञा दिया हैः

मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसे ही एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो, इसी से सब जानगेंगे कि तुम मेरे चेले हो। यूहन्ना13:34–35

जैसा यीशु ने प्रेम किया वैसा प्रेम करना इसका अर्थ हैः वह है ईश्वरीय प्रेम से प्रेम करना। हम ऐसा तभी कर सकते हैं जब हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होंगे।

परमेश्वर के प्रति सर्वोच्च प्रेम और एक दूसरे के प्रति निःस्वार्थ प्रेम का होना – यह एक उत्तम दान है जिसे हमारा स्वर्गीय पिता दे सकता है। यह प्रेम कोई प्रभाव या प्रवृति नहीं है, परन्तु एक ईश्वरीय सिद्धांत है, एक स्थायी सामर्थ है। असमर्पित हृदय हर व्यक्ति जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण नहीं है, वही वह है वह इस निर्माण या पैदा नहीं कर सकता है। यह सिर्फ उस हृदय में हो सकता है जिसमें यीशु का शासन होता है।

मैं सोचता हूँ एक अन्तर हो सकता है जिसमें हम सिर्फ एक दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करें या इससे आगे बढ़ जाएं और परमेश्वर

के प्रेम के साथ प्रेम करें। एलेन जी ह्वाइट हमें एक विशेष मार्ग दर्शक सिद्धांत देती हैः

नम्रता का आभूषण धारण करने के द्वारा और शांत आत्मा रखने के द्वारा आज जहां 100 में 99 लोग जीवन के भयंकर तीखेपन से और मुसीबतों से गुजर रहे हैं, वे बचाए जा सकते हैं।

(1 थिस्सलोनी 4:3–8) में परमेश्वर वैवाहिक जीवन के बारे कुछ दर्शाता है अन्य वस्तुओं के बीच में ये पदस्थल विवाह के भीतर एक पवित्रता और आदरनीयता जीवन व्यतीत करने के बारे बतलाते हैं। यह अन्यजातियों के कामुकता की लालसा से बिल्कुल अलग है। जब कि ये पवित्रता के जीवन को तीन बार चर्चा किया है और पवित्र आत्मा के होने के कारण हूँ अनुभव करते हैं कि पवित्र आत्मा के साथ जीवन वैवाहिक संबंधों में परिवर्तन ला सकता है। परमेश्वर ने हमारे वैवाहिक जीवन में हमारे लिए बड़ा आनन्द रखा है। क्या यह हमें प्रेम की कोमलता के साथ पेश आने में मदद करना चाहता बनिस्पत कि लालसा के साथ?

यीशु ने अपने चेलों की एकता के लिए प्रार्थना किया कि वे सब एक हों, जैसा मैं हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ वैसे ही वे भी हम में हों, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 17:21)

विलियम जी जोन्सन कहते हैंः अनेक एडवेंटिसट लोगों को अभी भी समझना बाकी है कि ख्रीस्त के साथ एक होने का अर्थ क्या होता है, सायद विगत दिनों में हम इस विषय को अधिक महत्व नहीं दिए होंगे या हमने थोड़े को उल्टा या पीछे में जोत दिया है।

जब परमेश्वर के लोग आत्मा की एकता में एक हो जाऐंगे, तो सारे फरीसीवाद, सम्पूर्ण आत्म धार्मिकता, जो यहूदी राष्ट का पाप था, वे सम्पूर्ण रुप से हृदय के बाहर कर दिए जाएंगे।

जब हम पवित्र आत्मा से भर जाते हैं तब ख्रीस्त हम में होता है। आत्मिक मसीहीयत हमारे प्रार्थनाओं के उत्तर प्रभु द्वारा प्राप्त करने में मदद करता है। एलेन जी ह्वाइट कहती हैंः जब परमेश्वर के लोग आत्मा की एकता में एक हो जाते हैं तब सभी तरह के फरीसीवाद, सभी आत्म धार्मिकता, जो यहुदी राष्ट का पाप था, इन्हें हृदयों से निकाल दिया जायगा...। परमेश्वर उन रहस्यों को जानकारी देगा जो सदियों से छिपा हुआ है। परमेश्वर ने प्रकट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में इस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह

यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है, तुम में रहता है। (कुलुस्सियों 1:27)

सुधार की सम्मति

क्या सुधार की सम्मति से कोई प्रभाव होगा जब इसे नहीं किया जाता है या परमेश्वर के प्रेम में के साथ कठिनाई से किया जाता है? एक मंडली का निर्णय ले सकती है, जो अधिकांश रुप से सांसारिक मसीही के द्वारा निर्णय किया जाता है या यहाँ तक कि एक सांसारिक पास्टर या प्रेसीडेन्ट के द्वारा भी लिया जाता है। एक पास्टर की हैसियत से जब मैं अपने काम के बारे में सोचता हूँ तब मेरा अनुभव होता है कि सिर्फ मंडली के आत्मिक सदस्य पवित्र सदस्यों को वापस लाने का प्रयास करते हैं। और जब व्यक्ति पश्चाताप करता है और अपने पापों को मान लेता है, तब परामर्श ने अपना लक्ष्य पूरा कर लिया है। कभी कभी शारीरिक या सांसारिक मसीही को जो सुझाव दिए जाते है।, उन्हें वे दण्ड के तौर पर लेते है। और यहां तक कि वे अपनी शक्ति का गलत उपयोग करने लगते हैं। (मती 18:15—17;1) (कुरिन्थियों 3:1—4;2 कुरिन्थियों 10:3; याकूब 5:19)

अंतिम दिनों के लिए परमेश्वर की भविष्यवाणी के वचन

परमेश्वर की परंपरा है कि आने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं को अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा उन्हें प्रगट करता है, (आमोस 3:7) इसलिए उसने अंतिम दिनों के लिए महत्वपूर्ण भविष्यवाणी की बातें एलेन ह्राइट के द्वारा प्रदान किया है। क्योंकि अंतिम दिनों में अनेक बातें पहले की बातों से बिल्कुल अलग होंगी, इसलिए यह महत्वपूर्ण और आवश्यक था कि परमेश्वर की ओर संबंधित जानकारी को दिया जाय। एलेन ह्वाइट के अनुसार ये संवाद यीशु के दूसरे आगमन तक कायम रहेंगी। क्योंकि उसकी सम्मति या सुझाव में जीवन शैली के परिवर्तन, फटकार, निर्देश आदि शामिल किए गए हैं, एक आत्मिक व्यक्ति इन्हें अधिक सरलता से स्वीकार कर सकता है बनिस्पत कि एक शारीरिक मनुष्य के। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यदि कोई इन सम्मतियों को गंभीरता से लेता है तो वह अपने आप आत्मिक नहीं हो जाता है। यह बुद्धिमानी की बात होगी कि (व्यवस्थाविवरण 18:19) की बातों पर विचार किया जाएः और जो मनुष्य मेरे यह वचन जो वह मेरे नाम से कहेगा ग्रहण न करेगा, मैं उसका हिसाब उससे लूंगा।

यह हमें साफ साफ दिखलाता है कि सचचे भविष्यवक्ता के संवाद उस मनुष्य के साथ संबंधित है। कौन सच्चा भविष्यवक्ता है इसे हम कैसे जान सकते हैं? इससे जांचने के लिए परमेश्वर के वचन हमें पांच बातों को देता है। एक सच्चा भविष्यवक्ता में ये पांच बातें अवश्य होनी चाहिएः

1. उनकी जीवन शैली– उनके फलों को तुम उन्हें पहचान लोगे। (मती 7:15–20)

2. भविष्यवाणियों का पूरा होना– (व्यवस्थाविवरण 18:21–22)

3. परमेश्वर की भक्ति के लिए बुलाहट परमेश्वर के वचन। (व्यवस्थाविवरण 13:1–5)

4. यीशु को एक सच्चा मनुष्य और सच्चा परमेश्वर मके रुप में पहचानना। (1 यूहन्ना 4:1–3)

5. बाइबल की शिक्षाओं के साथ सहमत होना। (यूहन्ना 17–17)

परमेश्वर की सारी आज्ञाएं इसके साथ साथ उसके भविष्यवक्ताओं द्वारा दिए गए सम्मतियाँ, ये सब हमारे भलाई ही के लिए हैं। इस कारण से वे अत्यधिक मूल्यवान हैं। इस प्रकार आत्मिक लोग परमेश्वर की शक्ति से उसकी आज्ञाओं का पालन कर सकते हैं और प्रसन्नता के साथ और यह जानते हुए कि यह जीवन में सरलता प्रदान करती है। हे यहूदिया, हे यरुशलेम के निवासियों, मेरी सुनो, अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो, तब तुम स्थिर रहोगेः उसके नबियों की प्रतिति करो, तब तुम कृतार्थ हो जाओगे। (2 इतिहास 20:20)

हमारे सब्बत स्कूल पाठ का अध्ययन गाइड निम्नलिखित बातों के बारे बतलाता है कि एक जीवन पवित्र आत्मा के साथ और एक सच्चे भविष्यवक्ता की बातों के बीच में क्या संबंध हैः जिससे लोग भविष्यवाणी की बातों को स्वीकार नहीं करते, वे अपने आप को पवित्र आत्मा का आदेश या उसके प्रशिक्षण से अपने आप को बन्द कर लेते हैं। आज भी इसका परिणाम पहले के परिणाम से कोई फर्क नही है– ये परमेश्वर के साथ संबंध को खो बैठते हैं और नकारात्मक प्रभाव में बह जाते हैं।

विशेष उद्देश्य के लिए तैयार योजना

कलीसिया और मिशन के अन्दर एक विशेष काम है वह है अच्छे समाधानों और तरीको को खोज निकालना। यह है हमारे योजनाओं और उद्देश्य के लिए एक प्रश्न है। इसका विशेष कार्य है मंडली या कलीसिया को आत्मिक रुप से मजबूत करना और अधिक प्राणियों को प्रभु के लिए जीतना।

मैं 65 वर्षों से बप्तिस्मा लेकर बैठा हूँ और 43 वर्ष से सेवकाई का काम कर रहा हूँ। हमने प्रचुर मात्रा में कार्यक्रमों और तरीकों को विकसित किया है। हम अत्यधिक परिश्रमी थे इस संबंध में हमें पुनः सोचना पड़ रहा है उन बातों के बारे जिन्हें 2005 ई. के जेनरल कान्फ्रेंस में डुविट नेलसन ने कहा था।

हमारी कलीसिया ने योजनाएं और कार्यक्रमों को विकसित किया है, परन्तु यदि हम अपने आत्मिक दिवालियेपन पवित्र आत्मा की कमी को स्वीकार नहीं करते हैं, जो हम में से अनेको पाद्री एवं प्रचारकों और अगुओं को अपने कब्जों में कर लिया है तो हम अपने मसीही कार्यक्रम को कभी आगे नहीं बढ़ा सकते।

इसी अभिप्राय में डेनिस स्मिथ निम्नलिखित बातों को कहते है।ः

योजनाओं, कार्यक्रमों और तरीको के विरुद्ध में कुछ भी कहना नहीं है। परन्तु मैं भयभीत हूँ कि हम प्रायः इन्ही बातों पर परमेश्वर के काम को आगे बढ़ाने के लिए निर्भर करते हैं। योजनाएँ, कार्यक्रमों और तरीके परमेश्वर के काम को समाप्त नहीं करेंगे। महान उपदेशक, बड़े बड़े अदभुत मसीही संगीत समारोह, सेटेलाइट प्रसारण द्वारा प्रचार करना भी परमेश्वर के काम को समाप्त नहीं कर सकेंगे। परमेश्वर की आत्मा ही काम को समाप्त करेगा– परमेश्वर की आत्मा जो पुरुषों और स्त्रियों में समाकर बातें करने और काम करने के द्वारा ही समाप्त होगा।

बप्तिस्मा और प्राणियों को जीतना

बाइबल हमे दिखलाती है कि मसीह के लिए लोगों को जीतने का काम में पवित्र आत्मा एक आवश्यक और विशेष साधन है पढ़ें प्रेरितों के काम की किताब जर्मन देश में एक तरफ कलीसियाएं बढ़ रही है और दूसरी तरफ कलीसियाएं रुकी हुई है, आगे बढ़ नहीं रही है या वे घटती जा रही हैं। सारे विश्व के कलीसिया की सदस्यों की संख्या 60 वर्षों में 20 गुणा बढ़ गई है। जर्मन देश की स्थिति के बारे में हम अनेक कारण दे सकते हैं। परन्तु मेरे लिए एक बात साफ हैः मुख्य कारण है कि पवित्र आत्मा की कमी। यह समस्या स्वाभाविक तौर से हमें पहले से ही जकड़ी हुई है। हमने अनेक योजना और कार्यक्रमों

अपनाया या उन्हें विकसित किया है। हमने यहां पवित्र आत्मा की कमी के इस बड़े प्रयास में देखा कि हमें आर्थिक एवं समय की क्षति पहुंचाई है क्योंकि हमने अनावश्यक या असफल तरीकों का अनुसनण किया। एलेन ह्वाइट की लेयाों से दो बातों को लेते हैं जो इस परिस्थिति को दिखलाती है।

आज परमेश्वर अधिक प्राणियों को कलीसिया में लाने का काम नहीं करता है, क्योंकि मंडली में ऐसे सदस्य हैं जिनका मन परिवर्तन कभी नहीं हुआ है और कुछ लोग ऐसे हैं जो पहले एक बार मन परिवर्तन किए थे, परन्तु वे सत्य से अब दूर भटक गए हैं। मंडली में ये असमर्पित एवं अमन परिवर्तित सदस्य सांसारिक मसीही नए आए विश्वासियों पर क्या प्रभाव डालेंगे? टेस्टीमोनिज फॉर द चर्च वाल 6 पृ. 370. न 3

यदि हम परमेश्वर के समक्ष अपने आप को दीन करेंगे, और दयालु, अच्छा व्यवहार, कोमल हुदय और हमदर्दी दिखलाने वाले होंगे तो एक व्यक्ति विश्वास में आने या मन फिराने के स्थान में 100 व्यक्ति मन फिराएंगे। अेस्टीमोनिज फॉर द चर्च वोल 9, पृ. 189.4

दूसरी ओर हम ऐसे लोगों को बप्तिस्मा देते हैं, जो पर्याप्त रुप से तैयार नहीं हैं। एलेन जी ह्वाइट कहती हैंः आज के जगत में नया जन्म पाने का अनुभव नही ंके बराबर है। यही कारण है आज मंडलियों में अत्यधिकसमस्याएं एवं परेशानियां हैं। अधिक से अधिक आज मंडलियां हैं जो ख्रीस्त का नाम लेते हैं वे अपवित्रता और अधर्म का जीवन जीते हैं। वे बप्तिस्मा तो लिए हैं, परन्तु वे जीते जी दफनाए हुए हैं। उनमें स्वार्थ अब तक मरा नहीं है, और इसलिए वे ख्रीस्त में नए जीवन के रुप में जी नहीं उठेंगे।

एलेन ह्वाइट एम.एस., पृ.148

ये बातें 1897 में लिखी गई थीं जब कि उन दिनों आज की सी स्थिति थी। समस्या यह है किः जो कोई भी नया जन्त प्राप्त नहीं किया है, वे पवित्र आत्मा से भरे नहीं गए है। यीशु ने कहाः मैं तुम से सच सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। (यूहन्ना 3:35) क्या यह सच नहीं कि हर एक युग में हम पवित्र आत्मा की कमी को देख सकते हैं?

पवित्र आत्मा और धर्म उपदेश

पवित्र आत्मा और धर्म उपदेश के अर्थ के बारे परमेश्वर हमें निम्नलिखित बातें बतलाता हैः पवित्र आत्मा की बिना उपस्थिति और सहायता के वचन का प्रचार का कुछ लाभ नहीं हो सकता है। सिर्फ पवित्र आत्मा ही परमेश्वर के सत्य का एक मात्र प्रभावपूर्ण शिक्षक है। सिर्फ जब सत्य पवित्र आत्मा के द्वारा हृदय में प्रवेश करता है तब यह विवके को उभाड़ता या जीवन को बदल डालता है। कोई परमेश्वर के वचन से शब्दों के अक्षरों को प्रस्तुत करने की योग्यता रखता हो, और यह उसके समस्त आज्ञाओं और प्रतिज्ञाओं को जानता हो; परन्तु जब तक पवित्र आत्मा सत्य को हृदय में स्थापित नहीं कर लेता तब तक कोई भी प्राणी चट्टान पर नहीं गिरेगा और चकनाचूर नहीं हो जाता।, शिक्षा की कोई भी मात्रा, कोई भी लाभ चाहे कितना बड़ा क्यों न हो वह किसी के ज्योति के एक साधन के रुप में नहीं बना सकता परमेश्वर की आत्मा के सहयोग के बिना। उपदेश के समय वचन प्रचार नहीं होता है, परन्तु भाषण में बाइबल अध्ययन या सेवा के दल के साथ साथ भी ऐसा ही होता है।

रांडी माक्सवेल कहता हैः परन्तु सत्य वहाँ होता है जहां पर हम जीवते परमेश्वर के साथ सम्पर्क बनाने के लिए प्यासे होते हैं।

क्या पवित्र आत्मा का कमी भी भय का एक कारण है? क्या इमिलिवो नेचटल सही हो सकता है ज बवह कहता हैः हम सफल क्यों नहीं हो सकते इस भ्रष्ट जगत को उलट पलट करने के द्वारा? हमारे विश्वास के साथ कुछ गलत हो गया है। हम संघर्ष से भयभीत होते हैं,हम कठिनाइयों से डरते हैं, हम अपने काम छूट जाने के लिए डरते हैं, हम अपने नाम खराब होने से डरते हैं, हम अपने आने जाने से डरते हैं। इसलिए हम चुप रहते हैं और छिपते हैं। हम प्रेमपूर्वक सामर्थ के साथ सुसमाचार प्रचार करने से डरते हैं।

इस समस्या का समाधान प्रतिक्रिया 4:31 में मिलता हैः जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।

पवित्र आत्मा और हमारी किताबें

हमारे किताबों के बारे निम्नलिखित बातें कही गई हैः यदि परमेश्वर का उद्धार उस व्यक्ति के साथ हो जो पत्रिका के लिए लिखता है, उसी अ्रात्मा का अनुभव पढ़ने वाले को भी होगा। एक लेख जो परमेश्वर की आत्मा में लिखी जाती है, स्वर्गदूत इसे स्वीकार करते हैं,

और इसे पढ़ने वाले पर प्रभावित करते हैं। लेकिन जब कोई लेखक उस व्यक्ति के द्वारा लिखा जाता है जो परमेश्वर की महिमा में सम्पूर्ण रुप से जीवन नहीं बिताते हैं और पूरी तरह से उसके प्रति भक्ति नहीं दिखलाते हैं स्वर्गदूत गण दुःख का अनुभव करते हैं। वे अपना मुंह फेर लेते हैं और वे पढ़ने वाले को इससे प्रभावित नहीं करते, क्योंकि परमेश्वर और उसकी आत्मा उनमें नहीं होता है। लिखे गए शब्द तो अच्छे होते हैं परन्तु इसमें परमेश्वर की आत्मा का गर्म प्रभाव नहीं होता है।

मैं पुनः इस पर जोर देता हूँ: स्वाभाविक तौर हमने जो कुछ भी किया वे गलत नहीं थे। इसमें संदेह की बात नहीं। हमने अच्छी आौर बहुत सी अच्छी चीजों को विकसित किया है; जहां तक संभव था परमेश्वर ने निश्चित रुप से हमारे मानव प्रयासों को आशीष प्रदान किया है। परन्तु विशेष प्रश्न यह हैः क्या हम इन कर्तब्यों की आत्मिक तौर से स्वीकारते हैं या सांसारिक मसीही के तौर से? एक बात निश्चित है; जब हम एक सांसारिक आधार पर समाधान ढूंढ़ने के लिए संघर्ष करते हैं, हम व्यर्थ में ही अधिक एवं अत्यधिक व्यतीत करते है।; हम अनेक कामों को करेंगे जिनका कोई लाभ नहीं होगा।

पवित्र आत्माः अगली वर्षा नहीं और न पिछली वर्षा

अगली वर्षा पवित्र आत्मा से भरा होता है, यह हमारे लिए आवश्यक आत्मिक परिपक्वता ले आती है, जो आवश्यक है ताकि इसे हम लाभ प्राप्त कर सकते हैं

पिछली वर्षा, पृथ्वी की कटनी की तैयारी, यह आत्मिक अनुग्रह को प्रतिनिधित्व जो मनुष्य के पुत्र के आगमन के लिए तैयार करे। परन्तु जब तक पहली वर्षा होगी, कोई जीवन नहीं होगा; दानों से हरी पतियां नहीं उगेंगी। जब तक कि पिछली वारिश की बौछार न हो और अपना काम न कर ले, दूसरी वर्षा अन्तिम वर्षा बीजों को समय पर अंकुरने में मदद नहीं पहुंचा सकती। (एलेन ह्वइट द फेथ आई लिव बाई, पृ. 333.3)

पवित्र आत्मा और बाइबलीय पवित्रिकरण

यह काम अर्थात बाइबलीय पवित्रिकरण सिर्फ ख्रीस्त में विश्वास और परमेश्वर की आत्मा की सामर्थ के मन में वास करने के द्वारा से ही पूरा हो सकता है। एलेन ह्वाइट, द ग्रेट कंट्रोवर्सी पृ. 469.3

पवित्र आत्मा के बिना ही बड़े प्रचार का काम?

क्या बड़ी बड़ी संस्थाएं, धर्म प्रचार के सफल कार्यक्रम और शक्तिशाली प्रचार काम की व्यूह रचना बिना पवित्र आत्मा के ही विकसित हो सके हैं? महान प्रचारक मिशनरी एन्ड्रू मुरै जो दक्षिण अफ्रिका में काम करते थे, वे जानते थे इस कथनांक को कि संभव हो सकता है और, सचमुच जब उसने लिखा था उस समय वास्तव में यही धारणा थी : मैं उपदेश दूं या लिखूं या मनन करुं, और आनन्दित होउं कि मैं परमेश्वर के किताबों में व्यस्त हूं और साथ ही साथ परमेश्वर के राज्य के काम में व्यस्त हूं, और उसके बावजूद भी पवित्र आत्मा की सामर्थ मुझ में नहीं हो सकता है। मैं भयभीत हूं कि यदि आप ख्रीस्त के समस्त कलीसियाओं को लें और यदि सवाल उठाएं कि क्यों वचन के प्रचार में इतना कम मन परिवर्तन करने की शक्ति है?क्यों इतने अधिक काम होने के बावजूद भी सनातन काल के लिए इतनी थोड़ी सफलता? उपदेश के वचनों इतना कम सामर्थ कयों हामता है कि यह विश्वासियों को पवित्र बनाने और समर्पित कराने में सफल नहीं होताः इसका उतर होगाः ये इस लिए होते हैं क्योंकि पवित्र आत्मा की शकित की उपस्थिति नहीं होती है। और यह ऐसा क्यों? इसका एक ही कारण हो सकता है कि शरीर (गलाती 3:3) और मानव शक्ति ने पवित्र आत्मा का स्थान को ले लिया है। रौंडी मैक्सवेल, इफ माई पिपल प्रे पृ.145

पवित्र आत्मा और स्वास्थ्य

इसलिए हे भाइयो, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर बिनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। (रोमियो 12:1)

क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मंदिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? यदि कोई परमेश्वर के मंदिर को नष्ट करेगा तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा। क्योंकि परमेश्वर का मंदिर पवित्र है, और वह तुम हो। (1 कुरिन्थियों 3:16–17)

क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मंदिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है; और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो। (1 कुरिन्थियो 6:19–20, निर्गमन 15:26 भी देखें)

लोग पवित्र आत्मा से भरे होते हैं वे परमेश्वर के मंदिर हैं। क्या आप ने रुक कर कभी सोचा है कि आप के जीवन में इसका उपयोग क्या है? एक मंदिर परमेश्वर का निवास स्थान होता है। परमेश्वर ने

मूसा से कहाः और वे मेरे लिए एक पवित्र स्थान बनाएं कि मैं उनके बीच निवास करुं। (निर्गमन 25:8)

यदि हम इस बात को गंभीरतापूर्वक लें, हमें अपने स्वास्थ्य की देखभाल करनी चाहिए और तब हमारी जीवन शैली हमारे शिष्यपन का एक खास हिस्सा हो जाएगा। हमारा शरीर परमेश्वर का है। क्या आप परमेश्वर की संपति के साथ सावधानी के साथ व्यवहार करना नहीं चाहेंगे?हां, हम अपने शरीरों को सावधानी से व्यवहार करेंगे और सच में इसकी देखभाल परमेश्वर के निर्देश अनुसार करेंगे। इसका अर्थ हुआ यह कुछ मात्रा में अनुशासन की मांग करता है। कोई भी जो, पवित्र आत्मा से भरा हुआ है, वह साधारणतः इस अनुशासन को आनन्द के साथ ले लेगा। इसका प्रतिफल शरीर आत्मा और प्राण में अच्छा स्वास्थ्य होगा, वह संघर्ष करेगा और हानियां उठाएगा। परमेश्वर चाहता है कि उसकी महिमा, उसकी सेवा और अपने आनन्द के लिए हम सबसे अच्छा शारीरिक और आत्मिक स्वास्थ्य के साथ करें। इस क्षेत्र में पवित्र आत्मा से भरे जाने के स्थान में किसी और वस्तु को बदले में नहीं रखा जा सकता है। जब यीशु पवित्र आत्म के द्वारा हम में वास करता है, तब वह हमारा प्रभु भी है जो आप को चंगाई देता है। निर्गमन 15:16 किसी व्यक्ति विशेष के लिए और परमेश्वर की महिमा के लिए चंगाई हमेशा सबसे अच्छा होता है। यह प्रश्न उठा सकता हैः क्या स्वर्गीय डॉक्टर ईश्वर सभी व्यक्ति को चंगाई प्रदान करता है?

एक उम्रदार कम्बोडीआयी स्त्री शरणार्थी के रुप में मिशन के अस्पताल में आई जो थाईलैंड के एक शरणार्थी शिविर में था। वह बौद्ध धर्म के तपस्विनी की वस्त्र पहनी हुई थी। उसने अपना इलाज डॉक्टर यीशु से करना चाही। इसलिए वहां के कर्मचारियों ने उस बौद्ध स्त्री को यीशु के बारे बतलाया। स्त्री ने यीशु पर भरोसा किया और वह शारीरिक और आत्मिक दोनों च्रगाई प्राप्त की। जब वह कंबोडिया वापस लौटी उसने ख्रीस्त के लिए 37 प्राणियों को जीत लिया।

ईश्वर भक्त राजा हिजकियाह के बीमारी के दिनों में प्रभु ने उसके लिए एक समाचार भेजाः देख मैं तुझे चंगा करता हूँ। (2 राजा 20:1—11) परन्तु प्रभु ने उसे शब्दों को बोलकर चंगाई नहीं दिया, परन्तु इसके बदले उसे कुछ काम दिया कि वह अपने घाव पर अंजीर गूलर के मलहम का लेप डाले? इसका अर्थ नहीं कि प्रभु चाहता है कि हम प्राकृतिक जड़ी बूटियों के द्वारा चंगाई के काम में हिस्सा लें या हमारे खान पान में परिवर्तन करें व्यायाम, विश्राम आदि करें? परमेश्वर ने क्यों पौलुस को चंगाई दिया परन्तु उसके शरीर में एक कांटा चुभाया? पौलुस ने खुद कहाः इसलिए कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाउं।

(2 कुरिन्थियों 12:7–10) फिर भी एलेन ह्वाइट हमसे कहती हैः परमेश्वर की आत्मा का प्रभाव ही एक सबसे अच्छा दवा है जिसे एक बीमार पुरुष और स्त्री प्राप्त करते हैं समस्त स्वर्ग स्वास्थ्य ही है; और जीतना अधिक स्वर्गीय प्रभाव को प्राप्त किया जाए, उतना ही अधिक एक अयोग्य विश्वासी के लिए च्रगाई निश्चित होगी।क्या यह अद्भुत और महत्वपूर्ण नहीं है जैसा एक व्यापारी ने लिखा है? वह बतलाता है कि कैसे सभी प्रकार के स्वास्थ्य रहने पर भी उसके लिए कोई फायदा नहीं पहुंचाया। परन्तु जब से वह प्रतिदिन पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करन शुरु किया, वह सम्पूर्ण रुप से एक स्वास्थ्यपूर्ण जीवन शैली में चला गया और उसने शाकाहारी भोजन खाने का चुनाव कर लिया। क्या यह नहीं दिखलाता कि पवित्र आत्मा से भर जाना हमें उत्साहित करता है और हमें आनन्द के साथ एक महत्वपूर्ण जीवन शैली को ग्रहण करने के लिए बल प्रदान करता है?

एक बहन इस अनुभव को पढ़ी और लिखीः यीशु के लिए मेरी सम्पूर्ण समर्पण में, परमेश्वर ने मेरे जीवन को एक क्षण में पूरी तरह से बदल डाला। समर्पण की प्रार्थना करने के बाद मैं दूसरे दिन सुबह में भोजन बनाने के कमरे में गया, और कॉफी बनाने की मशीन के सामने खड़ा हुआ, अपने सिर हिलाते हुए अपने आप से कहाः नहीं अब से आगे मैं कभी कॉफी नहीं पिउंगी। पहले इस तरह बात करना और काम करना सोच के बाहर की बात थी, क्योंकि जब मैं कॉफी पीना छोड़ना चाहा, मुझे बड़ा भयंकर सर दर्द 5 दिनों तक होता रहा– ये कॉफी छोड़ने के लिए मजबूत लक्षण थे। पर इस बार मैं सोचा भी नहीं कि छोड़ने का परिणाम मेरे लिए क्या होगा। मैं सिर्फ इतना ही जानती थी अब मैं फिर कभी भी कॉफी पीना नहीं चाहती थी आज कॉफी पीने की मुझे कोई लालसा नहीं है। उसके जीवन में अनेक बदलाहटों में यह एक था।

पवित्र आत्मा के साथ एक जीवन वृहद रुप में स्वास्थ्य सुधार को बढ़ावा देता है। यह एक स्वास्थ्य सूचना है जो बदल डालने वाले सामर्थ से जुड़ा हुआ है।

आज हमारी वास्तविक आवश्यकता सिर्फ स्वास्थ्य शिक्षा ही नहीं है– हमारे पास उत्तम सूचनाएं हैं। आवश्यकता है स्वास्थ्य जानकारी की और शक्ति की ताकि इन्हें अभ्यास में लाया जा सके, वह शक्ति है बदल डालने वाली शक्ति।

डॉक्टर टीम हाउ कहते हैंः

केवल स्वास्थ्य शिक्षा देना ही मेडिकल मिशनरी का काम नहीं है। चंगाई की शिक्षा मात्र चंगाई नहीं दे सकती है, परन्तु परमेश्वर की व्यवस्था उद्धार प्रदान करती है। स्वास्थ्य या उद्धार का अनुभव करना ही पर्याप्त नहीं है, परन्तु परमेश्वर के बदल डालने वाली शक्ति का अनुभव करना आवश्यक है।

अन्त में मैं यह प्रश्न पूछना चाहूंगाः विश्वास की चंगाई के बारे में क्या बात है? क्या कोई चंगाई की आशा कर सकता है बिना पवित्र आत्मा की भरपूरी से? पढ़ें मरकुस 16:17–18; याकूब 5:14–16

यीशु के दूसरे आगमन की तैयारी

जैसे हम उसके दूसरे आगमन की तैयारी करते हैं, पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु के साथ सहभागिता का कोई दूसरा विकल्प नहीं है। जब पवित्र आत्मा की सहायता के द्वारा ख्रीस्त मुझ में वास करता है, तब मैं उसके आगमन के लिए उसके अनुग्रह के द्वारा तैयार हो जाऊँगा। इसे तीन क्षेत्रों द्वारा दिखला जा सकता है।

ख्रीस्त के साथ व्यक्तिगत संबंध

यीशु ने कहाः और अनन्त जीवन यह है कि तुझ एक मात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें। यूहन्ना 17:3 जाने शब्द का अर्थ बाइबल में बहुत गहरा है, आज के अंग्रेजी भाषा के शब्द की तुलना में इसका अर्थ होता है एक सम्पूर्ण, आपसी और प्रेम पूर्ण समर्पण। यह जीवन में तभी हो सकता है जब जीवन में पवित्र आत्मा होता है। यह विचार निम्नलिखित शब्दों से प्रकट किया गया हैः

परमेश्वर के साथ हमारा एक जीवता संबंध होना आवश्यक है। हमे उस सामर्थ के जो उपर से आता है बप्तिस्मा द्वारा उसे अपना लेना है ताकि उंचे स्तर में पहुंच सकते हैं; क्योंकि हमारे लिए सहायता और किसी दूसरे रास्ते से नहीं मिल सकता है। यीशु ने अपने दस कुंवारियों के दृष्टांत में उन निर्बुद्धि कुंवारियों से कहाः मैं तुम्हें नहीं जानता। इसका कारण क्या था? कारण था तेल की कमी, जो पवित्र आत्मा की कमी को दिखलाता है (मती 25:1–13) जिन लोगों ने? यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था, उनमें पुराने नियम के बाइबल का बहुत भारी ज्ञान था। परन्तु अपने झूठे अर्थ लगाने के कारण वे यीशु के साथ अपने व्यक्तिगत संबंध के बारे में कोई चिंता नहीं किए।

विश्वास के द्वारा धार्मिकता

परमेश्वर का मानवता के लिए अन्तिम संवाद तीन स्वर्गदूतों द्वारा दिए जाने में सनातन सुसमाचार का प्रचार किये जाने के साथ संबंधित है। प्रकाशितवाक्य 14:6–7 इस संवाद का निष्कर्ष क्या है कि सारे जगत को लोग को सुनना चाहिए और इसे सारे जगत के लोग सुनेंगे? यह विश्वास के द्वारा सिर्फ यीशु में धार्मिकता प्राप्त करना है (इफिसियों 2:8–9) जो इस अन्तिम दिन के संवाद को सामर्थ के साथ प्रचार करते हैं, उन्हें अपने आप में इस संवाद की शक्ति का अनुभव प्राप्त करना है। उन्हें यीशु पर वश्वास द्वारा धार्मिकता प्राप्त होती है और क्षमा देने वाला और पापों के उद्धार करने वाले के रुप में जानना और अनुभव करना आवश्यक है। यह सिर्फ तभी संभव होगा जब पवित्र आत्मा जीवन में भरा हो और तब यीशु ख्रीस्त के द्वारा हमारा आज्ञा पालन करना भी संभव हो सकता है। यीशु हम में वास करता है यह देखा जाता है परमेश्वर की सारी आज्ञाओं को पालन करने में। इस संवाद के साथ जगत प्रकाशमान हो उठेगा। (प्रकाशितवाक्य 18:1)

सच्चाई के लिए प्रेम

आज हमारे जीवन में पवित्र आत्मा की उपस्थिति या बिना पवित्र आत्मा का होना इसका क्या प्रभाव पड़ेगा सच्चाई के लिए प्रेम के संदर्भ में, परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हुए और सच्चाई को अपने जीवन में लागू करते हुए? 2 थिस्सलुनियों2:10 कहता है कि ... नाश होने वालों के लिए अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य से से प्रेम नहीं किया जिससे उसका उद्धार होता। वे जो भटकाए नहीं जा सकते,,उन्हीं के पास उनके हृदयों में सच्चाई के लिए प्रेम है। इस प्रेम को हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं? हम इसे तब ही प्राप्त कर सकते हैं जब यीशु पवित्र आत्मा के द्वारा हम में रहता है। रोमियों 5:55 कहता है कि पेंम जो हमारे हृदय में है वह पवित्र आत्मा से प्राप्त होता है। इफिसियों 3:17 हमे बतलाता है कि हम पवित्र आत्मा के द्वारा जड़ पकड़कर और नेंव डालकर रह सकेंगे। यूहन्ना 16:13 में पवित्र आत्मा को सत्य की आत्मा कहा गया है। यह हमे दिखलाता साफ साफ कि एक आत्मिक मसीही होने के लिए यह जरुरी है कि हम सत्य को प्रेम करें। क्या आज हमें सत्य के लिए प्रेम होने में कोई समस्या है परमेश्वर के वचन, भविष्यवाणी के लेखों के लिए क्या कोई समस्या है? हमारे आगे आने वाले समय पर विचार करें; सिर्फ वे ही

जो बाइबल को परिश्रम से अध्ययन करते हैं, और वे जो सत्य से प्रेम करते हैं, वे ही उस शक्तिशाली छल से बचाए जाएंगे जो जगतको अपना बन्धुवा बना लिया है...। क्या अभी परमेश्वर के लोग उसके वचन पर इतना मजबूत हैं कि वे अपने विवेक के प्रमाण के लिए अपने को नहीं देंगे?

परमेश्वर यह नहीं पूछता है कि क्या सभी सच्चाई ढूंढ़ निकाले हैं, परन्तु इसके बदले वह यह पूछता है क्या हम सत्य से प्रेम रखते हैं।

आत्मा का फल या शरीर के काम

पवित्र आत्मा का प्रभाव ही ख्रीस्त का जीवन है आत्मा में। हम ख्रीस्त को देख नहीं सकते और उसे बात नहीं कर सकते, परन्तु उसकी पवित्र आत्मा एक स्थान में जितना निकट है उतना ही निकट दूसरे स्थान में भी है। हर एक जो ख्रीस्त को ग्रहण करता है उसके अन्दर और उसके द्वारा काम करता है। वे जो आत्मा का अन्दर होने का अनुभव करते हैं, वे आत्मा के फल को प्रगट करते हैं. (गलातियो 5:22) आत्मा का फल, प्रेम, आनन्द, शांति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है।इफिसियो5:9 ज्योत का फलःसब प्रकार की भलाई और धार्मिकता, और सत्य है।

गलातिया 5:16 यह हमें दिखलाता है कि पाप की शक्ति पवित्र आत्मा के द्वारा हम में तोड़ी जायगी।

... आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति सक पूरी न करोगे।क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के अधीन न रह। देखें रोमियो 7:23, 8:1 शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इसके जैसे और और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम से पहले ही कह देता हूँ जैसे पहले भी कह चुका हूँ कि ऐसे ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। गलातियो5:19–21

आत्मिक दान

आत्मिक दान के अन्तर्गत हमारा मतलब है, पवित्र आत्मा के काम के द्वारा दिया गया दान जैसा 1 कुरिन्थियों 12:28 और इफिसियों

4:11 में सूचीबद्ध हैः प्ररितों, भविष्यवक्ताओं, प्रचारकों, पास्टरों, शिक्षकों, आश्चर्यकर्म करने वाले, चंगाई देने वाले, सहायता करने वाले, प्रशासकों, अन्य अन्य भाषा बोलने वाले। ये दान संतों की सेवकाई के काम के लिए हथियार के रुप में दिए जाते हैं ये कलीसिया की गवाही मजबूत करते और कलीसिया की अगुवाई में मदद करते हैं। पवित्र आत्मा कुछ विशेष उद्देश्यों के लिए भी वरदान देती हैः ज्ञान और सब प्रकार की कारीगरी में निर्गमन 31:2–6 यास गृह निर्माण विद्या में इतिहास 28:12,19

जब हम यीशु के शिष्य बनना चाहते हैं उन सारी वस्तुओं को जो हमारे लिएहै और जो कुछ हम हैं उसके लिए अर्पित कर देते हैं। इस प्रकार हमारे वरदान और योग्यताएं उतराधिकार के रुप में प्राप्त हुए हैं या हमने सीख लिया है सभी उसी के काम में लगा देते हैं। वह हमें इसके अलावे और भी वरदान दे सकता है या वह हमारे प्राकृतिक गुणों को अच्छा और शुद्ध बना सकता है।

जब हम में पवित्र आत्मा की कमी हो तो क्या हम आत्मिक वरदान प्राप्त कर सकते हैं?

परमेश्वर का चुनाव या लोगों का चुनाव

हमारी कलीसिया में जगत व्यापी प्रजातांत्रिक पद्धति है। लेकिन एक लोकप्रिय प्रजातंत्र के समान इसे कभी नहीं समझा गया। हमारे मतदान (वोट) करने का वास्तविक उद्देश्य होता है प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के वचन को सुने और अपना मतदान उसी के अनुसार करे। परमेश्वर के वचन को सुनने का मतलब यह होता है कि हम अपने मतदान द्वारा परमेश्वर की इच्छा को पूरी करते हैं। किसी भी बोर्ड मिटिंग के पहले हम अवश्य प्रार्थना कर लें। प्रायः वोट देने के पहले एक अवसर दिया जाता है व्यक्तिगत प्रार्थना के लिए, इससे यह साफ हो जाता है हर व्यक्ति के लिए कि परमेश्वर उन्हें कौसे वोट डालने के लिए कहता है। नहेम्याह नू कहाः तब मेरे परमेश्वर ने मेरे मन में यह उपजाया...। और एलेन ह्वाइट ले नहेम्याह के एक अध्याय के बारे कहाः और जैसे ही उसने प्रार्थना किया, उसके मन में एक पवित्र उद्देश्य काम करने लगा...।

क्या एक शारीरिक और सांसारिक मसीही परमेश्वर की आत्मा को सुनेगा? यदि वह बिना सोचे समझे और प्रभु के बिना समर्पण किए हुए करता है तो निश्चित रुप से उसे उतर नहीं मिलेगा भजन संहिता 66:18;25:12 यदि कोई शारीरिक और सांसारिक मसीही है, और सच्चे

मन से अपने उतम ज्ञान के आधार पर वोट देता है, तो मनुष्यों के बोलने के अनुसार यह ठीक है। परन्तु जो ततक्षण मानवीय समझौता किया जाता है तब यह चालाकी छल और पाप से करना हो जाता है परमेश्वर के काम में अगुवों का बड़ा पभाव होता है। यह निश्चित तौर से एक बड़ा फर्क ले आता है और यदि भाइयों और बहनों की अगुवाई हो जिन्हें ईश्वर की ओर से बुलाहट हुई हो या जिन्हें मानव वोट द्वारा चुना गया हो इसमें भारी अन्तर हो सकता है।

जब मैं एक पुस्तक पढ़ रहा था जो प्रार्थना के बारे था, मैंने अनुभव किया कि हमें परमेश्वर से पूछना चाहिए कि हमे किस मार्ग में आगे बढ़ें। (भजन सहिता 32:8) परमेश्वर की धीमी आवाज को सुनने के द्वारा मेरा सारी जीवन बदल गया। मैं इस अनुभव को एक लेख द्वारा प्रस्तुत किया जो सिसर्फ जर्मन भाषा में है।

एक अच्छा उपदेश सुनने के लिए भी है कुर्त हासिल की पुस्तक मैं कैसी सही निर्णय ले सकूंगा? यह भी सिर्फ जर्मन भाषा में उपलब्ध है। और एक बहुत ही अच्छा उपदेश हेनरी डूमोन्ड लिखित पुस्तक में मिलता हैः हाउ कैन आई नोव गोड्स विल? अर्थात मैं परमेश्वर की इच्छा को कैसे जान सकूंगा? यह भी सिर्फ जर्मन भाषा में है।

यहां पर एक अभिज्ञता है जो अक्टूबर 23, 2014 में घटी थीः जो आस्टिया के कन्टी लाइफ इन्सटीच्यूट सेन्टर कारिन्थिया में घटी थी। वे एक निर्णय लेने के समस्या में अटके हुए थेः क्या हम एक अतिरिक्त निर्माण करें? क्योंकि इसके विरुद्ध में अनेक प्रश्न उठ रहे थे। सबसे विशेष सवाल थाः इस विषय पर परमेश्वर की क्या इच्छा है? हम हां और नहीं और विवाद नहीं किए, परन्तु इसके बदले 10 दिनों तक प्रार्थना किया ताकि परमेश्वर अपनी आवाज सुनने के लिए हमें तैयार करे, और यह कि वह इसका उतर हमें अक्टूबर 23 की प्रार्थना सभा में दे कि अतिरिक्त भवन का निर्माण करें या नहीं।

प्रार्थना सभा 20 व्यक्तियों से अधिक के साथ आरम्भ हुआ। प्रार्थना में हिस्सा लेने के बाद एक व्यक्ति चुपचाप परमेश्वर से कहा कि वह उसे बतलाए कि वे इसे बनाऐंगे कि नहीं। और परमेश्वर ने व्यक्तिगत उतर को इस तरह एक दूसरे के साथ बांटाः एक कागज के टुकड़े पर उन्हें लिखना था + यएि वे बनाएंगे, यदि नहीं बनाएंगे तो –, यदि उनके पास कोई उतर न हो तो उन्हें लिखना था 0 और वे एक प्रश्न चिन्ह? लगाएंगे जब वक उतर की निश्चयता न हो। और प्रतिफल परमेश्वर अदभुत रुप से अगुवाई कर रहा है इसका चिन्ह होगाः 14 + चिन्ह आए, 0 चिन्ह 6 और 4 बिना लिखा हुआ कागज के

टुकड़े आए। इस तरह से जो कागज के टुकड़े स्पष्ट नहीं उनकी गिनती नहीं हुई। इस प्रकार परमेश्वर की अगुवाई बिल्कुल साफ था कि निर्माण किया जाए मैं विश्वास करता हूँ कि हम सीधे तौर से अन्तिम दिनों में परमेश्वर की अगुवाई की खोज अधिक से अधिक करें।

योएल/:28–29 यह दर्शाता है। एलेन ह्वाइट टिप्पणी करती हैं: हम व्यक्तिगत तौर से अपने हृदय में उसकी बोलते हुए सुने। जब सब अन्य आवाज शांत हो जाएं, और तब इस शांति में हम उसके सामने इन्तजार करें, आत्मा की शांति परमेश्वर की आवाज को अधिक निश्चित एवं स्पष्ट बनाती है। वह हमें आज्ञा देता है, चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूं। (भजन संहिता 46:10)

धन या रुपया

आत्मिक और सांसारिक एवं शारीरिक मसीहियों के बीच में धन या रुपया जमा करने और इसके व्यवहार करने के संबंध में क्या अन्तर है? क्या हम अपने आप को धन या रुपए के साधनों को अपनासमझते हैं या हम अपने को परमेश्वर का भंडारी मानते हैं? धन या रुपए का लालच और धन और रुपए का प्रदर्शन या दिखावे का प्रेम इस जगत को चोर और डाकुओं का खोह बना दिया है। पवित्र शास्त्र बाइबल दर्शाती है कि लालच और सताहट यीशु के ठीक दूसरे आगमन के पहले तक कायम रहेगा।

परमेश्वर का भय मानने वालों को परमेश्वर के दूतगण सुरक्षा प्रदान करते हैं

परमेश्वर के दूत, परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों के बचाते हैं। यहोवा के ढरवैयों के चारो ओर उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाते हैं। (भजन संहिता 34:7)

ख्रीस्त का अनुशरण करने वाले हर एक व्यक्ति के लिए एक एक रक्षक दूत नियुक्त किया गया है। ये स्वर्गीय रक्षक धर्मियों को दुष्टों की शक्ति से बचाए रखते हैं। एलेन ह्वाइट द ग्रेट बन्टोवर्सी पृ. 512.2 जब यह परमेश्वर के भय मानने वाले लोगों के बारे बातें करता है, ख्रीस्त के पीछे चलने वाले और धर्मी लोग परमेश्वर की संरक्षा के अन्तर्गत होते हैं, क्या इसका अर्थ यह है कि यह उन सारे लोगों पर लागू होता है जो अपने आप को मसीही के रुप में देखते हैं? क्या यह उनके लिए भी लागू होता है जिन्होंने अपने जीवन को पूरी रीति समर्पित नहीं किए हैं? यह बच्चों के लिए सच है, क्योंकि यीशु ने मती 18:10 में ऐसा कहा है देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना;

क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि स्वर्ग में उनके दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं। दाउद जो पूरी रीति से अपने जीवन को परमेश्वर के लिए दे दिया था, यह जानते हुए कि उसके लिए डरने की कोई बात नहीं थी। उसने कहाः यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं फिर किस से करूं? (भजन संहिता 27:1)

मैं सिफारिस करता हूँ कि आप एलेन ह्वाइट लिखित महान संघर्ष नामक किताब के 31वें अध्याय को पढ़ें जिसमें अच्छे स्वर्गदूतों की सेवकाई के बारे लिखा हुआ है परमेश्वर को हर एक बच्चे के लिए यह आन्नद की बात है।

अन्तिम विचार

हमने सिर्फ नए क्षेत्र को कुछ हिस्सों को ही छूवा है। अभी भी विश्वास और जीवन में ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जिन्हें शामिल किया जा सकता है। इन सारे बातों के लिए निम्नलिखित बातें सच हैः

जब हम अभी पुनः भिन्नताओं को दुहराते हैं, तब हम देखते हैं कि कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जहां पर पवित्र आत्मा के साथ बड़ा लाभ न हो। दूसरी ओर, एक भी ऐसा क्षेत्र नहीं जहो पर बिना पवित्र आत्मा के कोई बड़ा लाभ मिलता हो। क्या यह हमारे लिए एक बड़ा प्रेरणादायक बात नहीं हो सकती है कि प्रतिदिन हम अपने जीवन को परमेश्वर के लिए सौंप दें और प्रार्थना करें कि हमें पवित्र आत्मा से भर दे?

कुछ वर्ष पहले की बात है एक बोइंग 707 वायुयान टोकियो हवाई अड्डा से लंदन के लिए उड़ान भरी। यह बहुत अच्छा उड़ान था। आसमान बिल्कुल साफ था और धूप निकली हुई थी। शीघ्र ही यात्रीगण जापान के पहाड़ फुजी को देख सकते थे। अचानक पायलेट के मन में एक विचार उठा कि वह वायुयान को पहाड़ के चारो ओर एक चक्कर लगाएगा ताकि यात्रीगण इस विलक्षण दृश्य को देखकर आनन्द उठाएं।

उसने निर्धारित मार्ग को छोड़कर एक दृष्टिगत उडान के दरमियान पायलोट भूमि सुरक्षा केन्द्र से अपने आप को अलग कर लेता है और पूरी तरह से वह जो कुछ आंखों से देखता है उसी पर निर्भर करता है। पायलोट ने नीचे देखा कि वायुयान नीचे पहाड़ के बहुत करीब पहूंच गया है। उसका उंचाई मापने का क्षेत्र अल्टीमीटर दिखलाया कि 4000 मीटर की उंचाई पर आ गया है। वह एक चीज को नहीं देखा वह था कि वहा की गिरावट और प्रचण्ड वायु की झोंके को नहीं देख सका, जो फुजी पहाड़ के चारो ओर तीव्रता से बह रहा था।बोइंग 707 यान इस तेज हवा का सामना नहीं कर सकता था। वायुयान हवा

में ही टुकड़ा टुकड़ा हो गया और पहाड़ पर धड़ाके के साथ गिर पड़ा और सभी यात्रियो की मृत्यु हो गई

शारीरिक या सांसारिक मसीही गण दृष्टिगत उड़ान के तौर पर जीवन व्यतीत करते हैं सबसे अच्छा अभिप्राय होने के बावजूद भी वह असफल होते जायगा। आत्मिक मसीही पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेम और भरोसा के साथ अपने प्रभु के साथ संबंध बनाना है, जो उसे सुरक्षित स्थान पर पहुंचा सकता है।

प्रार्थना : स्वर्ग वासी, आप को धन्यवाद पवित्र आत्मा के द्वारा प्रभु यीशु का हमारे भीतर निवास करने के लिए, जो हमारे अन्दर और काम में एक साकारात्मक बदलाव ला सकता हैं कृपया मेरी आंखों को कुछ और अधिक खोल दे पवित्र आत्मा के काम के लिए कृपया मुझे जीवन की परिपूर्णता उसके द्वारा दें, जिसे यीशु हमें देना चाहता है। कृपया मेरी मदद करें कि मैं इस समस्या का समाधान अगले अध्याय में कर सकूं और इसे अभ्यास में ला सकूं। धन्यवाद आमीन।

अध्याय 5

व्यवहारिक अभिज्ञता की कुंजी

किस प्रकार के परमेश्वर के समाधान को अपने लिए लागू और अनुभव करुँ? मैं कैसे प्रार्थना करूँ कि निश्चित हो सकूँ पवित्र आत्मा से भरे जाने के लिए?

प्राार्थना और पवित्र आत्मा से भर जाना

यह विशेष बात है कि हम इस यात्रा में विश्वास के द्वार आगे बढ़ते हैं और हम विश्वास ही से पवित्र आत्मा की मांग करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करने के बाद हमें भरोसा करने की आवश्यकता है और यह निश्चित हो लाएं कि प्रभु हमारे प्रार्थनाओं का उतर देता है और विश्वास करें कि उसने पवित्र आत्मा हमे पहले ही दे चुका है जब हम प्रार्थना कर रहे थे।

(गलातियों 3:14) कहता हैः ... हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है। एक दूसरे अनुवाद में ऐसा कहता हैः... कि हम पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा को ख्रीस्त में विश्वास के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

परमेश्वर ने हमें बड़ी सहायता प्रदान किया है ताकि हम अपने स्वर्गीय पिता को सरलतापूर्वक भरोसा कर सकते हैं। इसे हम कहते है। प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना।

प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना

सबसे पहले, यहां एक सहायक उदाहरण हैः आइए कल्पना करें कि मेरा बच्चा स्कूल में फांसीसी भाषा में अच्छा नहीं है। मैं अपने बच्चे को फ्रेंच पढ़ने के लिए उत्साहित करूँगा कि वह कठिन परिश्रम करे। मैं उसे प्रतिज्ञा देता हूँ कि वह अपने रिपोर्ट कार्ड में अच्छे अंको से पास करेगा तो वह मुझसे 20 डॉलर करीब 12 सौ रुपया प्राप्त करेगा। बच्चा कठिन परिश्रम से पढ़ता है। मैं भी उसे फ्रांसीसी भाषा सीखने में मदद करता हूँ और वह सच में अच्छा नम्बर प्राप्त कर लेता है। अब क्या होता है? और जब बच्चा स्कूल से घर आता है और सामने के दरवाजे से आता है और जोर से पुकारता हैः पिताजी 20 डॉलर! वह इतना निश्चित क्यों है कि उसे 20 डॉलर प्राप्त होंगे? क्योंकि उसे एक प्रतिज्ञा दिया गया था और उसने उस काम को पूरा किया जिसे करने के लिए कहा गाया था। सच में, ऐसा करना आज अधिकांश लोगों के लिए सामान्य बात है।

परन्तु क्या ऐसा हो सकता है कि उस वक्त मेरे पास 20 डॉलर न हो। क्या ऐसा हो सकता है कि परमेश्वर ने कुछ देने की प्रतिज्ञा किया है और उसके पास नहीं है? असम्भव।

या क्यों ऐसा हो सकता है कि मैं अपनी प्रतिज्ञा को वापस लेकर ऐसा कह सकता हूँः मैं एडुकेशन नामक किताब में पढ़ता हूं कि बच्चों को पैसों की लालच देकर पढ़ने के लिए उत्साहित न करें। इसलिए अब मैं तुम्हें 20 डॉलर नहीं दे सकता हूं। क्या परमेश्वर बाद में अपना मन को बदलता है? असम्भव! यह हम देख सकते हैं कि जब हमारे लिए परमेश्वर से प्रतिज्ञा किया गया है और उसे मैं उसके लिए आवश्यक बातों को पूरा किया हूँ, तब सिर्फ एक ही संभावना है– कि हम उस प्रतिज्ञा को प्राप्त करेंगे।

परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा के द्वारा हमें उत्साहित करना चाहता है कि एक दिशा में बढ़ें– उदाहरण के लिए पवित्र अत्मा को प्राप्त करना, जो हमारे जीवन में परमेश्वर की शक्ति को प्रदान करता है। वह इसे हमारे लिए सरल बनाना चाहता है ताकि उस पर हम भरोसा कर सकें। भरोसा विश्वास का हृदय है।

अब हम कुछ बाइबल के प्रमुख पदों को पढ़ना चाहेंगे जो (1 यूहन्ना 5:14–15) में मिलता है प्रतिज्ञाओं के लिए प्रार्थना करनाः हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है।

परमेश्वर एक सामान्य प्रतिज्ञा देता है कि वह उन प्रार्थनाओं का उत्तर देता है जो उसी के अनुसार होता है। परमेश्वर की अच्छा आज्ञाओं और प्रतिज्ञाओं में व्यक्त किए गए हैं। हम उन पर अपनी प्रार्थनाओं में निर्भर कर सकते हैं। तब 15 पद में इस तरह कहते हुए आगे बढ़ता हैः जब जानते हैं कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं कि जो कुछ हमने उससे मांगा, वह पाया है।

एक अन्य अनुवाद ऐसा लिखता हैः यदि हम जानते हैं कि परमेश्वर सुनता है तो जो कुछ हम मांगते हैं, हम जानते हैं कि उसे हमने पा लिया है।

इसका अर्थ क्या होता है? हमारी प्रार्थना जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होता है उनका उतर उसी समय प्राप्त होता है जिस क्षण हम उन्हें परमेश्वर से मांगते हैं। परन्तु भावनाओं में में होकर किसी बात को देख नहीं पाते। हमारी प्रार्थनाओं को उतर विश्वास द्वारा प्राप्त होता है, हमारी भावनाओं के द्वारा नहीं। भावनाएं बाद में आती है।

उन लोगों के साथ प्रार्थना करने में जो लोग तम्बाखू और इससे बने अन्य वस्तुओं और मदीरा पीने की बूरी लतों में फंसे हुए हैं जिन्हें मैं जानता हूं: जब वे इसके छुटकारे के लिए प्रार्थना करते हैं उन्हें कुछ कुछ दिखाई नहीं देता है। उन्हें उतर विश्वास के द्वारा प्राप्त होता है। परन्तु कुछ घंटों के बाद वे यह देख पाते हैं कि अब उन्हें तम्बाखू या मदिरा के लिए कोई लालसा नहीं रह गया है। इसी क्षण वे अपने प्रार्थना के लिए उचित उतर प्राप्त कर लिए हैं।

यीशु ने मरकुस 11:24 में कहा हैः इस लिए मैं तुम से कहता हूं कि जो कुछ तुम प्रांर्थना करके मांगोगे, तो प्रतीती कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा।

एलेन जी. ह्वाइट ने कहा हैः हमें आशीर्वाद के लिए बाहरी प्रमाण देखने की जरुरत नहीं है। यह दान तो प्रतिज्ञा में ही दिया गया है और भरोसे के साथ अपने कामों में जा सकते हैं क्योंकि परमेश्वर ने जो कुछ भी प्रतिज्ञा किया है वह उसे करने की योग्यता रखता है, और

वह दान जो हमारे पास पहले से है, वह उस समय क्रियाशील होगा जब इसकी आवश्यकता सबसे अधिक होगी।

इस लिए हमें बाहरी चिन्ह की खोज नहीं करनी चाहिए। यहां पर इसका अर्थ है भावनात्मक अनुभव की खोज करना। रोजर जे. मोरनियू ने कहा हैः दुष्ट आत्मा लोगों को ख्रीस्त और नबियों की बातों को सुनने के बदले अपनी भावनाओं को सुनने के लिए उत्साहित करता है। कोई निश्चित तरीके से दुष्टात्मा लोगों के जीवन को अपने नियंत्रण में कर लेता है उनको बिना जाने कि क्या हो रहा है।

प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना परमेश्वर के खजाने को हमारे लिए खोलता है। हमारा प्रेमी स्वर्गीय पिता हमारे लिए खजाने में एक ऐसा खाता खोलता है जो कभी समाप्त नहीं होता है। चेले उसे बड़ी वस्तुओं की आशा कर सकते हैं यदि वे उन प्रतिज्ञाओं पर विश्वास रखते हैं।

दो श्रेणी की प्रतिज्ञाएं

यह महत्वपूर्ण है कि बाइबल की प्रतिज्ञाओं के बीच सावधानी पूर्वक अन्तर दिखलाना जरुरी हैः आत्मिक प्रतिज्ञाएं– पाप क्षमा के लिए, पवित्रात्मा के लिए उस को करने के लिए सामर्थ– ये हमेशा उपलब्ध हैं पढ़ें (प्रेरित क्रिया 2:38–39) परन्तु सांसारिक आशीर्वादें, जो सिर्फ जीवन के लिए समय समय पर या बिना समय के दिए जाते हैं जैसे परमेश्वर का एपाय उतम समझता है दिए जाते हैं।

एक उदाहरणः (यशायाह 43:2) जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग संग रहूंगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी, जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।

परमेश्वर ने अद्भुत तरीके से इन प्रतिज्ञाओं को पूरा किया उन तीन मित्रों के लिए जो आग के भट्ठे में डाले गए थे दानिएल 3 अध्याया परन्तु दूसरी ओर धर्म सुधारक हस और जेरोम आग से कन्सेटेन्स नामक जगह में जिन्दा जला दिए गए। हम ऐसा कह सकते हैं कि उनकी प्रार्थना सुनी नही गई। परन्तु कुछ भी हो, क्या उनकी प्रार्थनाओं का उतर एक अद्भुत तरीक से दिया गया जिसे हम नही जानते हैं? क्यो? पोप का एक लेखक इन दिनों शहीदों की मृत्यु को इस तरह वर्णन करता हैः जब उनकी घड़ी आई दोनों ने स्थिर मन से सब कुछ सह लिए। वे आग के लिए अपने को ऐसे तैयार किए मानो वे किसी विवाह के भोज में सामिल होने जा रहे हैं। वे आग की जलन की दर्द से नहीं रोए। जब आग की लपट उपर उठने लगी, वे गीत गाने लगे; और उनके गीत को आग की भयंकर लहर डरा कर रोक

नहीं सकी। यदि किसी सामान्य व्यक्ति को जलाया जाएश तो वे चिल्ला उठेंगे। उनकी गतिविधि से ऐसा लगता है परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया, इस तरह से नहीं जैसा हम अपनी आंखो से देख सकते हैं, यह मुझे दिखलाता है सांसारिक प्रतिज्ञाएं अभी भी हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

उत्तर के लिए धन्यवाद

अब दूसरी महत्वपूर्ण बात पर हम आते हैं– जब हम प्रार्थना द्वारा जो मांगते हैं उसी क्षण हमारा निवेदन स्वीकार किया जाता है, तब हमारे लिए यह उचित होता है कि हम परमेश्वर को धन्यवाद दें तुरत उसी समय।हमारा इसी क्षण धन्यवाद देना परमेश्वर के प्रति भरोसा को दिखलाता है कि उसने हमारी प्रार्थना का उतर दिया है और हम आशा करते हैं कि यह उस समय पूरा हो जब हम इसे अत्यधिक चाहते हैं। कुछ विश्वासी कुछ और बात पर ध्यान देते हैं प्रार्थना करने के तुरत बाद। पर अनेक विश्वासियों के लिए यह ठीक वैसा ही है जिस तरह एलियाह ने अनुभव किया था परमेश्वर आंधी में नहीं था, वह भूकम्प में आग में नहीं था, परन्तु उस दबी हुई धीमी आवाज में थी (1 राजा 19:11–12) यही अनुभव मेरे साथ भी हुआ था।

लम्बे समय के बाद मैंने सोचा कुछ भी नहीं हुआ। तब मैंने अचानक ध्यान दिया कि बहुत सारी चीजें हो चुकी हैं मुझ में जिन्हें मैं जानता भी नहीं था।

मैंने अपने विचार को बदला

इसका अर्थ हुआः इस समय यह आवश्यक हुआ कि मैं अपने विचार को बदलूं:... परन्तु तुम्हारे मन में नए हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदल जाए... (रोमियो 12:2)

अब ऐसा कहना उचित होगाः धन्यवाद कि तूने प्रार्थना का उतर दिया। धन्यवाद मेरे प्रार्थना को बहुत पहले उतर देने के लिए, और धन्यवाद कि मैं सही समय में इसका अनुभव करूँगा।

यह आत्म कार्यकुशलता नहीं है। आत्म कार्यकुशलता के साथ मैं अपने आप को विश्वास दिलाने का कोशिश कर रहा हूँ। जब मैंने प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना किया है, तब मेरे परिवर्तित सोच का आधार ईश्वरीय होता है, क्योंकि मुझे विश्वास के द्वारा पहले ही उत्तर मिल चुका है। इस मामले में, यदि मैं अपने विचार को नहीं बदलता हमें, तब मैं परमेश्वर को दिखलाता हूँ कि मैं उस पर भरोसा नहीं करता परन्तु

अपने को बहुमूल्य समझता हूँ, इस चाल के द्वारा मैं परमेश्वर को झूठा बना रहा हूं और इस प्रकार मैं कुछ भी प्राप्त नहीं करूँगा।

यह भी एक विशेष बात है कि मैं उसी के अनुसार का करता हूँ, जौभी कि मैं कुछ भी देख नहीं सकता। परमेश्वर हमेशा विश्वास करने के लिए परिपूरक बनता है। वह चाहता है कि हम उस पर भरोसा रखें। इस्राइलियों का यर्दन नदी पार करने के बारे सोचें। सबसे पहले याजको को पानी में कदम रखना था और तब नदी का पानी विभाजित हो जाना था। नमान को चंगाई प्राप्त करने के पहले सात बार पानी में डुबकी लगाना था।

शायद आप कह रहे होंगेः मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं ऐसा करने के बारे में सोच भी नहीं सकता। कृपया याद करें कि अनेक ऐसी चीजें हैं जिनका हम वर्णन नही कर सकते। आज के दिन तक, हम नहीं जानते बिजली क्या है, जौभी कि हम इसका उपयोग करते हैं। आज के दिन तक, हम यह नहीं जानते कि बच्चे बोलना कैसे सीखते हैं। लेकिन वे सभी बोलना सीख लेते हैं। प्राकृतिक जगत में हम निरंतर आश्चर्यजनक चीजों से घिरे हुए हैं जो हमारे समझ से बाहर की बात है। तो क्या हम आत्मिक जगत में भी रहस्यों को पाकर आश्चर्यचकित नहीं होते। जिन्हें हम भलीभांति समझ नहीं सकते? (एलेन ह्वाइट, एडुकेशनपृ. 170.1)

अब चलिए हम (नीतिवचन 3:5–6) के बारे सोचेंः तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरण सत्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगी यहां पर हम साफ साफ देख पाते हैं आवश्यक बातों को कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा में हमारे मार्ग को कैसे दिखलाता है। हर एक बात जो पहले से ही आवश्यक है वे भी एक आज्ञा है। यदि हम इस बात पर निश्चित नहीं हैं कि हमने पहले ही आवश्य बात को पूरा कर चुके हैं, तब हम प्रार्थना कर सकते हैं कि उसको पूरा की इच्छा प्रगट करते हुए इस निश्चयता के साथ कि प्रभु हमें तुरंत उत्पन्न होगा ... पर यदि आप चाहते हैं कि आप इच्छुक हों, तब परमेश्वर काम को आप के लिए पूरा करेगा...। (एलेन ह्वाइट, थॉटस फ्राम द माउन्ट ऑव ब्लेशिंग पृ. 142:1)

कुछ छोटी बातें हैं जो हमें सहायता कर सकते हैंः क्या हम जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं, जब हमने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के साथ प्रार्थना किया है, क्या आवश्यक वस्तुओं को हमने पूरा किया है और तब उत्तर पाने में संदेह करते हैं? हम परमेश्वर को झूठा बना रहे

हैं। किसी भी हालत में हम ऐसा नहीं कर सकते हैं। इस मामले में, ऐसा प्रार्थना करें, प्रभु मैं विश्वास करता हूँ, मेरे अविश्वास में मेरी सहायता कर। तब भरोसा करें!

प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना में एक उपयोगी परामर्श है, एलेन ह्वाइट द्वारा लिखित पुस्तक एडुकेशन के विश्वास और प्रार्थना के अध्याय में।

पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करना

मैं सोचता हूँ हमारे पास सबसे अच्छी योग्यता है पवित्र आत्मा के साथ भरे जाने के लिए प्रार्थना करने का। लेकिन हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि हम परमेश्वर को हमारी इच्छा पूरा करने के लिए बाध्य न करे, परन्तु उसके प्रतिज्ञाओं और भरोसे पर विश्वास करें।

पवित्र आत्मा पाने के लिए प्रतिज्ञा

पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए प्रभु ने अद्भुत प्रतिज्ञाएं दी हैः (लूका 11:13) अतः जब बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा।

क्या यहां पर हमारा स्वर्गीय पिता एक बन्धन युक्त प्रतिज्ञा नहीं दिया है, इस अद्भुत प्रतिज्ञा में आवश्यक बात यह हैः मांगो! फिर भी यीशु का कहने का अर्थ यह है कि सिर्फ एक ही बार मांगना नहीं परन्तु लगातार निवेदन करना है।

कुद भी हो, यहां पर इस संबंध में देखना महत्वपूर्ण है। हमें कुछ दूसरे पद स्थलों को भी पढ़ना चाहिए, जो इसी बात के बारे बोलते हैं, उदाहरण के लिएः

प्रेरित क्रिया 5:32 हम इन बातों के गवाह हैं और वैसे पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया जो उसकी आज्ञा मानते हैं।

यहां जो आवश्यक बात हैः आज्ञापालन! यहां हम देख सकते हैं कि हम सिर्फ एक ही पदस्थल के द्वारा अपने आप को सहारा नहीं दे सकते हैंः हमें प्रतिज्ञा के संबंध में भी विचार करना है। इसका मतलब यह नहीं कि सिर्फ एक बार आज्ञापालन करना है उस वस्तु पर जो हमारे लिए अच्छा लगे। लेकिन इसका अर्थ है उसकी आज्ञाओं को माननाः जो हमारा अद्भुत उद्धारकर्ता और मित्र भी है। आज्ञा मानना आनन्द उत्पन्न करता है। हर सुबह को आज्ञा मानने वाले हृदय के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना करे कि प्रभु आपको उन सारी चीजों को

करने के लिए इच्छा प्रदान करें जिनको वह चाहता है और इसे पूरा करने के लिए आप की सहायता करे।

(यूहन्ना 7:37) यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए

यहां पवित्र आत्मा की चाह के विषय लिखा गया है। यदि आप की इच्छा न हो, या आप सोचते हैं कि आप के पास बहुत कम इच्छा है, तब आप इच्छा प्राप्त करने के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। परमेश्वर की इच्छा के अनुसार यह एक निवेदन है, जिसे तुरन्त उत्तर दिया जायगा जब हम अपने अद्भुत परमेश्वर से मांगते हैं तो वह हमारे भीतर इच्छा उत्पन्न करेगा और काम को पूरा करेगा। हम परमेश्वर के साथ निकट का संबंध रखने की इच्छा के लिए भी प्रार्थना कर सकते हैं, और हमारे सम्पूर्ण हृदय से उसे प्रेम करने के लिए, उसे आनन्द के साथ सेवा करने, यीशु के लिए बढ़ती इच्छा और उसके शीघ्र आगमन और परमेश्वर के राज्य में पुनः मिलने, परमेश्वर के वचन को पढ़ने और इससे सीखने और साथ ही साथ लोगों की मदद और खोए हुओं को बचाने में मदद करने के लिए प्रार्थना कर सकते है।

यूहन्ना 7:38–39 जो मुझ पर विश्वास करेगा जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी। उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे।

यहां पर शर्त हैः विश्वासः यहां हम देखते हैं यीशु ख्रीस्त में हमारा विश्वास, परमेश्वर में हमारा भरोसा, यहां पर पवित्र आत्मा प्राप्त करने का का एक विशेष पूर्व आवश्यक काम देखते हैं। परन्तु जब हम प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना करते हैं, तब विश्वास करना सरल हो जाता है।

गलातियों 5ः 16 मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।

यहां पर वास्तव में हमारे लिए एक प्रतिज्ञा है, जिसे एक आज्ञा के जैसा दर्शाया गया है। जब परमेश्वर चाहता है कि हम आत्मा में चलें तब इसका अर्थ साफ हो जाता है कि वह मुझे पवित्र आत्मा से भर देना चाहता है। और वह यहां पर दिखलाता है कि जब हम पवित्र आत्मा से भरे जाते हैं, तब हम अपने लालसाओं के कृपा में आगे कभी नहीं रहते। पवित्र आत्मा हम में पाप की शक्ति को तोड़ डालता है (रोमियों 8ः 1–17), विशेष कर पद 2 पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे शरीर के काम मार डाले जाते हैं रोमियो 8:13 पौलुस के बारे में सोचें, जो

अपने विषय में कहा हैः मैं प्रतिदिन मरता हूँ।। यह कुछ ऐसा है जो अद्‌भुत रुप से अति उपयोगी है जो शरीर के कामों के अन्तर्गत हमें रहने नहीं देता। (गलातियों 5:18–21) लेकिन यह आत्मा के फलों की वृद्धि में मदद करता है। (गलातियों 5:22)

हम पाप की तुलना इस तरह से कर सकते हैं कि यह हमारे जीवन को भेदने की योग्यता नहीं रखता जब हमारी दोनो आंखें देखने योग्य हैं,। जब हम पवित्रात्मा से भरे जाते हैं, आप शरीर की लालसाओं को पूरा नहीं करेंगे।

(इफिसियों 3:16–17) कि वह अपनी महिमा धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपनी भीतरी मनुष्यता में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ; और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे ह्रदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ।

शायद हम लम्बे समय तक किसी शक्ति पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। यह जैसे प्रकृति में होती है वैसे ही हो सकती है। जाड़े के मौसम में पेड़ के सारे पत्ते झड़ जाते हैं और बसन्त ऋतु में हरे हो जाते हैं। इस पुनर्जीवन के काम में अत्यधिक शक्ति का उपयोग होता है। परन्तु हम उन्हें देख नही सकते या न सुन सकते हैं। इसी तरह से यह मेरे लिए थी। मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि वह मुझे बहुतायत से शक्ति प्रदान करता है। दूसरा उदाहरणः कुछ दशकों से हम जानते हैं कि हमारे शरीर में बिजली के करेन्ट होते हैं। वे हमारे शरीर में हैं। परन्तु इनसे हम अनजान रहते हैं।

इफिसियों 5:18 ... आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ या अपने आप को निरंतर और बार बार पवित्र आत्मा से भरते जाओ।

प्रेरितों के काम 1:8 परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयगा तब तुम सामर्थ पाओगे और तुम मेरे लिए गवाह होगे।

शिष्यों को आदेश दिया गया था कि जब तक सामर्थ न आए इन्तजार करें। वे बिना कुछ काम के ही नहीं रुके रहे। वे सच्चे मन से प्रार्थना करते रहे ताकि लोगों से प्रतिदिन अपने दैनिक जीवन में मिलने के लिए सामर्थ प्राप्त करें और पापियों को ख्रीस्त यीशु तक ले आने के लिए उचित बात बोल सके। वे अपने सारे भेद भावों को किनारे रख दिए और सामर्थ की अभिलाषा करते रहे। हम भी इस प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना कर सकते हैं।

कोई निश्चित परिणाम नही...?

एक जवान परामर्श के लिए इधर उधर देख रहा था, क्योंकि वह चाहता था कि वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएं वह इसके लिए संघर्ष कर रहा था। पास्टर ने उसे पूछाः क्या आप ने सम्पूर्ण रुप से अपनी इच्छा को परमेश्वर के लिए दे दिया है? मैं नहीं सोचता हूँ कि मैं सम्पूर्ण रुप से दिया है। तब पास्टर ने कहा अच्छी बात है, तब प्रार्थना करने से कोई लाभ नहीं होगा, जब तक आप पूर्ण तौर अपनी इच्छा को परमेश्वर के लिए सौंप नहीं देते। क्या आप इच्छा को परमेश्वर के लिए अभी सौंप देना चाहते हैं? उसने उमर दिया, मैं नहीं कर पाऊँगा। क्या आप चाहते हैं कि आप का यह काम परमेश्वर कर दे? उसने उतर दिया, हाँ। तब आप उसे करने के लिए कहें। उसने प्रार्थना कियाः हे परमेश्वर, मुझे खाली करो मेरी अपनी इच्छाओ से। मुझे ऐसा कर दे कि मैं सम्पूर्ण रुप से अपनी इच्छा को तेरी इच्छा में सौंप दूँ। मेरी इच्छा को मेरे लिए हटा दें। मैं यीशु के नाम प्रार्थना करता हूँ। तब फिर पास्टर ने पूछाः क्या ऐसा हुआ? उसने कहा, अवश्य हुआ। उसने कहा, मैंने परमेश्वर से प्रार्थना उसकी इच्छा के अनुसार मांगा और मैं जानता हूँ कि उसने मुझे उतर दिया और मुझे जो चाहिए था वह मैं पा गया। (1 यूहन्ना 5:14) हां, ऐसा ही हुआ– मेरी इच्छा उतार दी गई थी। तब पास्टर ने कहाः अब आप पवित्र आत्मा से बप्तिस्मा प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करें। उसने प्रार्थना कियाः ऐ मेरे परमेश्वर, मुझे अभी अपने पवित्र आत्मा से बप्तिस्मा दे। मैं यीशु नाम से प्रार्थना करता हूँ। और वह तुरन्त हो गया। जब उसने अपनी इच्छा को अर्पित कर दिया।

पहले और पीछे में बड़ा अन्तर

जौभी कि मैं प्रतिज्ञाओं के साथ प्रार्थना करने में लम्बे समय से परिचित था और विशेष परिस्थितियों में इसका उपयोग किया और पार्थनाओं के लिए अद्‌भुत उत्तर का अनुभव किया, मैंने अनेक वर्षों तक सोचता रहा कि यह अच्छा था कि विशेष प्रतिज्ञाओं को बिना लिए सामान्य रुप से पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करता था। अब कुछ वर्षों से मैं प्रतिदिन प्रतिज्ञाओं के साथ पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करता हूँ, इसलिए मैं प्रार्थना के बाद निश्चयता प्राप्त किया कि अब मैं पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हूँ। और एक अनुभव के द्वारा अक्टूबर 28, 2011 को मैंने अपने पहिले और पिछले जीवन में बड़े अन्तर का एहसास हुआ।

जब से मैंने प्रतिज्ञाओं के साथ प्रार्थना करना आरम्भ किया, परमेश्वर के साथ मेरा संबंध और अधिक निकट का हो गया और अब यीशु मेरे और नजदीक आ गया और मेरे लिए वह महान हो गर्या यह सिर्फ एक अनुभव करने के विषय ही नहीं है।: मैं इसे निम्नलिखित बातों के साथ जोड़ सकता हूं:

- जब मैं बाइबल पढ़ता हूँ मैं प्रायः अन्दर से नयापन और उत्साहित का अनुभव करता हूँ।
- परीक्षाओं के युद्ध में मैं विजयी रह सकता हूँ।
- मेरा प्रार्थना का समय मेरे लिए अति मूल्यवान हो गया है और मेरे लिए बड़ा आनन्द ले आता है।
- परमेश्वर मेरे बहुत से प्रार्थनाओं का उतर देता है।
- मुझे अब अधिक आनन्द और साहस मिलता है यीशु के बारे दूसरों को बताने में।
- मैं अब मित्रों के साथ अधिक मेल जोल रख सकता हूँ। (प्रेरित क्रिया 4:31)
- परमेश्वा के अनुग्रह के द्वारा मैं अब जीवन में आनन्दित हूँ और उसके हाथों में सुरक्षित अनुभव करता हूँ।
- कठिनाईयों की घड़ी में प्रभु ने मुझे संभाला है अद्‌भुत तरीके से और अन्दर से मुझे शक्तिशाली बनाया है।
- अब मैं अनुभव कर पाता हूं उन दानों को जन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है।
- मेरा दूसरों को भला बुरा कहना या आलोचना करना बन्द हो गया है। अब मैं दूसरों को ऐसा करते सुनता हूँ तो मुझे अच्छा नहीं लगता है।

ये सारे परिवर्तन चुपचाप हुआ। मैं पहले इसका अनुभव किया जब मैंने प्रतिदिन पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना बाइबलीय प्रतिज्ञाओं के साथ आरम्भ किया। उसके बाद मैं मसीही धर्म के बारे अलग अलग अनुभव प्राप्त कर रहा हूँ। इसके पहले परमेश्वर के साथ मेरा जीवन प्रायः परिश्रम से भरा हुआ और कठिन था; अब मैं आन्नद और सामर्थ का अनुभव करता हूँ।

मैं दुःखित हूँ, मेरे व्यक्तिगत जीवन में जो हानियां आई पवित्र आत्मा की कमी के कारण, मेरे वैवाहिक और पारिवारिक जीवन में हानियां हुई, और साथ ही साथ मेरी मंडली में भी जहां मैं एक पास्टर के रुप में सेवा प्रदान किया। जब ये बातें मेरे मन में आई मैंनं प्रभु से इसके लिए क्षमा मांगी।

यह दुर्भाग्यपूर्ण सच है कि जिस क्षेत्र में काम करते थे वहां किसी को अपने से आगे अगुवाई नहीं कर सकते थे। हम यह भी स्मरण करते हैं कि हमारा व्यक्तिगत त्रुटियाँ और परिवार और मंडली के अन्दर पाप सब जुड़ते गए।

दूसरों के लिख दुःखी मत होना, यही त्रुटियाँ उनके जीवन में प्रगट होते हैं। इसके बारे कुछ विचार जोड़ना चाहता हूँ:

(2 पतरस 1:3–4) में यह कहता है कि यीशु के साथ एक घनिष्ट संबंध रखने के द्वारा ... महान ओर बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं के द्वारा... हम ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाऐगें।

इसका अर्थ यह हुआ कि पवित्र आत्मा भी हमें प्रतिज्ञाओं के द्वारा ही दिया गया है। आप प्रतिज्ञाओं को बैंक के चेक से तुलना कर सकते हैं। जब हम किसी खाताधारी द्वारा हस्ताक्षर किया हुआ चेक जमा करते हैं तो हम किसी दूसरे के खाता से भी रुपया निकाल सकते हैं। परमेश्वर के संतान होने के नाते (यूहन्ना 1:12) हम हर दिन चेक प्रतिज्ञाएं भंजा सकते हैं जो यीशु द्वारा हस्ताक्षर किया गया है। इससे कोई लाभ नहीं होगा यदि हम अपना ही चेक को जो एक चित्रकार द्वारा बनाया गया हो उसे जमा करते हैं। हमें एक ऐसे चेक की जरुरत है जिसमें खाताधारी का हस्ताक्षर हो।

एक और दूसरा कारण है, जो हमें प्रतिज्ञाओं के साथ प्रार्थना करने के लिए उत्साहित करता है। परमेश्वर के वचन में सामर्थ है। यीशु ने क्रूस पर तीन बार भजन संहिता के वचनों के साथ क्यों प्रार्थना किया था? उसने अपने आप का बचाव किया और उपद्रवी शैतान को बाइबल के वचनों के साथ शैतान के परीक्षा के समय जंगल में उसका सामना किया? (मत्ती 4:4,7,10) उसने कहाः मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं, परन्तु हर वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।

यीशु सृष्टिकर्ता, जानता था कि परमेश्वर के वचन में सामर्थ है, हर एक आज्ञा में और परमेश्वर के वचन के हर एक प्रतिज्ञा में सामर्थ है; परमेश्वर का वह जीवन, जिसके द्वारा आज्ञा पूरी हो सकती है और प्रतिज्ञा प्राप्त किया जा सकता है क्या ही अद्‌भुत बात है! परमेश्वर का सामर्थ और उसका जीवन हर एक प्रतिज्ञा में विद्यमान है। जब हम प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना करते हैं हम परमेश्वर से प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना करेगे तब हम परमेश्वर के वचन को हमारे प्रार्थना में उपयोग करते हैं। ईश्वर के वचन` बारे में ऐसा कहता हैः उसी प्रकार से मेरा वचन भी

होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा। (यशायाह 55:11)

मैं योजना बनाता हूँ सिर्फ पवित्र आत्मा के लिए प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना करने का। मैं जानता हूँ कि मेरे पवित्रात्मा मांगने के बाद कि मुझे यह प्राप्त हो चुका है परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञा के आधार पर (1 यूहन्ना 5:15) जब हम जानते हैं कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं कि जो कुछ हमने उससे मांगा, वह पाया है। जब मैं बिना प्रतिज्ञा का प्रार्थना करता हूँ, तब मैं आशा करता हूँ कि मेरा प्रार्थना सुना जायगा। यह अच्छा होगा कि प्रार्थना करने के लिए समय दिया जाय तब एक आशीष के दिन का अनुभव करें बनिस्पत कि शाम को अपने असफलताओं के लिए कुड़कुड़ाना।

मैंने एक ई. मेल प्राप्त किया, जो बड़े आनन्द के साथ लिखा गया थाः मैं कभी भी नहीं सोचा था कि इतना बड़ा फर्क पड़ेगा, यदि मैं सारे दिन परमेश्वर की अगुवाई के लिए अपनी ही शब्दों में प्रार्थना किया होता या मैं बाइबल की प्रतिज्ञाओं के साथ प्रार्थना किया होता! प्रतिज्ञाएं हमेशा ही मेरे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। मैंने हमेशा दन पर विश्वास किया है, परन्तु मैं ने प्रतिदिन दावा करने में असफल रहा। यीशु के साथ मेरा जीवन अधिक गहराई से अधिक आनन्द अधिक भरोसा और शांत वातावरण प्राप्त किया है। मैं इन सब बातों के लिए धन्यवाद देता हूँ।

इसी कारणवस, मैंने यह निर्णय लिया है कि प्रार्थना के एक नमूने को बांटना चाहता हूँ कि प्रतिज्ञाओं के साथ पवित्र आत्मा की मांग करने में क्या अन्तर होता है। स्वाभाविक तौर से इसे छोटा किया जा सकता है। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने आप के लिए सीधे परमेश्वर के वचन से प्रार्थना करें। परन्तु विशेष बात यह है किहमार विश्वास प्रतिज्ञाओं के द्वारा दृढ़ होता है, ऐसा कि जब हम प्रार्थना कर चुके होते हैं तो हमें निश्चय हो जाता है कि हम पवित्र आत्मा प्राप्त कर चुके हैं हम उस समय पवित्र आत्मा प्राप्त किए जब हमने विश्वास किया कि हमने जो प्रार्थना किया उसे पाया।

प्रतिज्ञाओं के साथ एक आदर्श प्रार्थना पवित्र आत्मा के दैनिक नवीकरण के लिए

हे स्वर्गीय पिता, मैं तेरे पास यीशु हमारा उद्धारकर्ता के नाम आता हूं। तूने कहा हैः अपना हाथ मंझे दे। (नीतिवचन 23:26) मैं आज अभी अपने आप को जो कुछ मैं हूं और जो कुछ मेरा है सब कुछ मैं तुझे समर्पित करता हूँ। धन्यवाद कि तूने मेरे प्रार्थना का दतर पहले ही

अपनी इच्छा के अनुसार दे दिया है, क्योंकि तेरा वचन कहता है कि यदि हम प्रार्थना तेरी इच्छा के अनुसार किया है, हम जानते हैं कि इसका उतर हम पहले ही इसे प्राप्त कर चुके हैं। (1 यूहन्ना 5:15) और तूने अभी कहा है कि, जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूंगा। (यूहन्ना 6:37)

यीशु ने कहाः जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्रात्मा क्यों न देगा। (लूका 11:13)

तूने आगे और कहा कि तू पवित्र आत्मा उन्हें देगा, जो तुझ पर विश्वास करते हैं (यूहन्ना 7: 38–39) जो तेरी आज्ञाओं को मानते हैं (प्रेरितों के काम 5:32), जो अपने आप को पवित्र आत्मा द्वारा नया करते जाते है। (यूहन्ना 7:38–39) जो तेरी आज्ञाओं को मानते हैं (प्रेरितों के काम 5:32), जो अपने आप को पवित्र आत्मा द्वारा नया करते जाते हैं (इफिसियो 5:8) और जो आत्मा में चलते हैं (गलातियों 5:16) यह मेरी इच्छा है, कृप्या मुझमें इसे पूरा करो। इस कारण हे पिता मैं सच्चे मन से तुझ से मांगता हूँ मुझे आज ही पवित्र आत्मा दे। जैसे कि तेरी इच्छा के अनुसार मेरा निवेदन है, तेरा धन्यवाद करता हूं कि तूने अभी ही पवित्र आत्मा दिया है (1 यूहन्ना 5:15) तुझे धन्यवाद देता हूँ कि मैं ने तेरी ईश्वरीय प्रेम को भी इसी समय प्राप्त किया हूँ, क्योंकि तेरा वचन कहता हैः क्यों कि परमेश्वर जो हमे दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। (रोमियो 5:5; इफिसियों 3:17) मैं भजन संहिता के लेखक के साथ यह कहना चाहता हूं, हे परमेश्वर, हे मेरे बल, मैं तुझ से प्रेम करता हूँ। (भजन संहिता 18:1) तुझे धन्यवाद हो कि मैं अपने सहभागी मानव प्राणियों को तेरे प्रेम के कारण प्रेम कर सकता हूँ।

तुझे धन्यवाद हो कि पवित्र आत्मा के द्वारा पाप की शक्ति मुझमें तोड़ी गई (रोमियों 8:13); (गलातियों 5:16) कृप्या मुझे बचा ले और आज पाप से और संसार से मेरी रक्षा कर, पवित्र दूतों से मेरी रक्षा कर, परीक्षाओं से मुझे बचा और जब आवश्यकता पड़े मुझे छीन ले और मेरी पुरानी भ्रष्ट स्वभाव से बचा ले। (1 यूहन्ना 5:18)

और कृप्या मेरी मदद कर ताकि मैं तेरी गवाही हो सकूं अपने बातों और कामों में प्रेरितों 1:8

मैं तेरी बड़ाई करता हूँ और धन्यवाद करता हूँ मेरी प्रार्थना को सुनने के लिए आमीन।

सिर्फ वे ही जो ख्रीस्त के साथ सहयोगी कार्यकर्ता बनेंगे, सिर्फ वे ही जो यह कहेंगे, प्रभु जो कुछ मेरे पास है और जो कुछ मैं हूं सब तेरा है, वे परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों के रुप में स्वीकार किए जाएंगे। एलेन ह्वाइट, द डिजायर ऑव एजेस पृ. 523.1

यीशु खुद पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे अन्दर वास करना चाहता है (1 यूहन्ना 3:24; यूहन्ना 14:23) एनेप ह्वाइट ने कहा है पवित्र आत्मा का प्रभाव आत्मा (प्राण) के अन्दर जीवन है।'' जो सामर्थ पतरस , पौलुस और अनेक दूसरे लोगों को बदल डाला वह हमारे लिए भी उपलब्ध है। वह हमें इसे भी देता है, कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यता में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ। (इफिसियों 3:16)

पवित्र आत्मा से भर जाना ही विश्वास के जीवन का कुंजी है आन्नद, सामर्थ, प्रेम और पाप पर विजय प्राप्त करने में। जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है। (2 कुरिन्थियों 3:17)

एक संवाद मैंने प्राप्त किया उसमें ऐसा लिखा हुआ थाः मंडली के अनेक सदस्य प्रतिदिन दो दो करके प्रस्तावित प्रार्थना को करते हैं। विगत 5 महीनों से मैं भी अपने महिला मित्र के साथ प्रार्थना कर रहा हूँ। हर बात सिर्फ व्यक्तिगत क्षेत्र में ही आगे बढ़ रही या उन्नति कर रही है ऐसी बात नहीं, परन्तु परिवारों, संबंधों, वैवाहिक जीवनों, मंडलियों, में आत्मिक तौर से उन्नति कर रही है–कोई बड़ी संघर्ष के द्वारा नहीं परन्तु चुपचाप हो रहा था स्वभाविक तौर से। हम आश्चर्यचकित थे और इसे हम परमेश्वर का स्पष्टीकरण प्रक्रिया के रुप में देख सकते है। जो जीवन को सरल बनाती है, क्योंकि हम परमेश्वर की निकटता को अधिक से अधिक अनुभव करेंगे।

क्या कोई व्यक्ति आत्मिक बना रह सकता है?

हां! जब हम अविश्वास की स्थिति को आगे नहीं देते और जब हम आत्मिक रुप से स्वांस लेते हैं, अपने पापों को मान लेने के द्वारा हम स्वांस बाहर निकालते और स्वांस अन्दर लेना परमेश्वर के प्रेम का अच्छा उपयोग करना और छाया प्रदान करने के द्वारा और हमारे विश्वास के प्रार्थना का नवीकरण करने और पवित्र आत्मा के साथ भरे जाने के द्वारा।

यह हमारे बच्चों के साथ संबंघ के समान है। जब एक बच्चा अनाज्ञाकारी होता है, फिर भी वह हमारे ही बच्चा बना रहता है। परन्तु हमारे बीच के संबंध में एक बाधा का अनुभव करते है।बच्चा सायद

हमारी आंखों में हमें देखने के योग्य न हो। यह बाधा (अड़चन) को दूर किया जा सकता है अपने गलतियों को मान लेने के द्वारा।

परन्तु व्यक्ति स्वाभाविक तौर से आगे चल कर फिर से सांसारिक या शारीरिक हो सकता है। बाइबल इसके बारे नहीं बोलती कि जो एक बार बचाया गया, वह हमेशा के लिए बचाया गया। हमारा पापी स्वभाव अभी भी बना रहता है। कोई भी प्रेरित या नबी कभी भी दावा नहीं किए कि उनमें कोई पाप नहीं है। एलेन ह्वाइट, द एक्टस ऑव द अपोल्लुस पृ. 561.1

परन्तु एक जीवन पवित्र आत्मा के साथ भरपूरी और यीशु का हमारे हृदयों में होने से पाप की शक्ति टूट जाती है जिससे हम एक आनन्दित और मजबूत मसीही जीवन जी सकते हैं। हमारी धार्मिकता सिर्फ यीशु मसीह में है, ... जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा– अर्थात धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा। (1 कुरिन्थियों 1:30)

यदि हम फिर से सांसारिक एवं शारीरिक हो गए हैं एक लम्बे समय तक आत्मिक जीवन की लापरवाही करने के द्वारा से या आत्मिक स्वास लेने की असफलता के कारण, तब हम जान सकते हैं कि एक सहानुभूति दिखलाने वाला उद्धारकर्ता हमारे लिए इन्तजार कर रहा है।

यह विशेष है कि हम उस मार्ग को जाने जिसके द्वारा हम परमेश्वर के अनुग्रह में नया हो सकते हैं और आशा के साथ सदा के लिए एक आत्मिक जीवन जी सकें। किसी को सांसारिक बने रहने की आवश्यकता नहीं है।

परन्तु याद रखें व्यक्तिगत या सामान्य तौर पर कि रैण्डी मैक्सवेल ने क्या कहा हैः क्या हम सोचते हैं कि परमेश्वर की मंडली को आत्मिक मृत्यु की कगार से पुनर्जीवित करना बिना प्रयास किए पूरा किया जा सकता है?

बहुतायत की जीवन और, अनन्त जीवन, अनेक लोगों का उद्धार और हमार धन्यवाद यीशु के महान बलिदान यह उचित प्रयास है। विशेष बात यह है सबेरे हमारे प्रभु से आराधना में मिलें। यही वह स्थान है जहां पर वह हमें सामर्थ से परिपूर्ण करता है।

प्रेरित यूहन्ना के बारे में हम निम्नलिखित बातों को पढ़ते हैंः

दिन प्रतिदिन उसका हृदय ख्रीस्त की ओर उठता था जब तक कि वह अपने स्वार्थ को अपने प्रभु में खो नही दिया। उसका क्रोध और अभिलाषा ख्रीस्त के गढ़ने वाली शक्ति के वश में कर दिया। पवित्र आत्मा की पुनर्जीवित करने वाला प्रभाव उसके हृदय को पुनः नया कर

दिया। ख्रीस्त के प्रेम की शक्ति, चरित्र को बदल डालती है। ख्रीस्त के साथ मिलने का यही एक निश्चित परिणाम है। जब ख्रीस्त हृदय में वास करता है तब सम्पूर्ण स्वाभाव बदल जाता है।

मेरी आंखें खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातें देख सकूँ। (भजन संहिता 119:18) तुझे धन्यवाद क्योंकि तू मेरी अगुवाई कर रहा है, और मैं कह सकता हूं: जैसे कोई बड़ा खजाना पाकर हर्षित होता है, वैसे ही मैं तेरे वचन के कारण हर्षित हूँ। (भजन संहिता 119:162)

अध्याय 6

हमारे आगे कौन से अनुभव पड़े हुए हैं?

व्यक्तिगत अनुभवें, साथ ही साथ कलीसियाओं के अनुभवें कान्फ्रेंस सेक्सन और यूनियन की अनुभवें

एक भाई का अनुभव

विगत दो वर्षों से मैं प्रतिदिन मेरे जीवन में पवित्र आत्मा के उंडेले जाने के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ। मेरा निवेदन है कि यीशु मुझ में वास करे बहुतायत से प्रतिदिन। परमेश्वर के साथ मेरा चलना इस समय के अन्तर्गत अविश्वसणीय रहा। जब से मैंने यीशु से मेरे अन्दर निवास करने के लिए, और मुझ में अपनी इच्छा पूरी करने के लिए, और हर दिन पवित्र आत्मा के द्वारा नया करने के लिए कहा! मुझे बाइबल पढ़ने में बड़ा आनन्द आया, ख्रीस्त के बारे दूसरों को बताना, और मुझ में दूसरों के लिए प्रार्थना करने की बड़ी इच्छा हुई, और आग, मेरी जीवन शैली नाटकीय ढंग से बदल गया। मैं इन सब को मेरे परमेश्वर के लिए दैनिक खोज और मेरा पवित्र आत्मा के लिए दैनिक निवेदन को दृढ़ करता है।

''मैं आपको ललकारता हूँ प्रतिदिन प्रार्थना करने के लिए, आप छः सप्ताह तक पवित्र आत्मा से भरे जाने के लिए प्रार्थना करें और देखें क्या होता है।''

सरबिया में 40 दिन का प्रार्थना

सितम्बर 2010 में हमने 40 दिन नामक किताब को अनुवाद करा के छपवायाः प्रार्थना और धार्मिक सभा यीशु की दूसरी आगमन की तैयारी में चलाया गया। मंडली के सभी सदस्यों के लिए इस किताब को हमारे यूनियन में उपलब्ध कराया। इसके बाद हमने साप्ताहिक और दैनिक प्रार्थना सभा चलाया 40 दिन के बाद सभी सथानीय मंडलियों

और सदस्यों के घरों में जहां पर लोगों ने ताजा पवित्र आत्मा उण्डेले जाने के लिए प्रार्थना और उपवास रखा गया।

जैसे ही ऐसा हुआ एक बिल्कुल नया वातावरण स्थानीय मंडलियों में विकसित होना आरम्भ हुआ। सुस्त पड़े हुए मंडली के सदस्यगण क्रियाशील हो उठे और वे लोगों की सेवकाई करने में दिलचस्पी दिखलाए। वे जो वर्षों से एक दूसरे से लड़ते झगड़ते थे विभिन्न मामलों में आपसी मेल मिलाप, और समुदाय में सुसमाचार प्रचार के लिए एक साथ योजनाएं बनाना शुरु कर दिए।

अक्टुबर 2010 में जब वार्षिक सभा हुई, जागृति और सुधार आरम्भ किया गया। हमने इसे आनन्द के साथ स्वीकार किया, यह देखते हुए कि परमेश्वर ने पहले ही यूनियन में इसे आरम्भ कर चुका था, इसे आगे बढ़ाने का निर्णय लिया।

हमने युनियन में निकटता का सहभागिता, बड़ी एकता और यूनियन अधिकारियों के बीच में बेहतर समझदारी और इन प्रार्थना सभाओं के शीघ्र परिणाम को देखा था।''

जुरिच और स्वीटजरलैण्ड में 40 दिन का प्रार्थना

हमारा पास्टर और मैं दोनों अलग अलग एक एक किताब प्राप्त किए जिसकी विषय सूची हमें पुलकित कर दिया। इसका शीर्षक है 40 दिनः प्रार्थना और धार्मिक सभा दूसरी आगमन की तैयारी के लिए जो डेनिस स्मीथ द्वारा लिखा गया था। इस किताब को पढ़ नहीं जा सकता था इसे एक किनारे रख दिया गया। परन्तु इसकी विषय सूची ने मेरे जीवन को बदल डाली।

हमारे जुरिच उल्फस्वीकेल मंडली में करीब सौ सदस्य हैं। हमने अनुभव किया कि हमें जागृति और प्रार्थना की बड़ी आवश्यकता है, हमने 2010 ई. के अन्तिम हिस्से में 40 दिन की जागृति और प्रार्थना सभा की योजना बनाई। इस किताब ने हमें पूरी विवरण और बहुमूल्य जानकारी दी और इसके अतिरिक्त 40 दैनिक आराधना भी प्राप्त हुए।

इसके शीर्षक थे पवित्र आत्मा से भरा जाना, प्रार्थना यीशु के जीवन का प्रचार करना और आत्मिक सहभागिता।

इस प्रकार हमने 40 दिन को अक्टुबर 1, 2011 में बड़ी आकांक्षा और आशा के साथ आरम्भ किया। भाग्यवश अधिकांश सदस्यों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। प्रार्थना सहयोगी प्रतिदिन प्रार्थना के लिए मिलते रहे, बाइबल के वचनों का संवाद उन्हें रोज रोज भेजा जाता था

और लोग अपने फोन पर भी मित्रों के साथ प्रतिदिन प्रार्थना कर रहे थे। एक दल के लोग हर सुबह छः बजे आराधना और प्रार्थना के लिए जमा होते थे।

हमारा 40 दिन का समय न भुलाया जाने वाला अनुभव था। परमेश्वर ने हमारे अनेक प्रार्थनाओं उतर दिया, विशेष कर के बाइबलीय भविष्यवाणी के उपदेशों की कड़ियों में। ये उपदेश बड़े आशीर्वाद के कारण हुए। हमारे सभाओं में बहुत सारे अतिथि होते थे और उन में से 20 लोगों ने भविष्यवाणी सेमिनार में अपना नाम दर्ज कराया। मार्च 2013 में 50–60 अतिथि आए जो जुरिच में 20 वर्षों से ऐसा कभी नहीं हुआ था।

परमेश्वर की आत्मा के प्रभाव से हमारी मंडली में परिवर्तन आए और और यह आनन्द की बात है यह देखकर कि कैसे हमारे छोटे दल बढ़ना आरम्भ हो गए और कैसे मंडली के सदस्यगण बाइबल अध्ययन देने के लिए इच्छुक थे, वे बाइबल पर रुचि लेने वालों की खोज करते थे। जिन लोगों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया था उनके मनों में अब एक गहरी इच्छा पैदा हो गई थी परमेश्वर की आत्मा के काम को कायम रखने के लिर्ए हम परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय से धन्यवाद देना चाहते हैं और उसकी महिमा करते हैं। बेटिक इगर एडवेंटिस्ट मंडली जुरिच उल्फस्वींकेल

जरमनी के कोलोगने में 40 दिन प्रार्थना और धर्म प्रचार

पास्टर जोअओ लोट्ज जरमन ब्राजीली हैं उसने विभिन्न मंडलियों और अस्पतालों में 38 वर्षों तक ब्राजील में कार्य किए साथ ही साथ यूनियन और अक्षिणी अमरिकन डिविजन में भी कार्य किए। उसने मार्च 2012 में अपने काम से अवकाश ग्रहण किया। वह और उसकी पत्नी दोनों कोलोगने आए उसके साथ के मिशनरी होने के लिए और पोर्तुगीज और स्पेनिश भाषा बोलने वाले मंडलियों में काम करने के लिए।

कोलोगने में हम छोटे छोटे दलों में काम करना शुरु किए और मंडली के सदस्यों को उत्साहित करना और अतिथियों को आमंत्रित करने लगे। ब्राजील के अपने अनुभवों पर आधार पर हमने 40 दिन प्रार्थना का कार्यक्रम कोलोगने में चलाए। सामग्रियों पोर्तुगीज भाषा में भी उपलब्ध थे।

पोर्तुगीज, स्पेनिश और जरमन भाषा बोलने वाले मंडली के सदस्यों के साथ 40 दिन प्रार्थना का कार्यक्रम आनन्द के साथ आरम्भ

किया। हर दिन हम 100 मित्रों और परिचित लोगों के लिए प्रार्थना किए। इन लोगों के नाम मंडली के ब्लैकबोर्ड पर लिखा गया था। जब तक 30–35 दिनों का प्रार्थना पूरा नही हुआ हमने लोगों को जानने नहीं दिया कि उनके लिए हम प्रार्थना कर रहे थे और इसी समय उन्हें अतिथि के रुप में आमंत्रित किया एक खास सब्बत कार्यक्रम के लिए। मंडली के इस विशेष कार्यक्रम में 120 लोग उपस्थित हुए। ख्रीस्टियन बाडोरेक, जो व्यक्तिगत सेवकाई के निदेशक थे उपदेश दिए। कुछ अतिथिगण आनन्द के साथ रो पड़े जब उन्होंने अपना नाम बोर्ड पर लिखा हुआ देखा।

इसके बाद ब्राजील का एक धर्म प्रचारक अन्तोनियो कोनकालवस ने 15 दिनों का प्रचार सभा चलाया। हर दिन वह एक घंटा पन्द्रह मिनट तक बोलता था अनुवाद के साथ उसके उपदेश के शीर्षक थेः बाइबल आपको आश्चर्यचकित करता है। उसके उपदेश के विषय थे यीशु का दूसरा आगमन, साथ ही साथ दानिएल और प्रकाशितवाक्य के विषय भी सामिल किए गए। भाषण और गीत पोर्तुगीज भाषा से जरमन भाषा में अनुवाद किए जाते थे। हर शाम को छोटे छोटे गायक दल सामुहिक गीत अच्छे बाजाओं के साथ गाते थे। हर शाम सभा के अन्त में बेदी के पास आने की बुलाहट होती थी। अच्छी प्रतिक्रियाओं के लिए हम कृतज्ञ हैं। मंडली के सदस्य गण गम्भीरता के साथ प्रार्थना किए विशेषकर उन लोगों के लिए जिनका नाम 40 दिन प्रार्थना में था। हमारे गिरजेघर में 80 लोगों के बैठने की व्यवस्था थी। परन्तु हर सभा में 100 से अधिक लोग उपस्थित होते थे। सप्ताह के अन्त में गिरजा पूरी तरह से भरा होता था और सप्ताह के बीच के दिनों में करीब 60 लोग होते थे जिनमें 32 अतिथि होते थे। इसका परिणाम हुआ 8 व्यक्तियों ने बप्तिस्मा लिया और 14 लोग बप्तिस्मा क्लास में शामिल हुए। वर्ष के अन्त में 13 लोगों को बपतिस्मा दिया गया।

इस दरमियान हमें अनेक आश्चर्यजनक अनुभव प्राप्त हुए। अनुवादक को पाना बड़ा कठिन होता था। एक रोमन काथोलिक शिक्षिका अनुवाद करने में मदद करना चाही। परन्तु उसका अनुभव बाइबल के साथ अधिक नहीं था। तब हमने प्रार्थना किया एक प्रोटेस्टेन्ट अनुवादक के लिए। कुछ समय बाद शीघ्र ही हमें जानकारी प्राप्त हुई एक महिला के बारे जो रेस्टुरेंट में आनन्द के साथ पोर्तुगीज भाषा से जरमन भाषा में लोगों के लिए अनुवाद करती थी पेन्तिकोस्तल कलीसिया की सदस्य थी। वह हमारे प्रचार सभाओं में अनुवादक का काम करने लगी और अन्त में उसने भी बपतिस्मा लिया।

यह अनुवादक मारिया ने पूछा कि क्या वह अपने मित्र एलिजाबेथ को बुला सकती है। वह महिला एक छोटे कोलंबियन मंडली की अगुवाई कर रही थी जिसमें 13 सदस्य थे जो इसी कोलोगनी शहर में थी। वह खुद आती थी और अपने साथ मंडली के सदस्यों को भी लेकर आती थी। फिलहाल एलीजाबेथ और एसके परिवार के लोग बाइबल अध्ययन कर रहे हैं।

एक दूसरा अनुभव है जो होप चैनल के साथ संबंधित है। एक जरमन महिला को अचानक से होप चैनल मिल गया और उसने जो कुछ सुना उससे काफी प्रभावित हुई, खास करके जो कुछ कहा गया था सब्बत के विषय में। उसने अपने पति को सुनने के लिए बुलाई। वह भी संवाद सुनकर आनन्दित हुआ। एक दिन की बात है जब वे महिला की माता के घर जाने के लिए निकले, वे एक दूसरे मार्ग से जाने के लिए प्रभावित हुए। जाते वक्त उन्होंने सेवेन्थ डे एडवेंटिस्ट मंडली के गिरजा का एक साइन बोर्ड देखे। उनको मालूम हुहा कि वे एडवेंटिस्ट होप चैनल से है। सब्बत के दिन वह महिला उस मंडली के गिरजा में गई कार्यक्रम में सामिल हुई। उसके बाद उसने अपने पति को सब्बत के दिन गिरजा आने के लिए आमंत्रित किया इसके बाद अपनी माता को भी सामिल होने के लिए निमंत्रण दिया। इसके बाद तीनों व्यक्तियों ने बपतिस्मा भी लिया।

एक अन्य अनुभव में एक रुसी–जरमन बहन से संबंधित है। उसने 40 दिन आराधना सभा में भाग लिया और वह अपने रुसी बोलने वाले पड़ोसियों के लिए प्रार्थना करना शुरु कर दी। जब उसने अपने पड़ोसी को यह बतलाई कि वह उसके लिए प्रार्थना कर रही है, पड़ोसी बहुत आश्चर्यचकित हुई और उसने कहा कि वह एक ऐसे कलीसिया की खोज में है जो बाइबलीय सब्बत को मानती है। वह और उसके पड़ोसी एक साथ प्रचार सभा श्रंखला में उपस्थिति हुए उनमें से दो व्यक्ति बपतिस्मा ले चुके हैं।

एक और अनुभव एक स्त्री को शमिल करता है, जिसका नाम जेनी था। वह ब्राजील देश में बपतिस्त कलीसिया की एक सदस्य थी और वह एक पोर्तुगीज भाषा बोलने वाले कलीसिया की खोज में थी। वह एडवेंटिस्ट कलीसिया के संपर्क में आई, बाइबल अध्ययन प्राप्त की और बपतिस्मा ले ली। और विश्वास में आने के बाद उसने अपने रिस्तेदारों को बुला लिया और अपना चाचा, जो एक एडवेंटिस्ट था उसे बतलाया कि अब वह भी एक एडवेंटिस्ट हो गई है। उसकी माता के लिए यह बहुत ही आश्चर्य की बात थी। उसके भाई बहन और ब्राजील

के बपतिस्त मंडली जिसकी वह एक सदस्य थी। उसके परिवार के सदस्य ब्राजील में कभी कभी एडवेंटिस्ट मंडली में जाते थे जिसे वे सब्बत के बारे जान सके। इसके जरीए ब्राजील में 5 लोगों ने बपतिस्मा लियाः उसकी अपनी माता, दो बहनें और अन्य रिस्तेदारों ने बपतिस्मा लिया। अब वह प्रार्थना कर रही है अपने और बहनों विश्वास में लाने के लिए, जो अर्जेन्टीना में रहते हैं। वह उसके साथ परमेश्वर के राज्य में होना चाहती है।

परमेश्वर की अगुवाई के अन्तर्गत हमारे और भी अनेक अभिज्ञताएं हैं। प्रथम बपतिस्मा में आठ लोगों ने बपतिस्मा लिया– इटली, जरमनी, पेरु, ब्राजील, उकरैन, बेनेजुआला, कोलंबिया और रुस के एक एक व्यक्ति ने बपतिस्मा लिया।

पतझड़ की ऋतु में हमने फिर से प्रचार सभाओं का सिलसिला 40 दिन की आराधना सभा चलाई जिम्मी कारदोसो और उसकी पत्नी, जो ब्राजील के रहने वाले थे परन्तु अभी वे संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में रह रहे थे, इन्होंने ही प्रचार सभाओं के सिलसिले को संचालित किया। जौ भी कि इन सभाओं का सिलसिला सिर्फ एक सप्ताह के लिए ही चल पाया, इसके बावजूद में हमने अन्त में 4 प्रिय जनों को बपतिस्मा देने में सफल हुए। क्योंकि ये पहले से ही बाईबल अध्ययन करते आ रहे थे। इनमें तीन जर्मन और एक इटली के रहने वाले थे।

दोनों बार की बपतिस्मा कोलेगने के मुख्य गिरजा घर में सम्पन्न हुआ, जहां पर 400 सदस्य हैं और वहां पर बपतिस्मा देने की बहुत ही अच्छी सुविधा उपलब्ध है।

हम परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं कि उसने बड़े रूप में काम करके हमें आश्चर्यचकित किया। मैं विश्वास करता हूँ कि वह हमारे लिए इससे भी बड़े अभिज्ञयता देने के लिए रूका हुआ है। कृपया अपने प्रार्थनाओं में हमें स्मरण करें। (जोवाओ लोटजे, बोलेगने जर्मनी)

महत्वपूर्ण मध्यस्थता :

पहले इस पुस्तक 40 दिन को हल्के तौर से पढ़ा था। इसके पहले पृष्ठ से ही मैं बहुत बहुत प्रभावित हुआ। हम किसी व्यक्ति के लिए सिर्फ प्रार्थना ही न करें, परन्तु प्रेमपूर्वक उनकी देखभाल भी करें। यही काम है जो मध्यस्थता को जीवित रखता हैं दुर्भाग्यवस इससे पहले मैंने इस तरह की मध्यस्थता कभी नहीं देखी थी। आप के विश्वास को

छोड़ कर! मैं सिर्फ विश्वास करता हूँ कि यह प्रार्थना करने वाले व्यक्ति के लिए जितना महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण है उस व्यक्ति के लिए जिसके लिए प्रार्थना किया जाता है। इसी तरह यह मुझे शुरू से ही विश्वास दिलाया कि मंडली में सहभागिता मजबूत हो सकती हैं ओह, मैं आशा करता हूँ कि इस तरह की सहभागिता (मेल मिलाप) वैसा ही होगा जैसे इस किताब के अन्तिम अध्यायों में वर्णन किए गए हैं ईमानदारी के साथ कहता हूँ कि इसके लिए मुझे रोना पड़ा, क्योंकि इस तरह की सहभागिता के लिए मैं बहुत दिनों से लालायित था। मैं ऐसा विश्वास करता हूँ कि यह किताब ''ख्रीस्त मुझमें'' हमें पोषण करता है और हमें अपनी सफलताओं से स्वतंत्र करता हैं मैंने ''ख्रीस्त मुझ में'' नामक कई किताबों को पढ़ा हूँ, परन्तु यह किताब लगता है सबसे अधिक मददगार है। मैं विश्वास करता हूँ कि आप का प्रार्थना पूर्ण जीवन इस किताब के द्वारा सामर्थवान होगा, मंडली में सहभागिता एवं मेल मिलाप का पोषण होगा और मध्यस्थता और अधिक जीवन्त होगा। यह पुस्तक मुझे मंडलियों और संसार के आशा प्रदान करती है। इस किताब के लिए मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ। आगे, मैं 40 दिन गाईड बुक को पढ़ने की योजना बनाया हूँ, इसके लिए प्रार्थना करूँ और जहां कही परमेश्वर मुझे दिखाता है वहां मैं इसे ले जाऊँगा।''

एक सप्ताह बाद मुझे एक और पत्र इस बहन से मिला। जैसे आप जानते हैं पहली बार मैं पूरी किताब को पढ़ लेता हूं। परन्तु जब मैंने अपने प्रार्थना मित्र के साथ आराधना के समय इसे पढ़ना शुरू किया और मैंने यह ढूँढ़ निकाला कि जैसे मैं पहले सोचा था उससे कहीं अधिक से मुल्यवान साबित हुए। मैंने बहुत से बातों का उत्तर प्राप्त किया जिन्हें मैं पहले अपने आप में समाधान नहीं कर सकता था। परमेश्वर का धन्यवाद हो मेरे प्रार्थना सहयोगी के लिए, जो बहुत अधिक हिस्सा ले रहा है।

और अधिक निश्चित नहीं।

''स्टेप्स टू पर्शनल रिवाइवल'' नामक यह पुस्तिका मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। एक एडवेंटिस्ट परिवार में जन्म लेने के चलते मैं विश्वास करता था, कि मैं सही मार्ग पर चल रहा हूँ। दस कुंवारियों के अध्याय में और विशेष कर रोमियों 8:9 को पढ़ाः ''परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन

नहीं।'' यह बात मुझे वास्तव में आश्चर्य चकित कर दिया। अचानक मैं और निश्चित न रह सका कि क्या मुझ में पहले से पवित्र आत्मा था और वह मुझे में काम कर रहा था, क्योंकि मैं पूरी तरह से आत्मा के फलों से अपने आप को वंचित महसूस करता हूँ। सब्बत दोपहर में इस पुस्तिका को पढ़ कर समाप्त किया और मेरे उपर बहुत गहरा दुःख छा गया। तब मैंने पुस्तिका के अंत में लिख प्रार्थना को पढ़ा और तब अन्दर से मुझमें एक गहरी इच्छा उठी पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए और कि मेरे हृदय को वह बदल डाले और परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार मुझे ढाले।

उसे जाने : ''कुछ दिन पहले मैं आप का लेख जागृति को पढ़ा। मैं इस विषय पर तीन वर्षों तक चिन्तन करता रहा। अभी मैं ''स्टेप्स टू पर्शनल रिवाइवल'' (व्यक्तिगत जागृति की ओर कदम) नामक पुस्तिका को पढ़ना आरम्भ किया हूं। इसके लिए मैं सिर्फ आमीन ही कह सकता हूँ। मैं आनन्दित हूँ कि इनके पृष्ठों में अपने अनेक विचारों को देख पाता हूँ। मैं इस प्रभाव में हूँ कि हमारे मंडली लक्ष्य के एक इंच पीछे हैं। मैं अपने अनुभव के फेंक नहीं सकता हूँ कि हम आवश्यक बातों को अपनी दृष्टि से ओझल कर दिए हैं। प्रायः ये बातें सच्चाई के साथ संबंधित हैं कि हम किस तरह का जीवन व्यतीत करें या भविष्यवाणियां कितनी महत्वपूर्ण हैं, और यह गलत है, ऐसा मैं नहीं कह रहा हूँ। परन्तु परमेश्वर हमें इन चीजों को क्यों दिया है इसकी अनदेखा करते हैं। क्या सच्चाई परमेश्वर के साथ पूरी सहभागिता का लक्ष्य नहीं रखती हैं। क्या ये क्षेत्र वास्तव में हमें परमेश्वर को जानने में मदद नहीं करेंगे? क्या भविष्यवाणियों का उद्देश्य ऐसा नहीं है कि हम परमेश्वर की महानता और उसकी सर्वशक्तिमान होने के स्वीकार करें क्या हम यह समझते हैं कि वह सारे जगत को अपने हाथों के नियंत्रण में रखता है, और इसी तरह से वह हमें अगुवाई कर सकता है और इसे एक आकार दे सकता है? सनातन जीवन क्या है? (यूहन्ना 17:3) ''और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एक मात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।'' दस कुंवारियों के दृष्टांत में पांच मूर्ख कुंवारियों से सीधे कहता है :'' मैं तुम्हें नहीं जानता।'' हमारे विश्वास का उद्देश्य परमेश्वर को जानना है और उसके साथ सहभागिता रखना है, जिस से वह हमें भरेगा जैसा उसने विगत दिनों में मंदिर को भर दिया था। (2 इतिहास 5:13–14) और जब वह हमारे अन्दर से बहता है, वह हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व को भर देता है, तब हम जीवित नहीं हैं पर ख्रीस्त हम में वास करता है।''

मध्यस्थता का आश्चर्यजनक उत्तर

''डी स्मिथ की दूसरा 40 दिन की पुस्तिका मेरे लिए एक अविश्वसनीय आशीर्वाद है। कुछ ऐसे लोग हैं, जिनके लिए मैंने प्रार्थना किया था जो अपने जीवन में 180 पीछे मुड़ गए।

40 दिन के अन्तर्गत मेरा एक मित्र के साथ गहराई के साथ आत्मिक बातचित हुई थी। उसने मुझे बतलाया था कि उसका जीवन कुछ सप्ताहों से अलग मोड़ ले रहा था। उसे प्रार्थना करने की बड़ी आवश्यकता थी, जो परमेश्वर के वचन पर अधिक ध्यान देता था और उन वस्तुओं को अब वह छोड़ रहा था जो पहले उसके लिए मुल्यवान और पसन्द योग्य थे। मैं उत्साहित हो उठा और उससे 40 दिन के किताब के बारे बतलाया और उसे यह भी बतलाया कि वह 5 व्यक्तियों एक हैं जिसके लिए मैं प्रार्थना करता था। तब उसने सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त किया; तो आप इन सारी चीजों के लिए उत्तरदायी है।

एक लड़की ने निर्णय लिया कि वह शत प्रतिशत अपने जीवन को परमेश्वर के लिए समर्पित करेगी। जौभी कि वह बचपन से ही एक विश्वासिनी थी, फिर भी वह परमेश्वर के बिना ही जीवन जी रही थी। उसे विश्वास पर कोई रूची नहीं थी और पूरी तरह से वह सांसारिक जीवन में फंस चुंकी थी। पर अब वह पूरी तरह से बदल चुकी थी, हर एक व्यक्ति, जो उसे पहले जानते थे और अब उसे देखते हैं तो वे आश्चर्य चकित हो उठते हैं। वह मेरे साथ बाइबल अध्ययन कर रही है और 40 दिन कार्यक्रम में हमारी मंडली में सहयोग कर रही थी और वह दूसरे लोगों को उत्साहित करना चाहती हैं कि वे अपने विश्वास के जीवन को और अधिक गंभीर बना सके।

एक और जवान लड़की के लिए मैं प्रार्थना किया जिसे एक सप्ताह चलने वाली प्रशिक्षण में भाग लेना था और उसे अन्य सहभागियों के साथ रहना था। उसे बड़ी चिन्ता हो रही थी कि वह उन अपरिचितों के साथ रह कर कैसे समय व्यतीत करेगी। एक दिन उसके जाने के पहले ऐसा महसुस हुआ कि मैं उसे प्रार्थना में उत्साहित करूँ और उसे बताया कि मैं उसके लिए काफी दिनो से प्रार्थना कर रहा था। इसलिए हम प्रार्थना किए कि परमेश्वर उसे इस परिस्थिति में शांति प्रदान करें और वह इस प्रार्थना के उत्तर में एक अनुभव दे। प्रशिक्षण के दरमियान एक दिन उस लड़कों ने मुझे फोन किया और बड़ी उत्तेजना के साथ मुझे बतलाने लगी कि परमेश्वर ने कैसे कुछ ऐसा किया है जिस पर विश्वास करना कठिन है। परमेश्वर ने उसे सिर्फ शांति ही नहीं दिया, परन्तु उसने उसे साहस भी प्रदान किया कि वह शाम के मनोरंजन के

कार्यक्रर्म में भाग न ले, क्योंकि उस कार्यकर्त्ता में डिस्को नृत्य और शराब पीना आदि भी शामिल था।

40 दिनों के बाद भी मैं इन लोगों के लिए प्रार्थना करता रहा, क्योंकि मैंने सुना था, और देखा भी था कि परमेश्वर कैसे अद्‌भुत तरीके से प्रार्थनाओं का उत्तर देता है।''

मध्यस्थता के द्वारा परमेश्वर कैसे काम करता है।

''विगत 5 वर्षों से मैं एक महत्वपूर्ण व्यक्ति का पूरी तरह भूल चुका था उसके सम्पर्क से दूर हो गया था। ऐसा लगता था कि उस व्यक्ति ने मेरे संवादों को अस्वीकार कर रहा था। मैंने सुना था कि विगत तीन वर्षों से वह कभी आराधना के लिए गिरजा नहीं जा रहा था। जौभी कि मंडली में ही उसका पालन पोषण हुआ था। और यह कि उसका संबंध एक गैर मसीही स्त्री के साथ हो गया था। मैंने इस नव युवक को अपनी प्रार्थना की सूची डाला, मैं यह भी नहीं सोचा था कि उससे फिर कभी सम्पर्क हो सकता था, क्योंकि वह 600 किलोमीटर दूर में रहता था और मुझे कभी भी जवाब नहीं दिया था, फिर भी मैं एक ''जीवन के चिन्ह'' के लिए प्रार्थना करता रहा।

एक समाचार प्राप्त हुआ कि उस व्यक्ति के भाई का बपतिस्मा होने वाला है, और यह उस समय मेरे नजदीक में हो रहा था और यह 40 दिन प्रार्थना के समय में ही हो रहा था। मैंने निर्णय लिया कि उस बपतिस्मा के कार्यक्रम में शामिल होने का और उस व्यक्ति से वहां पर मुलाकात हुई। हम बहुत गहरे विषय पर विचार विमर्श कर रहे थे तब उसने मुझे बतलाया कि कुछ समय से उसके मन में एक भावना उठ रही थी कि उसे आवश्यक है कि वह परमेश्वर के पास वापस लौट आए, परन्तु उसमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वह अपनी जीवन शैली को बदल सके। मैंने उसे बतलाया कि उसके लिए मैं 20 दिनों से सच्चे मन से प्रार्थना कर रहा हूँ और यहां तक की उसका नाम मेरी प्रार्थना की सूची में बहुत पहले से ही था। इस बात को कर वह आश्चर्यचकित हो उठा, क्योंकि इसी समय के अन्तर्गत परमेश्वर उसके हृदय में काम कर रहा था।

इसी आत्मिक बपतिस्मा विधि के समय वह बहुत प्रभावित हुआ और जब वे विधि के अन्त में पास्टर ने निवेदन किया कि क्या कोई है जो अपना हृदय को परमेश्वर के लिए देना चाहता है उस व्यक्ति के अन्दर जो संघर्ष हो रहा था उसका मैं अनुभव कर रहा था और एक लम्बे समय के संघर्ष के बाद अन्त में वह अपने घुटने पर गिर पड़ा

और रोने लगा। उसने अपने आप को फिर से परमेश्वर को समर्पण कर दिया। शाम होने के पहले, उसने मुझ से कहा कि वह गिरजा जाने का निर्णय कर लिया है और अब वह बराबर जायगा और अपनी जीवनशैली को भी बदल डालेगा। उसने कभी भी ऐसा नहीं सोचा था कि उसके सप्ताह का अन्त इस प्रकार से होगा।

कुछ सप्ताह बाद मैंने उस से एक युवा प्रचार सभा में मिला जहां पर वह पुनः और दृढ़ हुआ और इस युवा सभा ने उसे आत्मिक तौर उपर उठाया। मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ एक प्रिय जन के मन फिराने के लिए।'' आमीन।

जर्मनी के लुडविडवर्ग और यूरटीम वर्ग में कलीसिया

'' सब से पहले हम 40 दिन पुस्तिका को अपने घर में पति पत्नी के साथ प्रार्थना के समय अध्ययन किया और व्यक्तिगत रूप से बहुत अनुभव, लाभ और आशीर्वाद प्राप्त हुए। इसके बाद हम चर्च में सप्ताह में दो दिन का प्रार्थना सभा का आयोजन किया और इस किताब को मंडली के सदस्यों के साथ पढ़ा। हम स्पष्ट रूप से परमेश्वर के आशीर्वाद और उसकी अगुवाई का अनुभव किया और इतना ही नहीं इस 40 दिन के अन्दर में अनेक आश्चर्य कर्मो का भी अनुभव प्राप्त किया। एक मंडली के रूप में परमेश्वर ने हमें आनन्दित और जागृत किया : ऐसे मंडली के सदस्यगण थे, जो किसी अपरिचित आदमी से बात करने का साहस नहीं करते थे, अचानक वे अपरिचितों से अपने आप बात करने लगे। परमेश्वर हमें एक मंडली के तौर से नजदीक ले आता है और प्रार्थना के द्वारा हम एक साथ होते हैं। हमारे पास विशेष अनुभव प्रापत करने का शुभ अवसर प्राप्त थे, मध्यस्थता में अनुभव और 5 लोगों की सहायता जिनके लिए हमने प्रार्थना किया था 40 दिन प्रार्थना में विशेष रूप से काम किया था। बार बार लोग गलियों से होते हुए अचानक सब्बत के दिन आराधनालय में चले आते थे। इनमें से एक परिवार को हम बाइबल अध्ययन करा रहे हैं। इंटरनेट के विडियों और पुस्तक ''द ग्रेट कन्ट्रोवर्सी'' के द्वारा इन्हें सब्बत के बारे जानकारी प्राप्त हुई थी और ये कुछ दिनों से सब्बत मानने वाले मंडली की खोज में थे।'' उन्हें लुडविगसवर्ग में काट्जा और ख्रीस्टियन स्किन्डलर सेवेथ डे एडवेंटिस्ट चर्च मिला।

40 दिन की अभिग्यता

सब कुछ एक सेमिनार (विचार गोष्ठी) ''स्टेप्स टू पर्सनल रीवाइवल'' (व्यक्तिगत जागृति की ओर कदम) के साथ आरम्भ हुआ। उस समय मेरे अन्दर एक इच्छा उठी अपने दैनिक जीवन में परमेश्वर का अनुभव प्राप्त करने की। तब मैंने सुना 40 दिन के प्रार्थना और उपासना के बारे में। यह मेरे लिए तुरंत साफ हो गया। मैं इस साहसिक काम का अनुभव करना चाहता था। वास्तव में मैं नहीं जानता था कि मैं अपने आप को किधर ले जा रहा हूं। एक योग्य प्रार्थना सहयोगी पाना कोई कठिन बात नहीं थी, जो इस कार्यक्रम का हिस्सा था। मेरे लिए जो ललकार था वह एक दूसरे के लिए प्रत्येक दिन 40 दिनों तक समय निकालना। एक नर्स होने के नाते मेरे लिए निर्धारित समय पर काम में जाना था। मैंने पहले इसके बारे में सोचा भी नहीं था। कुछ भी हो परमेश्वर ने मेरे निर्णय पर आशीष प्रदान किया, शुरू के दिन से ही। बड़ी लालसा के साथ मैं उन बहुमूल्य क्षणों का इंतजार करता था कि वह दिन और क्षण कब आयगा जिसमें हम एक दूसरे के सारी विषय पर विचार बांट सकेंगे, और पवित्र आत्मा के लिए निवेदन कर सकते हैं। हमने यह पाया कि प्रार्थनाएं हमारे जीवन में कुछ बदलाहट ले आयी है। और हम इन्हें अपने आप में रख नहीं सकते थे। जब भी अवसर आया हम प्रभावित हुए कि कुछ दुसरों को बतलाएं। यह मेरे लिए विशेष बात थी कि दूसरों को भी तैयार करें कि वे भी हमारे तरह अनुभव प्राप्त करे। इसका प्रभाव असफल नहीं हुआ। मंडली के कुछ सदस्य हमारे उत्साह से ग्रसित हुए। शीघ्र ही नए आराधना की जोड़िया एक साथ मिलने लगे। हम आशा देखते रहते थे कि कैसे हर सप्ताह लोगों के साथ अपने अनुभव को बांटेंगे। यह वाइरस (विषाणु) हमारे कुछ युवक को भी लग गया। हम इसे नहीं चाहते और न इसे रोक ही सकते। इस तरह हम अपने आराधना के समय को ''मरानाथा'' और 'द लॉर्ड इन कमिंग, एलेन ह्वाईट द्वारा लिखित पुस्तक के साथ कायम रखा। और परमेश्वर हमें अधिक दिनों तक इंतहार करने नहीं दिया। उसने 40 दिनों के समय के अन्तर्गत हमें प्रार्थनाओं का बहुत सारे उत्तर दिया। इस समय के दरमियान हम ने किसी के लिए प्रार्थना किया था, वह लम्बे अवधि की अनुपस्थिति के पश्चात् फिर से मंडली के सम्पर्क में आया। हम बहुत आनन्दित हुए। मेरे आस पास के लोग मेरे लिए अधिक महत्वपूर्ण हो गए थे। परमेश्वर के प्रेम को दूसरे लोगों को बांटने की मेरी इच्छा और मजबूत हो गई। मेरा जीवन बदल गया हम में से अनेक लोग एक दुसरे को जानने लगे और एक दूसरे को और अच्छी तरह समझने लगे। बहुत सारे लोग एक दूसरे के जीवन का हिस्सा बन गए और वे एक दूसरे के हो गए। अब सहभागिता का अर्थ बिल्कुल

नया हो गया था। 40 दिन का प्रार्थना और आराधना डेनिस स्मिथ द्वारा लिखित किताब मेरे लिए बहुत ही मददगार साबित हुए। एक प्रार्थना पार्टनर को ढूंढ़ने और परमेश्वर का अनुभव। जो लोग हमारे प्रिय हैं वे इसके लिए हमें धन्यवाद देंगे।''

यीशु ही हमारा नमूना

समस्त वस्तुओं में यीशु ही मारा सबसे बड़ा नमूना है। (लूका 3:21–22) में हम इस तरह पढ़ते हैं :'' जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और यीशु भी बपतिस्मा लेकर प्रार्थना कर रहा था, तो आकाश खुल गया और पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर के समान उस पर उतरा। ....''।

एलेन ह्वाईट इस घटना के बारे कहती हैं : ''अपने पिता के प्रार्थना के उत्तर में, आकाश खुल गया और आत्मा कबूतर के रूप में उस पर उतरा।'

उसकी सेवकाई के दरमियान जो हुआ था वह आश्चर्य जनक था :'' हर दिन हर सुब में वह अपने पिता जो स्वर्ग में रहता है उसके साथ प्रार्थना द्वारा बातचित करता था, और उस से प्रतिदिन पवित्र आत्मा का एक ताजा बपतिस्मा प्राप्त करता था।'' यदि यीशु के प्रतिदिन पवित्र आत्मा का ताजा बपतिस्मा लेने की आवश्यकता थी, तो हमें इसकी आवश्यकता कितनी अधिक हो सकती है।

अन्तिम विचार

पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे लिए जीवन की हर एक परिस्थितियों में एक अद्‌भुत अगुवा और सामर्थ हैं अपनी महिमा के धन के अनुसार।

इस तरह से हमारा चरित्र में परिवर्तन हो सकता है और हम परमेश्वर के काम के लिए मुल्यवान औजार हो सकते हैं। हमारा दैनिक आत्म समर्पण और पवित्रात्मा का बपतिस्मा हमें हमारे जीवन में एक वास्तविक मार्ग खोल सकती है।

प्रभु हमें जगत के इतिहास में सबसे महान समय के लिए तैयार करना चाहता है। वह चाहता है कि हम व्यक्ति गत तौर से उसके आगमन के लिए अपने को तैयार करें और पवित्र आत्मा की शक्ति में हम एक साथ मिल कर सुसमाचार प्रचार को पूरा करने के लिए काम

करते हैं। वह हमें कठिन परिस्थितियों में एक विजेता के रूप में अगुवाई करना चाहता है।

परमेश्वर आपको व्यक्तिगत जागृति और सुधार दैनिक समर्पण और पवित्र आत्मा के साथ दैनिक बपतिस्मा के द्वारा प्रदान कर सकता है।

मैं एक बाइबल के पदस्थल और जागृति के लिए प्रार्थना के साथ अन्त करना चाहता हूँ : ''यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन हो कर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी हो कर अपनी बुरी चाल से फिरे, तो मैं स्वर्ग सुनकर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा।'' (2 इतिहास 7:14)

प्रार्थना :

हे स्वर्गवासी पिता, कृपया हमें नम्र बना (मीका 6:8) हमारे हृदय में प्रार्थना करने की और तेरे मुंह देखने की एक बड़ी इच्छा उत्पन्न करा। हमें इच्छुक बना और हमें सहायता कर कि हम अपने बुरे मार्गों से फिर जाएं। कृपया हमारे लिए आवश्यक बातों की आपूर्ति कर और तेरे प्रतिज्ञाओं के अनुसार हमें तेरा उत्तर सुनने दे। हमारे पापों को क्षमा कर और हमारे गुनगुनेपन और धर्म त्याग से हमें चंगा कर। कृप्या हमें यीशु के लिए समर्पण करने में और पवित्र आत्मा प्राप्त करने में हमारी सहायता कर। आमीन।

''एक जागृति की आवश्यकता का उत्तर सिर्फ प्रार्थना में आशा की जा सकती है।'' (एलेन ह्वाईट स्लेकटेड मेसेजस पृ 121:1)

पवित्र आत्मा की बपतिस्मा जैसे पेन्तेकुस्त के दिन हुआ था वैसे ही यह जागृति के लिए सच्चे धर्म में और अनेक आश्चयकर्मों को करने के लिए अगुवाई करेगा।'' (एलेन ह्वाईट स्लेटेड मेसेज्स, बूक 2 पृष्ट 57:1)

777 भूमंडलीय प्रार्थना की जंजीर (कड़ी)

777 क्या है? यह प्रार्थना के समय एक विश्वव्यापी कड़ी है। परमेश्वर के लोग सप्ताह में सात दिन प्रार्थना कर रहे हैं, 7 बजे सुबह और 7 बजे शाम पवित्र आत्मा की उपस्थिति परिवारों, अगुवों, मंडलियों, और समुदायों में होने के लिए। प्रार्थना किसी भी समय हो सकता है,

इसमें एक व्यक्ति हजारों अन्य लोगों के साथ एक ही समय में मिल कर प्रार्थना करते हैं सारे विश्व में यह एकता लाती है। सच्चे प्रार्थना करने वो विश्वासियों की कड़ी सम्पूर्ण जगत को अपने घेरे में ले लेंगी। पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करने में।'' (रेव्यु एण्ड हेराल्ड, जनवरी 3, 1907)

परिशिष्ट

अतिरिक्त अध्ययन के लिए सिफरिश

एक विशेष सुझाव : यदि संभव हो तो इस पुस्तिका को छः दिन तक रोज पढ़ें। शैक्षिक अनुसंधान से पता चलता है कि हमारे जीवन में किसी विशेष विषय पर हमें पढ़ना या सुनना कम से कम 6–10 बार होना आवश्यक हैं तब ही इसे अच्छी तरह समझा जा सकता है। इसे एक बार प्रयास करके देखें। इसका परिणाम आप को प्रभावित करेगा।

एक शिक्षक ने प्रयास कर के देखाः ''इन उत्साह जनक बातों ने मुझे मोंह लिया। कम से कम एक बार इसे प्रयास करके देखें। इसका परिणाम आप को विश्वास दिलायेगा। मैं इसका अनुभव करना चाहता था, और तीसरी बार पढ़ने के समय यह मुझे अपने वश में कर लिया और मैंने अपने उद्धारकर्त्ता के लिए एक प्रेम का अनुभव किया, जिसे पाने के लिए मैं अपने सारे जीवन लालायित था। दो महीने के अन्दर मैंने इस पुस्तिका को छः बार पढ़ा और इसका परिणाम बहुत अच्छा रहा। यह ऐसा था जिसे मैं समझ सकता कि जब वह हमारे निकट आयगा और हम उसके पवित्र, दया से पूर्ण और प्रेम से भरी आँखों से देख सकेंगे। उस समय से मैं कभी नहीं चाहता था कि उस आनन्द को छोड़ कर मैं उद्धारकर्त्ता से दूर चला जाऊँ।''

मैं अनेक धन्यवाद और उत्साह से पूर्ण गवाहियाँ उनके नए जीवन जो पवित्र आत्मा से भरा था उसे से प्राप्त किया। प्रायः सभी के सभी पाठकों की ओर से था, जिन्होंने ने गहराई से अनेक बार पढ़ते रहे थे।

इस विषय पर अन्य किताबें

40 Days (Book Prayers and Devotions to Prepare for the Second Coming, Denis Smith, Review and Herals, 2009)

40 Days (Book 2) Prayers and Devotions to Revive your experience with God, Dennis Smith, Review and Herals 2011.

40 Days (Book 3) God's Health Principles for His Last Day People, Dennis Smith, Review and Herals, 2011)

40 Days (Book 4) Prayers and Devotions on Earth's Final Events, Denish Smith, Review and Herals 2013

It my people pray – An Eleventh Hour Call to Prayer and Revival, Randy Maxwell, Pacific Press 1495

Review us again, Mark A. Finney, Pacific Press 2010

How to be filled with the Holy Spirit and Know it, Garrie F. Williams, Review and Herals 1991.

The Radical Prayer, Derek J. Morris, Review and Herals 2008

कवर पेज

व्यक्तिगत जागृति की ओर कदम

हेलमुट हॉवबेइल एक व्यवसायिक व्यक्ति और पास्टर हैं। एक शीपिंग (आयात–निर्यात) कम्पनी के लिए प्रतिनिधि के रूप में सफलतापूर्वक कार्य करने के बाद उसने 37 वर्ष की आयु में परमेश्वर की बुलाहट का उत्तर दिया और कलीसिया की सेवकाई में पास्टर के रूप में 16 वर्ष तक काम किया। इसके बाद वह जर्मनी के बैड अइबलिंग एडवेंटिस्ट नर्सिंग होम में डायरेक्टर के रूप में नियुक्त थे। वह जर्मन भाषा में मिशन न्युजलेटर पत्रिका के संस्थापक भी थे, और रिटायर होने के बाद इन्होंने मिशन के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य मध्य एशिया और भारत के लिए किया है।

'' हम आत्मा के दान के लिए भूखे और प्यासे क्यों नहीं होते जब कि यही वह साधन है जिसके द्वारा हम सामर्थ प्राप्त करतें हैं? हम इसके संबंध में क्यों बात नहीं करते, इसके लिए प्रार्थना नहीं करते, इसके संबंध में क्यों प्रचार नहीं करते?''

(एलेन जी हवाईट टेस्टीमोनिज फॉर द चर्च वोल 8, पृष्ट 22